इकाई-1 कला और कला शिक्षा की समझ (सिद्धान्त)

टिप्पणी

संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 कला शिक्षा का अर्थ और संकल्पना

(i) दृश्य कलाओं (ii) निष्पादन कलाओं और विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर इनकी सार्थकता

1.2.1 कला शिक्षा क्या है?

1.2.2 दृश्य कला क्या है?

1.2.3 निष्पादन कला क्या है?

1.2.4 कला शिक्षा की प्रकृति और क्षेत्र

1.3 प्रारंभिक स्तर पर कला शिक्षा का महत्व

1.3.1 दृश्य कलाओं की आवश्यकता और महत्व

1.3.2 निष्पादन कलाओं की आवश्यकता और महत्व

13.2.1 नृत्य की दुनिया

132.2 ड्रामा (नाटक) की दुनिया

13.2.3 संगीत की दुनिया

1.3.3 बाल कला की समझ

1.4 क्षेत्रीय कलाओं और शिल्पों का ज्ञान (स्थानीय वैशिष्ट्य) और शिक्षा में इसकी सार्थकता

1.4.1 क्षेत्रीय कला और शिल्प क्या है?

1.4.2 कला और शिल्प का प्रारंभिक शिक्षा के साथ संबंध

1.4.3 लोक पदार्थों और परंपरागत कलाओं के बारे में विद्यार्थियों को शिक्षित करना

1.5 समकालीन कलाओं और कलाकारों तथा दृश्य और निष्पादन कला के क्षेत्र के कलाकारों का ज्ञान।

1.6 सारांश

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

1.0 प्रस्तावना

बच्चा सीखने की स्वाभाविक क्षमता के साथ संसार में आता है। आप बच्चे को जो भाषा बोलते हैं वह अधिगम की प्रथम भाषा नहीं है। अधिगम अक्षरों और अंको, तथ्यों या पुस्तकों तथा विद्यालयों या कक्षाओं से प्रारंभ नहीं होता है। वास्तविक अधिगम तात्कालिक वातावरण, परिदृश्यों, आवाजों तथा बच्चे के आसपास होने वाली नियमित घटनाओं से प्रारंभ होता है। बच्चा बड़ों द्वारा उत्पन्न आवाज को दुहराता है, हीं-हीं और तालियों का आनन्द लेता है तथा नकल और निष्पादन करता है। एक सुन्दर तस्वीर पर एक नजर, एक सुरीली लोरी, एक प्यारी मुस्कान, एक स्नेहमयी स्पर्श के अहसास के प्रति बच्चा एक स्वत: प्रतिक्रिया प्रकट करता है। दूसरी तरफ गड़गडाहट की आवाज, बिजली की चमक और एक खुरदुरा स्पर्श के प्रति बच्चा खेद प्रकट करता है और रोने-चिल्लाने लगता है। अन्वेषण की यात्रा इन नियमित घटनाओं के माध्यम से प्रारंभ होती है और यही दृश्य एवं निष्पादन कलाओं में अधिगम की शुरूआत है।

''कला क्या हैं? कला मनुष्य की सृजनात्मक आत्मा की वास्तविकता की पुकार के लिए एक प्रतिक्रिया है।''- रबीन्द्रनाथ टैगोर

1.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के पूर्ण होने के पश्चात् आप सक्षम होंगे-

- दृश्य एवं निष्पादन के संदर्भ को व्याख्यायित करने में
- अपने क्षेत्रीय कला रूपों-संगीत, नृत्य, नाट्यशाला, कठपुतली को जानने तथा हमारे स्थानीय विशिष्ट कलाओं और क्षेत्रीय कला रूपों के प्रति प्रेम जागरूकता मन में बैठाने में।
- संकल्पनाओं को संप्रेषित करने के विविध तरीकों को विश्लेषित करने में।
- दैनिक शिक्षण में नियमित पाठ्यचर्या प्रदान करने के लिए कला गतिविधियों को सम्बद्ध करने में।
- समझने में कि कला कैसे स्व निर्देशित अधिगम को प्रोत्साहित करता है और बच्चे की सृजनात्मक कौशलों को तीव्र करता है। यह दर्शन को बढ़ाता और परिवर्तित करता है।
- व्यक्तित्व में स्व समान, स्व अनुशासन, अच्छी एकाग्रता आदि जैसी विशेषताओं को समृद्ध करने में कला के महत्व को विश्लेषित करने में।

जिन विद्यालयों में कलाओं को सम्मिलित किया गया है वहाँ के बच्चे अच्छा क्यों करते हैं? कला शिक्षा बहुत से बिखरे उद्देश्यों को प्राप्त करने में हमारी सहायता करता है।

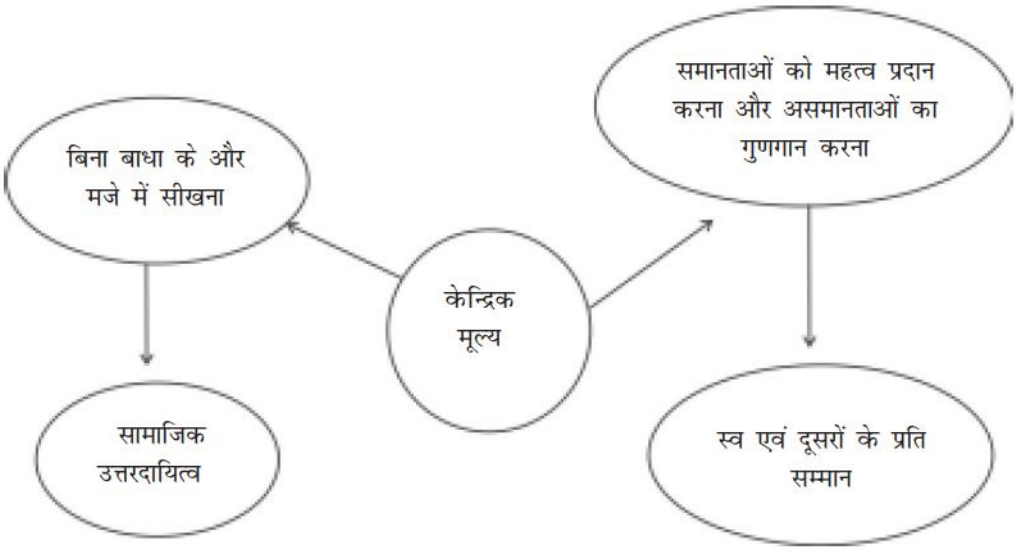

1.2 कला शिक्षा का अर्थ और संकल्पना

1.2.1 कला शिक्षा क्या है?

कला शिक्षा अधिगम का एक प्राथमिक रास्ता है, सौन्दर्य परक अनुभव के लिए शिक्षण के अर्थ के खोज की एक यात्रा है। कला मानवीय कल्पना, कौशल और आविष्कार द्वारा सृजित विचारों की एक अभिव्यक्ति है। एक कहावत है ''संगीत क्या है पसंदीदा आवाजों की अनुभूति।'' उसी प्रकार यह अन्य कला रूपों पर लागू होता है। गति मनोभाव व्यक्त करता है, आवाज अनुकूलन स्वयं को रास्ता दिखाता है, मस्तिष्क की आन्तरिक सतहों को प्रकट करता है। मूर्तिकला स्वयं को प्रतिबिम्बित करता है– यही कला शिक्षा है। हमारे लिए कला–शिक्षा की जरूरत क्यों है? कला शिक्षा अधिगम का एक क्षेत्र है जो इन पर आधारित है–

- दृश्य, स्पर्शनीय कला
- निष्पादन कला

1.2.2 दृश्य कला क्या है?

एक कलाकार कागज, कैनवास, मिट्टी, धातु, पेन्ट आदि उपयोग करता है जिन्हें साँचे में ढाला या कुछ भौतिक या कला वस्तुओं को सृजित करने में रूपान्तरित किया जा सकता है।

(a) चित्रकला

(b) पेन्टिंग

(c) मूर्तिकला

(d) रूपरेखा (गहने, मृदभाण्ड, बुनाई, वस्त्र आदि में और कुछ व्यावहारिक क्षेत्रों के लिए रूपरेखा बनाना जैसे, व्यावसायिक लेखाचित्रों और गृह सज्जा)

(e) समकालीन विषय समाहित करता है फोटोग्राफी, विडियो, फिल्म, रूपरेखा, कम्प्यूटर कला आदि।

हमारे चारो ओर कला है- पेटिंग्स, वास्तुकला, मृदभाण्ड, मूर्तिकला आदि में। हमारे घर में हमारा वास्तुकला हमारे पहनावे का तरीका, भोजन प्रदर्शित करने का तरीका, हमारे खड़े होने का तरीका, बैठने या बात करने का तरीका-एक वैयक्तिक तरीका है। हमारे जीवन में प्रत्येक अवसर, उत्सवों में सौन्दर्यपरक अनुभूति सम्मिलित रहती है। दिवाली पर हमारे दरवाजे पर रंगोली, दशहरा पर रावण की विशाल प्रतिमा, अस्थायी सुन्दर मंदिरों और देवी दुर्गा का अविस्मरणीय प्रतिमा जो कि प्रत्येक वर्ष एक नवीन मानवीकरण है, प्रत्येक दिन नये प्रकार, रूप के दिवस उत्पन्न होना, हम कैसे सोच सकते हैं कि जीवन कला से अनछुआ है? दृश्य कला के विचार और कौशल सांस्कृतिक ज्ञान, परंपरा और प्रथाओं के संचारण में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

एक शिक्षक के रूप में आपकी भूमिका कला के वृहत प्रकारों की खोज में अपने विद्यार्थियों को नेतृत्व प्रदान करने की होगी। फोटोग्राफी, मृतिका, धातुकार्य और कोलाज भी कला कार्य हैं। आप देख सकते हैं कि जब हमारी कक्षा के 35-40 बच्चे टोकरी सजाने या मृदभाण्ड बनाने का प्रयत्न करते हैं तो कितने रूप और तरीके उत्पन्न होते हैं। और जब उन्हें प्रदर्शित करते हैं तो एक दूसरी कला अभिव्यक्ति हो जाती है।

12.3 निष्पादन कला क्या है?

- कलाकार माध्यम के रूप में अपने शरीर, चेहरा और उपस्थिति को प्रयोग में लाता है।
- यह कुछ ऐसा है जिसे निष्पादित, देखा और सुना जाता है।

सामान्यत विभिन्न प्रकार की निष्पादन कलायें स्वीकृत और समझी जाती है:-

- रंगशाला
- संगीत
- नृत्य
- कठपुतली

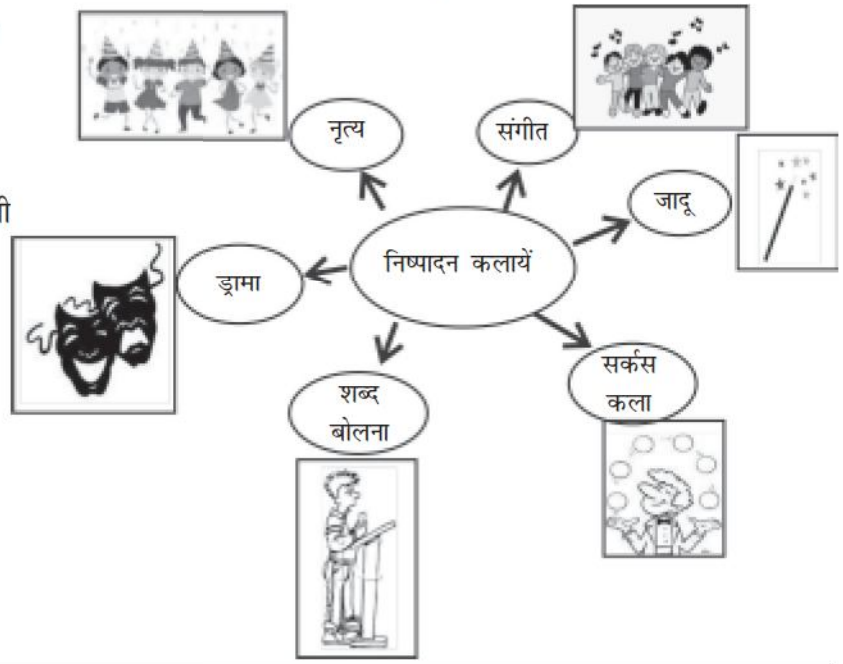

कलाकार जो दर्शकों के समक्ष निष्पादन कलाओं में भाग लेते हैं निष्पादन कर्ता कहलाते हैं। वे सम्मिलित करते हैं अभिनेताओं, हास्य कलाकारों, नर्तकों, जादूगरों, संगीतकारों, गायकों, कठपुतली कर्ताओं आदि को। महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि एक शिक्षक को समझना है कि निष्पादन के लिए हमेशा बहुत अधिक औपचारिक अधिगम की जरूरत नहीं होती। भारत बहुत अधिक विविध संस्कृतियों की भूमि है। धनी और सम्पूर्ण अंगीकृत भारत के पास इर्दगिर्द के जीवन के लिए हमेशा एक समग्र उपागम रहा और जिसने एक सुखद वातावरण सृजित किया जिसमें बच्चा दिन-प्रतिदिन के जीवन में बहुत सी कलात्मक गतिविधियों में भाग लेता है जोकि शिक्षा एवं स्व-विकास पर केन्द्रित हैं। बच्चे का जन्म, गुरूकुल जाना, विवाह, पवित्र उत्सवों का क्रम, त्योहारों, उत्सवों का वपन एवं समापन यहाँ तक कि मृत्यु के तत्व भी हमारी संस्कृति में बहुत से कला रूपों में मौजूद है। कला हमेशा चेतन एवं उपचेतन मस्तिष्क में उपस्थित रहती है। आओ हम समझें कि कैसे एक उत्सव का आयोजन हमारी संस्कृति के विविध तथ्यों को समझने में सहायक है।

उदाहरण

पंजाब राज्य में गेहूँ सर्दियों का एक मुख्य फसल है जो अक्टूबर में बोया एवं मार्च-अप्रैल मे काटा जाता है। जनवरी में खेत सुनहरे फसल से भर जाते हैं और किसान कटाई एवं संग्रहण के पहले के शेष समय के दौरान लोहड़ी मनाते हैं। पंजाबियों के लिए यह त्योहार से अधिक यह जीवन जीने के तरीके का एक उदाहरण है। इस दौरान सर्दियाँ समाप्त हो जाती हैं और पृथ्वी सूर्य के चक्कर काटती हुई उसकी ओर आती है और यह उत्तरायण का शुभ समय होता है। लोग अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद करते हैं और उनकी पूजा करके उन्हें मूँगफली, रेवड़ी, आटा, मक्खन और विविध खाद्य पदार्थ चढ़ाते हैं। प्रचुर फसल एवं समृद्धि के लिए अग्नि की प्रार्थना के लिए लकड़ियों के गठ्ठर को एक साथ बाँधकर प्रतीकात्मक होली जलाई जाती है। दोस्त एवं रिश्तेदार इसके चारो ओर इकट्ठा होते हैं। वे अग्नि के चारो ओर तीन बार घूमते हैं और मक्के, मूँगफली, रेवड़ी और मिठाईयाँ देते हैं। ततपश्चात् ढोल बजाते है। (परंपरागत भारतीय ड्रम) और अग्नि के चारो ओर लोग नृत्य करते हैं। तिल, मूँगफली, रेवड़ी पके चावल, पॉपकार्न, गजक और मिठाइयों का प्रसाद बाँटा जाता है। यदि इसको समुचित ढंग से व्याख्यायित किया जाये तो इस त्योहार से बच्चा क्या सीखता है?–ऋतु परिवर्तन, कृषि का महत्व, सूचना कि गेहूँ कब बोया और काटा जाता है, खाद्य पदार्थ जैसे तिल, मूँगफली रेवड़ी आदि सर्दियों में उपयोग के लिए अच्छी हैं, सामुदायिक आयोजनों का महत्व, सुख एवं दु:ख को साझा करना आदि। अत: त्योहारों के आयोजन से कक्षाकक्ष में ऐसी सूचनायें देना किसी किसी शिक्षक के लिए मुश्किल नहीं होगा। ये क्या है निष्पादन कला का साधन है। प्रत्येक त्योहार में गाये जाने वाले गीत विविध जलवायु, परंपरा, कपड़े, लोग इत्यादि के बारे में बहुत से संदेश देंगे। इसी प्रकार नृत्य और बलशाली गतियाँ शरीर को सक्रिय रखने में सहायक हैं। अत: हम देखते हैं कि किसी भी आयोजन में शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रेरणा मिलती है। मोहक फिल्में वास्तविक जीवन के मुद्दों से दूर ले जाती हैं- हमें इसे चरितार्थ नहीं करना है।

इसलिए शिक्षकों महान कवि ने अपने जीवन के बारे में क्या प्रेक्षण किया है उसका अनुकरण

करें-''हम लिखे, गायें, अभिनय करें और प्रत्येक ओर से अपने आप को निचोड़ दें।'' यह अद्‌भूत उत्तेजना और सांस्कृतिक समृद्धि थी।'' -रवीन्द्रनाथ टेंगोर

प्रगति जाँच-1

A. सत्य या असत्य

1. शिल्प जैसे- गहने बनाना, रजाई बनाना और लकड़ी का कार्य करना, रंगोली ये सब कला हैं। सत्य/असत्य
2. सभी कला अच्छी कला है। साधारण कला कुछ नहीं होती है। सत्य/असत्य
3. कला हमेशा बहुत सुन्दर होती है। सत्य/असत्य
4. मैंने एक बहुत रोचक अकार का पत्थर पाया। मैं इसे घर लाया और सतह में इसे जड़ दिया। यह कला का एक अच्छा नमूना है। सत्य/असत्य
5. कला हमेशा वास्तविक होता है। यह कला नहीं हो सकता है यदि हमारी आँखें इसे वास्तविक जीवन में नहीं देख पाती है। सत्य/असत्य

B. किसी एक त्योहार का वर्णन करें जो उस विशेष क्षेत्र के लोगों, भूगोल, परंपराओं और कृषि आदि के बारे में सूचना दे।

1.2.4 कला शिक्षा की प्रकृति एवं क्षेत्र

सृजनात्मक कला और पेशा का क्षेत्र नवीन संसार में बल पकड़ता जा रहा है। भूमण्डल कलाओं के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृति पक्षों के महत्व और संभावना के प्रति जाग्रत हो चुका है।

- **वैयक्तिक विकास**

  विद्यार्थी अपनी कला शिक्षा से महत्वपूर्ण जीवन कौशलों को चुनते हैं जैसे- अच्छी स्मृति, समझ बढ़ाना और प्रीकात्मक संचार की योग्यता।

यह विद्यार्थियों की सफलता की चाहत और नई चुनौतियों को ग्रहण करने की योग्यता को बढ़ा सकता है।

- **साकल्यवादी ज्ञान प्राप्त करना:**- इन विशिष्ट रूपों का अधिगम, उनका इतिहास, उनकी रचना, निष्पादन विश्लेषण, समीक्षा और मूल्यांकन अपने आप में अधिगम की प्रगति है।
- **जीवन को सौन्दर्यात्मक बनाना:**- हमारे प्रतिदिन के जीवन में इसका एक महत्व है जो अमापनीय है:- भोजन से लेकर पहनावे, घरो से लेकर उत्सवों तक सबका विविध सौन्दर्यात्मक अनुभूति और प्रभाव है।
- **संज्ञानात्मक प्रेरण:**-

  - कला शिक्षा बच्चों में उन्नत संज्ञानात्मक विकास से जुड़ चुका है।
  - **1998 की एक रिपोर्ट ''तरूण बच्चे और कला:** सृजनात्मक संयोजन बनाना'' - अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि कला शिक्षा बच्चा के संज्ञानात्मक, भाषा और गति कौशलों को सार्थक योगदान प्रदान कर सकता है।
  - **''अधिगम और कलायें:** सीमा पार-गमन'' कहता है कि मस्तिष्क की जाँच सिद्ध करता है कि जब संगीतकार संगीत बजाता है तब प्रमस्तिष्कीय वल्कल के सभी अंग सक्रिय हो जाते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि:

- कला कक्षाओं में लिप्त विद्यार्थी विद्यालय में बेहतर निष्पादन करते हैं।
- हावर्ड गार्डेन्स की बहु-बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार जो बच्चे कला कक्षाओं में भाग लेते हैं वे अधिगम की एक वृहद क्षमता विकसित कर लेते हैं क्योंकि वे अपनी परंपरागत कक्षाओं में भाषाई एवं गणितीय तर्क के अलावा अपनी अधिगम विधि का विस्तार कर लेते हैं।
- यह पाया गया है कि जो विद्यार्थी कला कक्षाओं में भाग लेते हैं वो शैक्षिक क्षेत्र में बेहतर निष्पादन करते हैं और उनके पास एक उच्च चिंतन सामर्थ्य होती है।

यह एक कलात्मक विज्ञान अनुभूति का उदाहरण है: एक पौधे में नई अंकुर और नई जड़ का विस्तार ऐसे है जैसे बढ़े बाल मि. स्मार्ट को और जड़ बी वृद्धि मि. भयानक की सदा बढ़ी हुई दाढ़ी को।

- **संप्रेषित संदेश:**- सृजनात्मक कलाओं में कलात्मक अनुभूतियों के अनेक रूप शामिल होते हैं जो कि हमें लक्षित दर्शकों को निश्चित संदेश संप्रेषित करने में सहायता देती हैं।

उदाहरणार्थ-नुक्कड़ नाटक, कला का अनुकरण करना, प्रदर्शन या पोस्टर प्रदर्शन ये सभी आश्चर्यजनक रूप से भारत की राजनीति या प्रदूषण या जनसंख्या विस्फोट और संबंधित समस्याओं को निबंध या लिखे जा सकने योग्य तथ्यात्मक विवरणों की अपेक्षा मनोरंजक और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

- **व्यक्तिगत प्रोफाइल और वृद्धिः-**

  ☞ **व्यवसाय के विविध विकल्प** - ये विद्यालयों में Kindergarten (बाल विहार) से शुरू कर प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाये जाते हैं और शिक्षा के उच्च स्तरों जैसे विश्वविद्यालयों में भी एक विकल्प के रूप में होते हैं। कला में अधिक अभिरूचि के साथ आप सफलतापूर्वक बहुत से व्यवसायों में आगे बढ़ सकते हैं जैसे महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक, व्यवसायिक कलाकार, रंगमंच या दूरदर्शन धारावाहिको में अभिनेता/अभिनेत्री, शिक्षक, पेशेवर गायक और नर्तक, वास्तुविद, कॉस्मेटिक शल्य चिकित्सक, designers (अभिकल्पक), आन्तरिक अभिकल्पना, फिल्म संसार आदि।

वास्तुकला, फिल्म, रंगमंच और संबंधित कॉस्मेटिक दन्तचिकित्सा, वेब डिजाइनिंग और एनीमेशन

टिप्पणी

प्रगति जाँच-2

1. विभिन्न कलाओं के अभ्यास के माध्यम से बच्चे के वैयक्तिक विकास क्रम की सूची बनायें।

   .....

   .....

   .....

2. कला शिक्षा से जुड़े सभी व्यवसायों पर चिन्तन करें। उदाहरण दें।

   .....

   .....

   .....

3. भाषाई और गणितीय तर्कों के अतिरिक्त अपने अधिगम विस्तार से आप क्या समझते हैं?

   .....

   .....

   .....

1.3 प्रारंभिक स्तर पर कला-शिक्षा का महत्व

1. एक शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है और बच्चों से कागज का एक पेज लाने को कहता है। उनसे कहा जाता है कि वे अपने आप को किसी निर्जीव वस्तु से संबद्ध करें। उसकी तस्वीर बनायें और उसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें। उनमें से एक इस तरह थी–

मैं विराज हूँ, एक जेट विमान।
मैं कक्षा के चारो तरफ उड़ता हूँ और मैं हमेशा अपने गंतव्य पर पहले पहुँचता हूँ।
मुझे अवकाश में अधिक भोजन की जरूरत है, अधिक उर्जा प्राप्त करने के लिए मुझे अपने आप को पुन: इंधन देने की आवश्यकता है।

2. यह बच्चों को संरचित पाठों की अपेक्षा अधिक सृजनात्मक तरीके से सीखने की अनुमति देता है।
3. गलती होने का भय नहीं है। यहाँ उन्हें बिना भयभीत हुए इधर-उधर के काम करने की स्वीकृति है।

4. यह स्व विश्लेषण, स्वसम्मान और स्व अनुशासन के स्तर को भी बढ़ाता है। कुछ बच्चे दूसरों की अपेक्षा अधिक प्रेरित होते हैं और स्वेच्छा से अधिक सहयोग देते हैं।
5. यह व्यवहारिक अभिरूचि को विकसित करता है और चिन्तन को सुसाध्य बनाता है।
6. सभी योग्यताओं रंग और लिंग के लोग कला कार्य से जुड़े हैं। कला जाति, मत, धर्म और राज्य, राष्ट्र तथा भाषा की सीमाओं से मुक्त होता है।
7. यह न केवल अच्छी रूचि और सुंदरता की परख कराता है बल्कि यह आन्तरिक ऊर्जा को सृजनात्मक योग्यताओं में भी प्रवर्तित करता है।
8. एक कलाकार अपनी आवाज नहीं उठाता, संदेश प्रसारित करने के लिए उसकी कला की अभिव्यक्ति ही काफी है। ऊर्जा को सकरात्मक अभिव्यक्ति में निर्दिष्ट करने के लिए यह एक आश्चर्यजनक हथियार है।
9. अधिगम के लिए मनोभाव को नेतृत्व प्रदान करने में कल्पना और उज्ज्वल अभिव्यक्ति सकरात्मक शैक्षिक मिलन का अवसर सृजित करते हैं।
10. एक कवि, नर्तक, दृश्य कलाकार, एक जादूगर के परिप्रेक्ष्यों में सौन्दर्यात्मक अनुभूति चिन्तन प्रक्रिया में एक वास्तविक पुनर्जागरण लाने के लिए अधिगमकर्ता के ध्यान को शामिल करती है।
11. भिन्न से लेकर भूगोल, भौतिकी की संकल्पना से लेकर जीवन विज्ञान के मुश्किल तथ्यों की खोज यात्रा प्रारंभ करने के लिए कला एक उपयुक्त तरीका है जो बच्चे के इर्द-गिर्द के संसार का एक व्यावहारिक मूर्त अनुभव देता है और इस प्रकार अधिगम को बढ़ाता है।

'घर प्यारा घर' आज के दिन का संकल्पना था। बच्चों से एक घर बनाने को कहा गया था। अधिकांश बच्चों ने एक घर बनाने के लिए स्वयं अपने सामग्री लाये। बैरक से बंगला बनाने के बहुत से विचार आये-लकड़ी से बाँस के घर, कपास से इग्लू आदि। दो बच्चे कमरे के एक कोने में व्यस्त थे। झारखण्ड की एक लड़की बीरामनी बहुत सी सूखी घास इकट्ठा कर रखी था और उससे बुनाई कर एक घोसलें को आकार देने में व्यस्त थी। दूसरी लड़की अफ्रीका की जुल्का कागज को मोड़कर एक छोटा घर बना रही थी और उस घर के पास एक छोटा ओरीगामी कुत्ता लकड़ी के सहारे अटका था।

मेरी पुत्री ने कहा ''मैं इतिहास से घृणा करती हूँ'' लेकिन वह इन्द्रजाल कॉमिक्स को प्यार करती है। वह स्वतंत्रता के बाद के समय की घटनाओं पर आधारित ऐतिहासिक नाटक को प्यार करती है।

टिप्पणी

1.3.1 दृश्य कलाओं की आवश्यकता और महत्व

देखना और प्रेक्षण करना सीखना और पुन: प्रस्तुत करना

- दृश्य कला पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग है दृष्टि। इस प्रकार का एक संवेदी अनुभव अधिक समय तक चलता है क्योंकि ऐसे अधिगम में एक से अधिक संवेदी अंग सम्मिलित होते हैं। विद्यार्थियों को अपने पड़ोस के ब्योरों को प्रेक्षण और वस्तुओं तथा उनके पर्यावरण के बीच के संबंधों का अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है। जब बच्चा एक वास्तविक पदार्थ का प्रेक्षण कर या कुछ कल्पना के बाद एक तस्वीर खींचता है तो उसकी संकल्पना अधिक सार्थक होती है जैसा कि दृश्य तस्वीरों में अर्थ के लिए एक गंभीर विश्लेषण में सर्जना विकसित होती है।

  ''कला का उद्देश्य वस्तुओं की बाह्य उपस्थिति का नहीं बल्कि उनके आन्तरिक अभिप्राय का पुन: प्रस्तुतीकरण है।'' -अरस्तु

  हम विद्यार्थियों की समझने की योग्यताओं और पर्यावरण की अच्छी समझ को विकसित करने पर लक्षित करें।

उदाहरण :- 1. मुख्य कौशल- प्रेक्षण

विषय-''दुर्ग'' प्रस्तावित संसाधन : दुर्गो के प्रारूप

- दुर्गों के फोटोग्राफ
- दुर्गों पर सन्दर्भ पुस्तकें
- विभिन्न प्रकार के दुर्गों की यात्रा के विडियो
- दुर्गों के नक्शे

1. प्रारंभिक गतिविधियाँ : प्रलेखन कार्ड बनाना

आप बच्चों को उनके पड़ोस में स्थित भवनों और संरचनाओं को पहचानने और निम्न बिन्दुओं को निर्देशित करते हुए उनका प्रलेखन कार्ड बनाने को कहे:-

- ऐतिहासिक भवनों का नाम
- स्थिति/पता, भवन का प्रकार
- भवन विशेष क्यों है? कारण
- भवन के अद्वितीय वास्तुकला विशेषताओं को रेखांकित करें:- खम्भे/बन्धनी/मेहराब/गुम्बद/प्रवेशद्वार/ऐतिहासिक भवनों पर अंकित प्रारूप

2. मुख्य गतिविधियाँ : दुर्गों का एक चक्कर

जलाशयों, बुर्ज, प्रवेश एवं विकास द्वारो, विविध प्रकार के छोटे महलों, एक विशेष बन्दूक के समान महत्वपूर्ण विशेषताओं की स्थिति को चिह्नित करते हुए ऐतिहासिक दुर्ग का नक्शा तैयार करना।

टिप्पणी

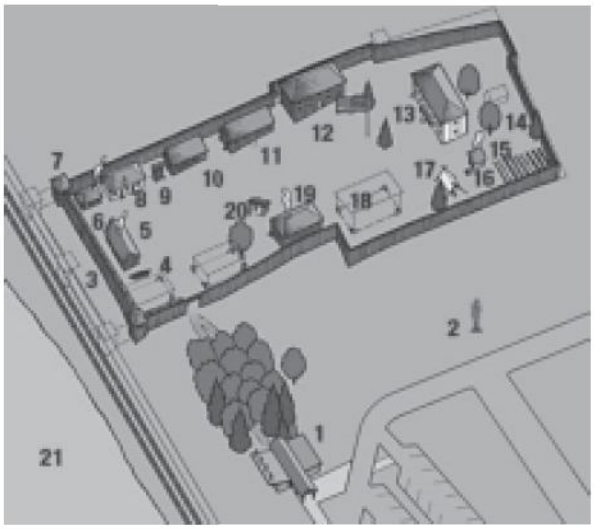

3. गतिविधियों का निष्कर्ष: एक ऐतिहासिक भवन को अंगीकृत करना

- पता लगाता कि दुर्ग कितना प्राचीन है?
- क्या प्राकृतिक पर्यावरण दुर्ग को किसी प्रकार से प्रभावित कर रहा है?
- दुर्ग के सौन्दर्य को संरक्षित रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए?
- इसको बनाने में प्रयुक्त सामग्री के बारे में जानें।
- वास्तुगत विशेषताओं/साज सज्जा/प्रयुक्त पत्थरों/नक्काशी/शिल्पकला/शस्त्रागार आदि के बारे में पता लगायें।
- क्या समय के साथ स्मारक के उपयोग में बदलाव आया? स्मारक कैसे अद्वितीय है?
- उस समय के कला का मूल्यांकन करें और आज की कला से इसकी तुलना करें।

उदाहरण 2:- वस्तुओं की समझ बनाना

सभी कला कार्यों के पास हालत और संयोजन की अपनी समझ है। कलाकार निश्चय करते हैं कि कैसे अपने विचारों को संयोजित करें। यह इकाई विद्यार्थियों को पर्यावरण में इसके कई रूपों की हालत को देखने और विचार से कला की अभिव्यक्ति के परिवर्तन की बहुत सी संभावनाओं के अन्वेषण के लिए प्रोत्साहित करता है। यहाँ हम विचारों से अभिव्यक्ति की ओर जा रहे हैं।

विषय:- ''पुल/फ्लाई ओवर''

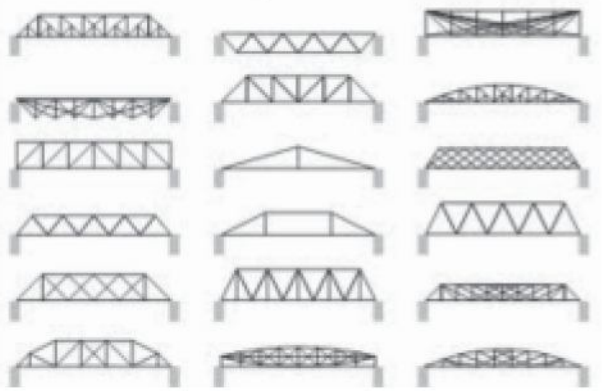

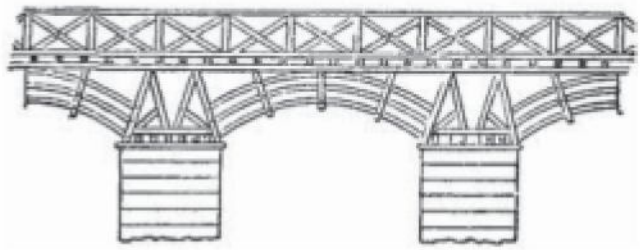

1. **प्रारंभिक गतिविधियोंः-**

- पुल/फ्लाईओवर बनायें या पुलों की तस्वीरों का प्रेक्षण करें।
- क्या उनमें कोई कला का तत्व है?
- क्या आपने पुल की बनावट में किसी नमूना का प्रेक्षण किया?
- आओ हम हमारे पुलों और फ्लाईओवरों की आकृति, नमूना, प्रयुक्त सामग्री और उनके आकार के अभिलाक्षणिक वैशिष्ट्य को ढूढ़ने का प्रयास करें।
- अपने दोस्तों द्वारा लाये या बनाये गये पुलों और फ्लाईओवरों से तुलना करें। क्या आप सब ने समान सामग्री आकृति और नमूना प्रयुक्त किया है?

⇨ पुल सममित अभिमुख हों। क्या विद्यार्थियों ने सममित और असममित के अर्थ का अन्वेषण किया?

2. **मुख्य गतिविधियाँः-** गतिविधियों की योजना बनायें जिनमें विद्यार्थियों ने आकृति एवं संरचनात्मक शक्ति के बीच संबंध का अन्वेषण किया। विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों जैसे- मिट्टी, कागज, कार्डबोर्ड, थर्मोकोल, लकड़ी, पत्थर, घास आदि को प्रयुक्त कर उनके अपने पुल बनाने की कोशिश करने को कहें। फिर उन्हें बुलायें विचार विमर्श करें और उनकी योजना को कागज के टुकड़े पर पुनः प्रस्तुत करें।

⇨ आकृति की समझ के सहारे उन्हें संरचनात्मक शक्ति को समझायें।

1. एक सादा कार्ड पेपर लें और उन्हें दो खण्डों पर रख दें तथा इस पुल पर कुछ सिक्के रखने का प्रयास करें। कागज इसे कुछ क्षण भी नहीं सह सकता और गिर जाता है।
2. अब दोनों किनारों को मोड़कर किनारों पर दो दीवाल जैसे बनायें। अब इन पर सिक्कों को रखने की कोशिश करें। बिना ध्वस्त हुए अधिक सिक्के रखे जा सकते हैं।
3. अब कागज के आन्तरिक मोड़ को जिगजैग की तरह मोड़े (एक मुड़े पंखे के समान) यह विस्मयकारी दिखता है कि अब पुल पर बहुत अधिक सिक्के रखे जा सकते है।

उन्हें पुल की बनावट के साथ ही साथ उसके कार्य पर विचार करने को कहें।

एक प्रदर्शनी की योजना बनायें जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी उनके द्वारा बनाये पुलों के बारे में बात करें।

उदाहरण-3 उनके आस-पास कला के संसार की खोज

यह इकाई विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए प्रारूपित किया गया है कि दृश्य कला अपने बहुत से रूपों में जीवन का एक अंग है। कला का अस्तित्व उनके निकटस्थ परिवेश में है।

लोग जो दृश्य चित्रों के साथ काम करते हैं उनमें रंगसाज, रजाईसाज, दर्जी, सिरेमिक कलाकार कपड़ों के नमूने विकसित करने वाले, अभिकल्पक, शिल्पकार, वास्तुविद, शहरों की योजना बनाने वाले, सड़क किनारे के होर्डिग बनाने वाले कलाकार और अन्य दूसरे

टिप्पणी

शामिल हैं। ये दृश्य प्रभाव उस समुदाय को संस्कृति और युगों से कला के विकास को प्रदर्शित करते हैं।

मान लो हम मृदभाण्ड की एक गतिविधि चुनते हैं जो कि शहर या गाँव के अन्दर एक शिल्पी के द्वारा किया जाना है। शिल्प के बारे में अधिक जानकारी में पुस्तकालय की पुस्तकें उनकी सहायता करती है।। उन्हें स्वयं के छोटे बर्तन बनाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए ताकि अपेक्षित कौशलों का बेहतर अनुभव पा सकें। उन्हें स्वयं की दीर्घा सृजित करने के लिए कैमरे से विडियो बनाना या तस्वीर खींचनी चाहिए। यह उन्हें समस्त प्रक्रिया की जानकारी भी देता है कि कैसे स्वयं के बर्तन बनायें। यह उनके आसपास के सौन्दर्य की समझ और उनके सांस्कृतिक मूल्यों के सशक्तिकरण में सहायता करता है।

मृदभाण्ड पर कार्यशाला आयोजित करने के लिए आप एक स्थानीय कुम्भकार को भी निमंत्रित कर सकते हैं। अपने स्वयं के प्रारूप और नक्काशी बनाने या पेन्ट करने की कोशिश करें।

''एक परंपरा के रूप में आज हम जिसका सम्मान कर रहे है। वह एक सतत क्रांति का उत्पाद है। परंपरा एक आन्दोलन हो सकती है जो सृजनात्मक रूप में जीवित हो सकती है।''

– जवाहर लाल नेहरू

1.3.2 निष्पादन कलाओं की आवश्यकता एवं महत्व

1.3.2.1 नृत्य का संसार

a गति और अभिव्यक्ति

आओ हम विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने पर केन्द्रित करें

- गति संचालन संभावनाओं के एक प्रसार का अन्वेषण करना।

- उनकी तकनीकों को बढ़ाना और
- विशिष्ट गति संचालनों को दुहराने की योग्यता

विषय : **सूर्य नृत्य : सूर्य नमस्कार**

प्रस्तावित संसाधन :

- पुस्तकें और विडियो

आप जैसा अनुभव करते हैं वैसे घूमें और जैसे आप घूमते हैं वैसा अनुभव करें– घूमना और निष्पादन करना सीखें।

नृत्य की अभिव्यक्ति के विकास के रूप में छोटे कदमों को विद्यार्थियों से विकसित कराया जा सकता है। यहाँ केन्द्रबिन्दु शरीर का गति संचालन है जो कि सूर्य की हल्की गर्मी/सूर्य के प्रकोप को प्रतिबिम्बित करता है और विद्यार्थी ललित गति संचालनों से सूर्य के अराधना की धार्मिक विधि का निष्पादन करते हैं। विद्यार्थी सौम्य तीक्ष्ण/ललित या योगिक गति संचालनों के किसी समुच्चय का प्रयोग करके सूर्य नृत्य का सृजन करते हैं। अधिक गति लाने और प्रत्येक बच्चे को सामने आने तथा उनकी योग्यता को प्रदर्शित करने के लिए संरचनाओं को जोड़ें। पृथ्वी और इसके निवासियों पर सूर्य के प्रभाव के लिए सूर्य की मनोदाशाओं और संवेगों से एक नृत्य यात्रा का सृजन करें और इसके अतिरिक्त सूर्य नमस्कार की योगिक अभ्यासों के माध्यम से सूर्य की अराधना और फिर शक्ति के लिए सूर्य देवता से निवेदन करें।

b. विचार और अन्तः प्रेरणा

अभिव्यक्तियों के लिए विचार नृत्य के माध्यम से पर्यावरण से आते हैं जो कि विभिन्न रूपों और वैयक्तिक अनुभवों का उद्घाटन करते हैं। जब हम विविध प्रकार के शास्त्रीय नृत्यों जैसे कथक, कथकली, कुचीपुड़ी या लोकनृत्यों जैसे-बिहु, चेराव, नागा नृत्य, भांगड़ा इत्यादि देखते हैं तब हम विभिन्न गति संचालनों, अभिव्यक्ति, संगीत, सृजनात्मकता आदि का अवलोकन करते हैं।

- क्रोध, करूणा, साहस, घृणा, भय, खुशी, शान्ति, दु:ख और आश्चर्य पर ध्यान दें।

- विभिन्न आकारों की बनावट में शरीर का प्रयोग और संचालन के द्वारा गति तथा क्रियाओं का अवलोकन करें।

- विचार/क्रिया व्यक्त करने या व्यक्त करने में सहायता के लिए बनाये भंगिमाओं पर बात करें।
- नृत्यों की तुलना और वैषम्य पर विचार करने के लिए इस सूचना का उपयोग करें।

c. वस्तुओं की समझ बनाना

नृत्यसर्जक अपने गति संचालन के विचारों को एक रूप में संगठित करते है। बेतरतीब गति संचालन निरर्थक है यदि दिये गये रूप में नहीं है। वे नृत्यों के सृजन में गति संचालन की क्रमबद्धता के महत्व को समझते हैं।

1.3.2.2 नाटक (Drama) का संसार

विविध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कालों के दैनिक जीवन को समझने में नाटक की भूमिका के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करने में सहायता करने के लिए इस इकाई को प्रारूपित किया गया है। यह इकाई नाटक को दैनिक जीवन के अंग तथा संस्कृति और समुदाय की अभिव्यक्ति के रूप में देखने में विद्यार्थियों की योग्यता पर केन्द्रित है।

a. विचार और अन्तः प्रेरणा

नाटकों के लिए विचार कई साधनों से आ सकते हैं।

- कल्पना
- पर्यावरण
- वैयक्तिक अनुभव
- इतिहास/साहित्य
- तस्वीरें, चलचित्र
- मीडिया

नाटक का अभ्सास अभिव्यक्तिपूर्ण अभिनय, मुखौटों के माध्यम से अभिव्यक्ति, वृतान्त, विविध गति संचालनों आदि विभिन्न तरीकों से किया जाता है।

b. ''मुखौटा जादू'' (मुखौटा से आँखें, मुँह या समस्त चेहरा ढका हो सकता है।)

मुखौटा एक मजाकिया गतिविधि है और फिर भी बहुत से पहलुओं को सम्प्रेषित करता है। यह प्रतीकात्मक चरित्र सृजित करता है। उदाहरणार्थ-नीलाभ शरीर और मोर पंख के साथ भगवान कृष्ण, दस सिरों के साथ रावण या कोई जनजातीय अभिव्यक्ति। जिस क्षण बच्चा मुखौटा पहनता हैं वो रूपान्तरित हो जाते हैं, अभिनय करना शुरू कर देते हैं, कल्पना, संवाद सृजन, संचालन और क्रमशः चरित्र की वास्तविकता का अनुभव करने लगते हैं। एक छोटा सा समर्थन और सूचना बच्चों को वस्तुओं को समझने में प्रमाणिक सहायता करता है।

टिप्पणी

c. साहित्य को जवाब:-

ऐतिहासिक तथ्यों, महत्वपूर्ण लोक कहानियाँ, समकालीन सामाजिक घटनायें आदि अभिनीत की जा सकती हैं।

d. वस्तुओं की समझ बनाना

यह इकाई इस पर केन्द्रित है कि विद्यार्थियों के अपने नाटकके विचार कहाँ से आते हैं और कैसे वे अपने कार्य को विकसित और प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थी जब एक नाटक का सृजन करते हैं'' तो बनाये हुए महत्वपूर्ण विकल्पों को देखना शुरू कर देते हैं।

1.3.2.3 संगीत का संसार

यह कला रूप विविध संस्कृतियों समय, कालों और विद्यार्थियों की उनके अपने घरों और समुदायों के संगीत की समझ पर केन्द्रित है।

a. श्रवण अधिगम

अब यह समय आवाजों को सुनने, उनके सूक्ष्म लक्षणों का पता लगाने और आवाजों के प्रभावों को समझने की योग्यता पर काम करने का है।

यह उनको आवाजों के अन्वेषण में मदद करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को विविध प्रकार के संगीतमय वाद्य यंत्रों जैसे ड्रम, सितार, घाटम आदि के आवाजों को सुनने और पहचानने के लिए प्रेरित करें। उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दं और उनको आवाजों की समुचित समझ बनाने को कहें।

रूचिकर गतिविधियाँ

- पानी से भरें सिरेमिक के सात कटोरों का प्रयोग करके 'जल तरंग' जैसे अपने वाद्य यंत्र बनाने की कोशिश करें।
- विविध मोटाई के रबर बैंडों तथा सात कोक के बोतलों का प्रयोग कर गिटार बनायें।

आओ विद्यार्थियों स्वयं द्वारा सृजित आवाज या किसी संयोजन पर एक दूसरे के लिए या दूसरे वर्ग के लिए निष्पादन करें।

''नाटकों या कहानियों के साथ संगीत का संबंध''

1. प्रारंभिक गतिविधियाँ:-

- विचार विमर्श करें कि कैसे विभिन्न प्रकार के कलाकार सदियों तक हरेक को उत्प्रेरित करते आये हैं।
- कहानियों की प्रतिक्रिया में एनीमेटेड चलचित्रों को सृजित किया जा चुका है।

  (एनीमेटेड फिल्में हनुमान या मोगली या वॉल्ट डिजनी के कार्यक्रम अपने लाक्षणिक संगीत के साथ अधिगम के लिए अच्छे हैं।)

2. मुख्य गतिविधियाँ :-

छ: विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर एक सामान्य कहानी चुनें जिसे वे सोचते हैं कि कठपुतली संगीत के लिए एक अच्छा आधार होगा।

कहानी की घटनाओं, चरित्रों और प्रसंग को निर्धारित करने के लिए उनकी कहानी का विश्लेषण करें। विद्यार्थी छोटे समूहों में कार्य कर सकते हैं:-

- कुछ छोटे गीतों की रचना करना
- एक छोटी कहानी लिखना
- संगीत के लिए कठपुतली चरित्रों को बनाना
- एक कठपुतली मंच का खाका बनाना
- जरूरी उपकरण बनाना
- प्रोन्नत करने वाली सामग्रियों का सृजन करना

3. गतिविधियों का समापन

आओ विद्यार्थियों दूसरी कक्षाओं के लिए अपनी कठपुतली प्रदर्शन का निष्पादन करें। कुछ महत्वपूर्ण अधिगम सुझाव:

- विद्यार्थियों एक कलाकार का साक्षात्कार लें और स्वयं कलाकार से कला रूपों को समझे।
- प्रयुक्त विभिन्न संगीत रूपों को खोजने के लिए विविध अभिलिखित संगीत को सुनो।

पेशे की जानकारी:-

आजिविकाओं की सूची बनायें जिसमें संगीत एक मुख्य भूमिका निभाता है। उदाहरणार्थ-गायक, संगीतकार, डिस्क जॉकी, आवाज तकनीशियन, गायक वृन्द संचालक, संगीत शिक्षक और संगीत रचयिता आदि।

टिप्पणी

प्रगति जाँच-3

1. विभिन्न प्रकार की आवाजें क्या हैं जिसे आप चारो ओर सुनते हैं?

   .....

   .....

   .....

2. निष्पादन कलाओं के माध्यम से अनुभूति के विभिन्न तरीके क्या हैं?

   .....

   .....

   .....

3. भारत में संगीत हमारे जीवन का एक अंग है। इस कथन को व्याख्यायित करें।

   .....

   .....

   .....

1.3.3 बाल कला की समझ

सुन्दरता को प्यार करना स्वाद है। सुन्दरता का सृजन कला है।

दृश्य कला

बच्चा धीरे-धीरे सीखता है। चित्रांकनी और पेंसिल से की गयी प्रथम गतिविधि है 'घिसना'। यह उनके गति कौशल परिणामों का उत्कृष्ट प्रदर्शन है और यह उनकी प्रथम श्रेष्ठकृति है।

अमूर्त आकृति

तीन वर्ष की उम्र के आस-पास से बच्चा सामान्य चित्र बनाने के लिए वृतों एवं रेखाओं को जोड़ना शुरू कर देता है।

हम अवलोकन करते हैं कि बच्चे बिना शरीर के एक सिर बनाते हैं और भुजाओं को सीधे सिर से निकाल देते हैं। आँखे प्राय: अधिकांश चेहरे को ढँकते हुए बड़ी खींच जाती हैं तथा हाथ पैर भुला दिये जाते हैं।

प्रतीकवाद

अब पाँच वर्ष की उम्र के करीब वे चित्रों की एक शब्दावली सृजित कर लेते हैं। एक बच्चा एक घर, एक बिल्ली, एक कुत्ता या एक पक्षी का चित्र खींच सकता है। समान मूल चित्रों को खींचना जो कि रूपान्तरित की जा सकती हैं (इस बिल्ली के धारियाँ है, कुत्ते को धब्बे हैं या

हरे पंखों के साथ पक्षी) मूल आकार प्रतीक कहे जाते है। प्रत्येक बच्चा अपने स्वयं के अद्वितीय प्रतीकों का एक समुच्चय विकसित करता है जो कि अवलोकन के बजाय उसकी समझ के आधार पर खींचा गया होता है।

यथार्थवाद

बच्चे जैसे बढ़ते हैं वे अपने प्रतीकों की सीमायें ढूढ़ना शुरू कर देते हैं। बच्चा श्रेष्ठतर विस्तृत विवरण खोजता है।

निष्पादन कला

बच्चे अपनी माँ की लोरी पर प्रतिक्रिया करते हैं या जन्म से ही उन्हें पुकारते हैं। जैसे वे बड़े होते हैं वे आवाज को सुनते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। बच्चा मानव या प्रकृति की आवाज के प्रति नितान्त ग्रहणशील होता है। मैंने बच्चों को खुशी से खिड़की की ओर दौड़ते हुए अवलोकित किया है उस क्षण वे बाहर बारिश की टिप-टिप की आवाज को सुनते हैं। वे मिट्टी की गंध को प्यार करते हैं जब वर्षा की बूँदे मिट्टी पर पड़ती हैं तो अपना उल्लास दिखाते हैं। आकाश में बिजली की चमक अचानक उनका ध्यान आकर्षित करती है और वे आश्चर्य चकित होकर उसकी ओर देखते है। लेकिन गरजने की आवाज उन्हें डरा देती है। ये सभी संवेग क्रमशः विकसित होते हैं और बच्चा कला के मूलाधार से स्वाभाविक रूप से परिचित हो जाता है। त्योहारों के दौरान या पारिवारिक समारोहों में वे अपने हाथों से अनान्दपूर्वक ताली बजाते हैं, सुन्दर कपड़े पहनना पसंद करते हैं,

घर या बाहर की सज्जा की सराहना करते हैं, पारिवारिक सदस्यों और दोस्तों के साथ प्रार्थना करते, नृत्य करते और गाते हैं। ये सभी सीखने, सराहना करने और निष्पादन कला के विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने की ओर उसके पहले कदम हैं। विविध कलाओं में तकनीकी कौशल के उद्घाटन और परिचय से बच्चे, क्रमशः कलाओं के बहुत से पहलुओं को सीखते हैं। वे आनन्द लेते हैं, परंपराओं और ऐतिहासिक भविष्य का ज्ञान अर्जित करते हैं, कहानियाँ सुनते हैं और धीरे-धीरे विभिन्न कलारूपों का सार समझते हैं। जैसेजैसे वे विकास करते हैं अभिनय प्रदर्शन, नृत्य के लिए विभिन्न शारीरिक संचालनों और विभिन्न गीतों से अधिक अर्थ अर्जित करते है। अपने आप को विभिन्न गतिविधियों में शामिल कर वे रोमांचक खुशी प्राप्त करते हैं जो कि उन्हें अधिगम और तीव्र आत्मसात कराता है और इस प्रकार जीवन का अधिगम गहरा रहता है। तंत्रिका विज्ञान कहता है कि कला अनुभूतियाँ मस्तिष्क के मार्मिक अंगों को सक्रिय और विकसित करती हैं जो कि बच्चा में बहुआयामी समझ को बढ़ाता है। इस प्रकार छोटी उम्र में सामान्य गीत और लय बच्चे के अधिगम में अधिक सहायता करते है। खेल-खेल पद्धति में नाटक उन्हें अधिक शामिल करता है। सामान्य गति संचालन भी बच्चा के लिए लाभदायक है। कौशलों और विशिष्ट तकनीकों को समझने में बच्चे की सहायता करने में ये धीरे-धीरे व्यवस्थित हो सकती हैं।

चिकित्सीय

बच्चों को उनके संवेगों से जोड़ने और विकसित करने के लिए कला चिकित्सा एक प्रभावी तरीका हो सकता है।

- यह भी पाया गया है कि चित्रकला 'ऑटिज्म (Autism) से ग्रस्त बच्चों की अनुभूतियों को व्यक्त करने में सहायता कर सकता है जिसे वे अन्य तरीकों से व्यक्त करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।
- उसी प्रकार जिन बच्चों ने डर जैसे-युद्ध/वारदात का सामना किया है उन्हें अपने प्रत्यक्ष अनुभवों को व्यक्त करने में कठिनाई होती हैं किन्तु कला के माध्यम से वेदना को आसनी से व्यक्त किया जा सकता है।
- ऐसी परिस्थितियों में कला बच्चों को उनके संवेगों से समझोता करने में सहायता कर सकता है।
- आप एक क्रोधी कलाकार बिरले ही पायेंगे। एक कलाकार के पास उसके संवेगों को कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में बाहर निकालने का एक आसान द्वार होता है।

1.4 क्षेत्रीय कलाओं और शिल्पों का ज्ञान (स्थानीय वैशिष्ट्य)

1.4.1 क्षेत्रीय कला और शिल्प क्या है?

- कला क्षेत्र के लोगों के बीच उनकी पारंपरिक संस्कृति को प्रवर्तित करता है।
- यह विविध समुदाय जैसे गैर-इसाई, जनजातीय धार्मिक, व्यावसायिक और समभौगोलिक समूहों के पारंपरिक कला रूपों को परावर्तित करता है।
- यह अशिक्षित कलाकारों के एक समुदाय का कार्य है जिन्होंने विशिष्ट परंपराओं को इसके विशेष संस्कृति में जीवित रखा है।
- इनके पास इनका अपना सौन्दर्यबोध है किन्तु वे समानुपात एवं सामंजस्य के सिद्धान्तों से परिचालित नहीं होते हैं।
- दृश्य कला में यह मुख्यत: उपयोगितावादी और एक आलंकारिक मीडिया है जो कपड़ा, कागज मिट्टी, लकड़ी, फाइबर, धातु और अधिक वस्तुओं के प्रयोग को शामिल करता है।

1.4.2 प्रारंभिक शिक्षा के साथ क्षेत्रीय कला और शिल्प का संबंध

प्रारंभिक स्तर पर क्षेत्रीय कलाओं और शिल्पों की जानकारी मदद करती हैं:-

1. बच्चों को भारत की बहुलवादी सांस्कृतिक रिक्थ के बारे में संवेदनशील बनाने में (स्थानीय शिल्य की जानकारी)
2. पारंपरिक और समकालीन कला और कलाकृतियों को मान्यता प्रदान करने और प्रोन्नत करने में।
3. शिल्पकारों के कौशलों की कदर और समाज के प्रति उनके योगदान का सम्मान कर हस्तशिल्पों कुटीर उद्योगों और स्व रोजगार गतिविधियों को प्रोन्नत करने में। यह कला के

टिप्पणी

संरक्षण और हमारे सामान्य धरोहर के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व की एक समझ हृदयंगम करायेगा।

1.4.3 लोक पदार्थों और परंपरागत कलाओं के बारे में विद्यार्थियों को शिक्षित करना

भारत कला और शिल्प की परंपराओं से पूर्णतया सम्पन्न है जहाँ शिल्पकारी की तकनीकों को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में हस्तांतरति किया जाता रहा है। भारत के प्रत्येक कोने से अद्‌भूत हस्तशिल्प स्थानीय शिल्पकारों की विशेषज्ञता को प्रदर्शित करता है। यह लोक समूहों की रीतियों, अभिवृत्तियों, सौन्दर्यबोधों और निषिद्ध कार्यों को भी प्रदर्शित करता है।

गतिविधि :- विद्यार्थियों को घर से कुछ कला पदार्थों को लाने को कहें जो कि पारंपरिक कला पदार्थ हैं जैसे- एक माँ को कश्मीर से प्राप्त एक कांगड़ी, एक पंखा/रजाई/साड़ी जो कि दादी माँ द्वारा कशीदाकारी की गयी हो, या भोजन जैसे-ढोकला, हलवा या रसगुल्ला जिसे आपके परिवार में विशेष अवसरों पर बनाया गया हो। इससे एक कहानी का सृजन करें और संस्कृति तथा समाज के प्रसंग में प्रयुक्त करें।

नोट :- अद्वितीय वस्तुओं की हानि से बचने के लिए विद्यार्थियों को ऐसी वस्तुओं को लाने से हतोत्साहित करें जो कि नश्वर, कीमती या बहुत मूल्यावान है। आप अपनी कक्षाकक्षा को देखने के लिए अभिभावको, दादा-दादी या अपने समुदाय के परिचित पारंपरिक कलाकारों को आमंत्रित भी कर सकते हैं।

व्याख्या करें और विचार-विमर्श करें:-

- लोक पदार्थ हस्त निर्मित अमूर्त वस्तुए हैं जिसे लोग सृजित करते और लोक समूहों में साझा करते हैं।
- यद्यपि लोक वस्तुएँ प्राय: एक व्यक्ति द्वारा बनाई जाती हैं फिर भी वे समूह की शैली और मनोवृत्ति को प्रदर्शित करती हैं।
- एक लोक पदार्थ के सृजन में कौशल, विचार, सुंदरता, रंग और गठन बोध शामिल होता है।
- बहुत से लोक पदार्थ विशिष्ट या ऐसे ही पावन उत्सवों में प्रयुक्त किये जाते हैं।

यह बहुसंस्कृतिवाद का प्रवर्तन और पारंपरिक कला का सम्मान सकारात्मक तरीके से करेगा। हस्तनिर्मित वस्तुओं के सृजन के अध्ययन द्वारा हम एक समुदाय की क्षमता और समझ की एक अन्तर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए मधुबनी पेंटिग को देखते हैं आपके पास प्रारूप के सिद्धान्तों, प्रतिसाम्य, संरचना, छायांकन, जगह के उपयोग आदि पर विचार विमर्श करने का भी एक अवसर प्राप्त होगा।

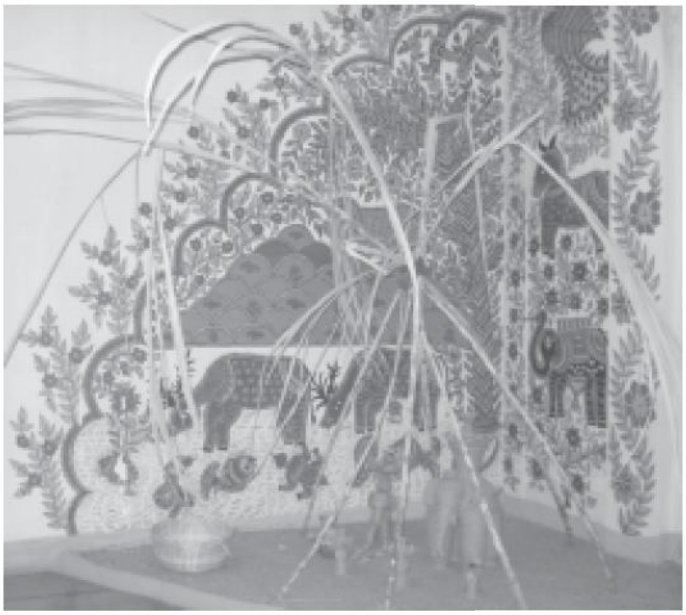

यह चित्र मधुबनी कला और एक बरतन जिसमें गन्ना रखा गया है को प्रदर्शित करता है। यह बिहार के लोगों का फसल की कटाई के दौरान पूजा का तरीका है।

प्रगति जाँच-4

1. निम्नलिखित राज्यों से संबंधित विशिष्ट पारंपरिक कलायें क्या है?

   (i) महाराष्ट्र :- .....

   (ii) गुजरात :- .....

   (iii) पंजाब :- .....

   (iv) राजस्थान :- .....

2. आप किस समुदाय से संबंध रखते है? अपने समुदाय के समस्त पारंपरिक कलाओं और शिल्पों को लिखें।

   .....

   .....

   .....

1.5 समाकालीन कलाओं और कलाकारों तथा दृश्य और निष्पादन कला के क्षेत्र के कलाकारों का ज्ञान

भारत अनिश्चित काल से कलाकारों की धरती है। कला के सभी क्षेत्रों के विशिष्ट कलाकार हैं जो विविध क्षेत्रों की संस्कृति का विशेष विवरण देते हैं। संगीत के क्षेत्र में हमारे पास जीवन

के मानवीय दर्शन पर गीत गाने वाले बीरभूम के बाउल (Bauls) या केरल के लोक थियेटर समूहों के यक्षगान के निष्पादन कर्ता जैसे कलाकार हैं। दृश्य कलाओं में हमारे पास पटचित्र (Patachitro) पिचुई (Pichuai), अल्पना (Alpna), कोलम (Kolam) आदि जैसी आनुष्ठानिक लोक कला हैं। अधिकांश ग्रामीण कलाकार अपने क्षेत्र में बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के हैं और कलारूप पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ रहा है। औपचारिक प्रशिक्षण शास्त्रीय कला रूपों के क्षेत्र में प्रदान की जाती है क्योंकि उनमें परिष्कृत समर्पण के साथ विशिष्ट सूक्ष्म भेद हैं।

कलाकारों की सूची लम्बी है जो नृत्य, कठपुतली, संगीत, वाद्ययंत्रों, चित्रकारी, शिल्प आदि विविध क्षेत्रों से हैं। शुद्ध परिचय के लिए कलाकारों, नृत्य समूहों, कारीगरों के कुछ नाम नीचे दिये गये हैं। यह सूची वैयक्तिक शिक्षकों द्वारा विकसित की जा सकती है जो भविष्य में प्रयोग के लिए लाभदायक डाटा संग्रह होगा।

समकालीन कलायें

हमारे देश में कुछ दृश्य कलाओं के रूप इस प्रकार हैं:-

कोलम या अल्पना - केरल और पश्चिम बंगाल की सतह चित्रकारी

फुलकारी - पंजाब की कसीदाकारी

हस्त खण्ड छपाई - सांगनेर

निष्पादन कलाओं में-

शास्त्रीय संगीत - हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शैली

शास्त्रीय नृत्य - कत्थक, भरत नाट्यम, कत्थकली आदि

क्षेत्रीय संगीत - सूफी, बाउल (Baul) गिद्दा आदि

क्षेत्रीय नृत्य - भांगड़ा, रास, बिहू आदि

कठपुतली - दस्ताना वाली पुतली जैसे पावा-कत्थकला, साखी कुन्डेई-नाचा आदि।

समकालीन कलाकार और कारीगर:-

हमारे देश में कुछ कारीगर इस प्रकार हैं:-

बनमाली महापात्र - गन्जीफा कार्ड (Ganjifa Card)

विजय जोशी - फाड चित्रकारी (Phad Painting)

गोकुल बिहारी पटनायक - पट्ट चित्र

अब्दुल जब्बार खत्री - बाँधनी (बाँधना और रंगना)

फिरदोस अहमद ज्ञान - पाश्मीना शाल बुनाई

कांकुबेन लालाभाई परमार - गोटा-पट्ठा

टिप्पणी

निष्पादन करने वाले कुछ कलाकार:-

लोक गायक-

- अल्लाह जिलाई बाई
- पम्मी बाई
- तीजन बाई
- रसमयी बालकृष्ण
- पबनदास बाउल
- भोपा

कुछ लोक नृत्य समूह

- गरबा
- नामजेन (Namgen)
- किन्नौरीनाती
- तेरतली
- चरकुला
- लावनी
- तमाशा
- थांग ता
- चांग लो

कुछ पारंपरिक भारतीय रंगमंच रूप हैं:-

- कुटीयट्टम प्राचीन संस्कृत थियेटर का एकमात्र अवशिष्ट नमूना है।
- गुजरात का भवाई रूप (चहलकदमी करने वाले)
- बंगाल में जाता
- हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के मालवा में लोकप्रिय स्वांग।
- कर्नाटक में यक्षगान
- कत्थकली नृत्य-नाटक का एक प्रकार है जो केरल का अभिलक्षण है।

टिप्पणी

कठपुतली कलाओ के प्रकार हैं:-

- केरल (पावा कत्थकली) उड़ीसा (साखी कुन्डेई-नाचा) और पश्चिम बंगाल (बेनेर पुतुलनाच) राज्यों में दास्तना कठपुतली के प्रचलित प्रदर्शन हैं।
- आंध्र प्रदेश (थोलु बोम्मालता), कर्नाटक (टोगालु गोम्बेयाता), केरल (टोलपावा कुथु) महाराष्ट्र (चमयाचे बहुल्या), उड़ीसा और तमिलनाडु (तोलपवाई कुथु) राज्यों में छाया कठपुतली का प्रदर्शन किया जाता है।

1.6 सारांश

कला जीवन से घनिष्ठता से सम्बद्ध है जो वास्तव में हमारे चारो और फैला है। हमलोग कला पदार्थों से घिरे हुए हैं। यह विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रत्येक विषय को अधिक रूचिकर और उत्तेजक बना सकता है। यह नियमित पाठ्य-पुस्तक अधिगम से बच्चे को दूर ले जाता है। और बच्चे में स्वनिर्देशित अधिगम के रूप में यह अधिगम को बढ़ाता भी है, स्व सम्मान को बढ़ाता है और एकाग्रता तथा स्व अनुशासन को सुधारता भी है। यह एक बच्चे को विद्यालय में सीखने और बेहतर निष्पादन करने में सहायता करता है। कला के दोनों रूप है-पारंपरिक/लोक या शास्त्रीय संगीत, नृत्य, रंगमंच, कठपुतली, प्रतिरूप बनाना, बरतन बनाना, चित्रकारी आदि। शिक्षण के एक साधन के रूप में कला का उपयोग बच्चे को लोक कला और समृद्ध भारतीय संस्कृति और परंपराओं को भी समझने में सहायता प्रदान करेगा तथा बच्चों को उनकी जड़ों के नजदीक लायेगा। यह बच्चे को हमारे देश के इतिहास को बेहतर रूप से समझने में मदद करेगा। कला के माध्यम से अधिगम बच्चे की सृजनात्मकता को विकसित करने और बाद के वर्षो में उसके अधिक व्यावसायिक रास्तों को खोलने में मदद करता है। कला विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है। अन्ततः यह शिक्षकों के हाथ में होता है। विषय को रूचिकर बनाने के प्रयास के विस्तार से विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति और उत्साह परावर्तित होगा। शिक्षक द्वारा किया गया अतिरिक्त प्रयास एक लम्बा रास्ता दिखायेगा और हमारे देश के नागरिकों में अधिक उत्तरदायी भविष्य विकसित करने में भी सहायक होगा।

गुरूदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है:-

''उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें शुद्ध सूचना नहीं देती बल्कि हमारे जीवन में सभी अस्तित्वों के साथ सामंजस्य बनाती है।''

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

en.wikipedia.org/wiki/theatre-of-india

en.wikipedia.org/wiki/list-of-Indian-folk-dances

www.indianfolkdances.com/folk-dances-india.html

en-wikipedia.org/wiki/Music-of-India

download.nos.org/Sec225new/Lesson-4.pdf

1.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

प्रगति जाँच-1

- आओ बच्चों राष्ट्रीय आन्दोलन के बारे में पढ़े और जानें कि कितने अधिक परित्यागों के बाद हमने आजादी पायी। जिन घटनाओं ने उन्हें अधिक प्रभावित किया आओ उनका पता लगायें। उनके संगीत और साधनों का संग्रह करो तथा अभिनय करो या समस्त संघर्ष और अंतिम उपलब्धि का नृत्यसर्जन करो।
- भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की विभिन्न झाँकियों को चित्रित करने के लिए कक्षा को विविध समूहों में बाँटो 1857 का विद्रोह, जालियावाला बाग सामूहिक हत्याकाण्ड, डांडी मार्च, असहयोग आन्दोलन, साइमन कमीशन, भगत सिंह का जीवन वर्णन, गाँधीजी का आविर्भाव, स्वतंत्रता दिवस पर नेहरूजी का भाषण

प्रगति जाँच-2

मिट्टी से सृजन : मृदभाण्ड कार्यशाला

आओ बच्चों मिट्टी के स्पर्श और अनुभूति का संवेदी अनुभव पायें। बच्चों को उनकी अपनी सर्जना को सृजित करने में सहायता के लिए आप एक स्थानीय कुम्हार को आमंत्रित कर सकते हैं। वास्तव में कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की जा सकती है। कुम्हार द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले दो मुख्य यंत्र है उसके हाथ और उसका पहिया।

- वे दीवार पर लटकाने के लिए समतल आधार के साथ विविध प्रकारों और चित्रों वाले मिट्टी के फलक बना सकते हैं।
- वे विविध आकारों एवं माप के बरतन बना और बाद में उन्हें पेन्ट कर सकते हैं।
- वे पौधों एवं जानवरों के आकार बना सकते हैं।
- यहाँ तक कि उपयोगी सामानों जैसे- बरतन, आधार, पेंटिग्स, विभिन्न प्रकार के मूलाभावों, टिकटों, देवी देवताओं के चित्र आदि तैयार कर सकते हैं।

कौशल :

1. उचित प्रकार के गाढ़पन के सृजन के लिए मिट्टी और पानी को मिलाना।
2. पहिया की गति को समझना और इसे अच्छी तरह घुमाने के लिए उचित बल लगाना।
3. मिट्टी को आकार देना सीखना।
4. बरतन को सुखाना और इसे अंतिम आकार देना।
5. आग से बरतन को मजबूत बनाना। बरतन को सौन्दर्यात्मक आकर्षण देने वु लिए इसे सजाना।

टिप्पणी

अभ्यास

1. किन कथनों से आप सहमत है? हाँ या ना

   - कला मजे के लिए बनाई जा सकती है।
   - बच्चों को कला की आवश्यकता उनकी अभिव्यक्ति के लिए है।
   - फोटोग्राफी एक रूचिपूर्ण कला है।
   - कला हमारे बच्चों के संवेगों को निकलने का मार्ग देती है।
   - विज्ञान को कला के किसी भी रूप से पढ़ाया नहीं जा सकता।
   - शिल्प, कला नहीं हैं।
   - जनजातीय कला बहुत असमानुपाती है, इसे कला नहीं कहा जा सकता।
   - कला मानवीय कल्पना, कौशल और आविष्कार द्वारा सृजित विचारों की एक अभिव्यक्ति है।
   - सूचना पट्ट, TV प्रचार, कम्प्यूटर खेलों में सजीव चित्रण, पैकेज प्रारूप और प्रतीक व्यावसामिक कला के सशक्त दृश्य संप्रेषण हैं।
   - हम सभी सृजनशील पैदा हुए हैं।

2. आओ एक को चिहिन्त करो जो कला के विविध रूपों में नहीं है।

   सिरेमिक्स

   छपाई

   फोटोग्राफी

   कोलाज

   लोकगीत

   लोककला

   थियेटर

3. जिन्हें हम दैनिक जीवन में प्रयुक्त करते हैं जैसे-कटोरा या रजाई, यदि ये सबकुछ सर्जना है तो क्या हम इसे कला कह सकते हैं?

4. **व्यक्त करने और समझने के लिए अधिगमः-**

   कुछ दिन पीछे मैंने एक ईमेल पाया जिसमें समुद्र के किनारे बालू से कलाकारों की सृजनशीलता दिखाई गई थी। एक उद्धरण में व्याख्यायित करो कि वह क्या अभिव्यक्त करने की कोशिश कर रहा है?

टिप्पणी

5. यह कागज के एक शीट से बनाया गया है। एक समान विचार को सचित्रित करने के लिए क्या आप एक अन्य उदाहरण दे सकते है?

6. एक बच्चे का जीवन कला के द्वारा अधिगम से शुरू होता है किन्तु जल्द ही कला नीरस हो जाता है, एक कार्य विद्यालय में निष्पादित होता है। व्याख्याचित करें क्यों? अपने दृष्टिकोण को चित्रित करने के लिए उदाहरण उद्घृत करें या केस अध्ययन करें।

7. गहने बनाना और लकड़ी का कार्य शिल्प के रूप में उद्घृत होता है। क्या शिल्प भी कला है?

8. सही विकल्प चुनें:-

   - कत्थकली, भरतनाट्यम, मनीपुरी, कत्थक, ओडिसी और कुचिपुड़ी सभी हैं लोक नृत्य/शास्त्रीय नृत्य।
   - एक नर्तक द्वारा प्रयुक्त विभिन्न हस्त संकेतों को जाना जाता है के रूप में मुद्राओ/नवरस।

टिप्पणी

- एक मंच कलाकार एक निष्पादक होता है जो अपने संदेश को सम्प्रेषित करता है अपने शारीरिक भाषा/पुस्तिका के रूप में।
- एक विचार अभिव्यक्त किया जा सकता है केवल एक तरीके से/एक से अधिक तरीके से।
- एक कला यदि समानुपात या लय के नियमों का अनुपालन करता है तो एक कला है/कला नहीं है।

इकाई-2 दृश्य कला तथा शिल्प (प्रायोगिक)

संरचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 अधिगम उद्देश्य

2.2 दृश्यकलाओं और शिल्पों के विभिन्न सामग्रियों के साथ प्रायोगीकरण

- 2.2.1 पेन्सिल
- 2.2.2 पोस्टल रंग
- 2.2.3 पोस्टर रंग
- 2.2.4 कलम और स्याही
- 2.2.5 रंगोली सामग्री
- 2.2.6 मिट्टी
- 2.2.7 मिश्र सामग्री
- 2.2.8 शिल्प सामग्री

2.3 दृश्य कलाओं और शिल्पों की विभिन्न विधियों के साथ अन्वेषण और प्रायोगीकरण

- 2.3.1 चित्रकला और पेन्टिंग
- 2.3.2 खण्ड पेन्टिंग
- 2.3.3 कोलाज निर्माण
- 2.3.4 मुखौटा और कठपुतली निर्माण
- 2.3.5 मिट्टी से प्रारूपण
- 2.3.6 कागज काटना और मोड़ना

2.4 किये गये प्रायोगिक कार्य के लिए फोल्डर बनाना

- 2.4.1 फोल्डर का अर्थ और अभिप्राय
- 2.4.2 एक फोल्डर कैसे बनाये?
- 2.4.3 फोल्डर का उपयोग

2.5 सारांश

2.6 प्रगति जाँच के उत्तर

2.7 संदर्भ ग्रन्थ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

2.0 प्रस्तावना

प्रारंभिक स्तर पर कला शिक्षा, इसके अभिप्राय, जरूरत और महत्व के बारे में आपने पूर्व के अध्यायों में पहले ही सीख लिया है। आपने अनुभव कर लिया है कि कला शिक्षा अधिगम के लिए प्राथमिक रास्ता है, आनन्दपूर्ण और सौन्दर्यात्मक शिक्षा शास्त्र की खोज के लिएएक यात्रा है। कला मानवीय कल्पना, कौशल और आविष्कार के द्वारा सृजित विचारों की एक अभिव्यक्ति है। कला शिक्षा अधिगम का क्षेत्र भी है जो कि इन पर आधारित है-

- दृश्य, मूर्त कला
- निष्पादन कलाओं

वर्तमान अध्याय में हम लोग दृश्य और मूर्त्तकला के सूक्ष्म भेदों के बारे में विचार-विमर्श करेंगे। प्रारंभिक कालों के दौरान मानवीय स्वभाव चेष्टाओं के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त कर लेती थी जबकि बोली जाने वाली विशिष्ट भाषा का ज्ञान नहीं था। मानव मनोविज्ञान हमेशा किसी अभिनव के सुधार की ओर झुका होता है और इसलिए यह माना जा सकता है जो कोई भी गतिविधियाँ वे करते या प्रतिदिन के जीवन में अन्वेषित करते थे अत: वे अभिव्यक्ति का बेहतर और परिष्कृत रूप चाहते थे।

यह वो समय है कि जब वे अपने आप को दृश्यों की सहायता से अभिव्यक्त करने के लिए गुफाओं की दीवारों पर आश्रित थे। गुफा कला जिसे आज हम देखते हैं उस परिष्कृत अभिव्यक्ति का एक उदाहरण हैं यह आने वाली पीढ़ियों के लिए वरदान है ये दृश्य इतिहास को प्रकट करने के एक अभिलेख हैं। ये शुद्ध शब्दों की अपेक्षा लोगों के मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ जाते है।

इस अध्याय में आप विभिन्न विधियों, सामग्रियों और निश्चित तकनीकों के अनुप्रयोग से दृश्य कलाओं के अन्वेषण और प्रायोगिकरण के बारे में सीख सकेंगे। जैसा कि हम जानते हैं दृश्य कला एक विचार, संकल्पना, अनुभूति या संवेग को सम्प्रेषित करता हैं किसी भी मीडिया पर अभिव्यक्ति पर्यावरण के अवलोकन और सामग्री के अन्वेषण को बढ़ाती हैं, मुक्त अभिव्यक्ति, व्यक्ति की समझ, सृजनशीलता, संवेदनशीलता और बच्चों में सौन्दर्यबोध को समझने का अवसर प्रदान करती है। यह कलाकार की अनुभूतियों, अभिव्यक्ति, भ्रम, कल्पना आदि को सम्प्रेषित करता है। यह विविध तकनीकों द्वारा संरक्षित बीती घटनाओ का एक अभिलेख है और यह पूर्व की पीढ़ियों को समझने में सहायता करता है। चूँकि एक बच्चे के सार्वत्रिक विकास के लिए एक शिक्षक को दृश्य कलाओं के कुछ मौलिक तत्वों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। विभिन्न मीडिया सामग्री और तकनीकों के उपयोग से दृश्य कला को प्रस्तुत एवं कार्यान्वित किया जा सकता है। उनमें से कुछ हैं- पेन्टिंग, चित्रकला, शिल्पकला, छाप बनाना, कोलाज,

कठपुतली निर्माण और फोटोग्राफी विचारों के कार्यान्वयन और सम्प्रेषण के लिए विविध सामग्रियों और माध्यमों के साथ प्रयोग एवं अन्वेषण के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2.1 अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप शिल्प क्रियाओं तथा चित्रकला और पेन्टिंग की विधियों का आसानी से अपनी कक्षा में अन्वेषण एवं कार्यान्वयन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप किये गये कार्य को रखने एवं संरक्षित करने के योग्य हो सकेंगे तथा एक फोल्डर बनाकर बच्चे के क्रमिक विकास का विश्लेषण कर सकेंगे।

इस इकाई के पूर्ण होने के पश्चात् आप योग्य हो सकेंगे:-

1. दृश्य कला के मूल सिद्धान्तों को जानने एवं समझने मे।
2. विभिन्न तकनीकों एवं माध्यमों तथा उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग को समझने में।
3. अवलोकन एवं अन्वेषण के माध्यम से बच्चों की मुक्त अभिव्यक्ति एवं सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने में।
4. भारत में प्रचलित विभिन्न पारंपरिक क्षेत्रीय कला रूपों की पहचान के द्वारा बच्चों की सांस्कृतिक विविधता को समझने में।
5. छोटे एवं बड़े प्रोजेक्टों पर साथ कार्य करने और साझेदारी के मूल्यों को मन में बैठाने में।

कला के आधारभूत सिद्धान्त

निकटस्थ पर्यावरण से समझ बनाने और अन्वेषण के माध्यम से कला को समझने के लिए कुछ आधारभूत सिद्धान्त हैं:-

1. **रेखा** - विभिन्न प्रकार की रेखायें हैं- मोटी, पतली, टूटी और सीधी। प्रत्येक रेखा विभिन्न लक्षणों को चित्रित करती हैं।
   (a) क्षैतिज रेखा विस्तार को दिखाती है। उदाहरणार्थ-सड़क, रेल लाईन।
   (b) खड़ी रेखायें सामर्थ्य या महानता दर्शाती है। उदाहरणार्थ- लम्बे भवनों को।
   (c) तिरछी रेखा गति को दिखाती है। उदाहरणार्थ-पहाड़ो, नृत्य चेष्टाओं।
   (d) मुड़ी रेखायें सौन्दर्यात्मक आकर्षण देती हैं। उदाहरणार्थ-फूल, बादल।
   (e) धाराओं को सूचित करती रेखायें जीवन के चिह्न को दिखाती हैं। उदाहरणार्थ-जल की धारा।
   (f) टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें हमें सूचना देती हैं। उदाहरणार्थ-उपग्रह की धाराओं या तेज आवाजों।

2. **आकार** – यह क्षेत्र, लक्षण और विविध रूपरेखा को पारिभाषित करता है। यह ज्यामितीय या आंगिक हो सकती है।

   (a) ज्यामितीय – वर्ग, वृत, त्रिभुज आदि।

   (b) आंगिक – प्रकृति से व्युत्पन्न आकार जैसे फूल आदि।

   जैसे कि प्राकृतिक वस्तुएँ विविध आकार की होती हैं। यह संकल्पना बच्चों को सहसंबंध स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है।

3. **आकृति** – यह एक आकृति है जिसमें त्री-आयामी गहराई या मोटाई है। इसका सृजन दो या तीन आकारों को जोड़कर किया जा सकता है। इसे टोन, बनावट या रंग के द्वारा बढ़ाया जाता है। उदाहरणार्थ-पेड़, भवन, कार आदि की आकृति।

4. **रंग**- इसे सतह से प्रकाश के परावर्तन द्वारा देखा जाता है। हमारे आस-पास बहुत प्रकार के रंग हैं। उदाहरणार्थ-

   (1) प्राथमिक रंग-लाल, पीला, नीला

   (2) द्वितीयक रंग – जब प्राथमिक को मिला दिया जाता है जैसे लाल+पीला : नारंगी

   (3) चटकीला रंग – लाल, पीला और नारंगी

   (4) उदासीन रंग – बैंगनी, हरा और नीला

5. **स्थान** – क्षेत्र जहाँ कला रूप सृजित किया जाता है, स्थान कहलाता है।

6. **बनावट** – पदार्थ की अनुभूति बनावट कहलाता है। ये दो प्रकार के हैं-वास्तविक और अन्तर्निहित बनावट।

   (a) वास्तविक बनावट वह है जिसे यहाँ तक कि कोई भी आँखें बन्द कर अनुभूत कर सकता है।

   (b) अन्तर्निहित बनावट वह है जो उपस्थित तो होता है लेकिन बन्द आँखों से जिसका अनुभव नहीं किया जा सकता।

   उदाहरणार्थ :- कागज पर मुद्रित पेड़ की बनावट तो है लेकिन जब इसे स्पर्श किया जाता है तो इसकी कोई संरचना नहीं होती, यह चिकना होता है। लेकिन एक प्राकृतिक पेड़ को कोई भी स्पर्श कर उसका अनुभव कर सकता है।

7. **मूल्य :-** एक रंग का हल्कापन और गाढ़ापन ही उसका मूल्य है।

   जैसा कि हम जानते हैं, दृश्य कला एक विचार, एक संकल्पना, एक अनुभूति, एक संवेग आदि का संप्रेषण है। प्रभावी संप्रेषण के लिए एक शिक्षक को दृश्य कला के मौलिक सिद्धान्तों की जानकारी होनी चाहिए। एक शिक्षक के लिए यह आवश्यक नहीं हैं कि वह

टिप्पणी

बच्चों को मूल सिद्धान्तों की शिक्षा दें लेकिन एक शिक्षक को एक मददगार या एक परामर्शदाता के रूप में इन मूल सिद्धान्तों को जानना चाहिए।

दृश्य कला के मौलिक सिद्धान्त निम्न हैं-

1. **परिदृश्य** - एक तकनीक जो एक त्रि-विमीय संसार को एक द्वि-विमीय सतह पर प्रस्तुत करता है। एक समतल सतह पर यह स्थान और गहराई का भ्रम सृजित करता है। इसमें नजदीक की चमकीली और बड़ी वस्तुओं को दूर करके छोटे एवं हल्के रंग में दिखाया जाता है। प्राय: इस संकल्पना को उच्च प्राथमिक स्तर के छोटे बच्चों को व्याख्यायित किया जाता है।

2. **संतुलन** - बायें एवं दायें की भुजाओं के संयोजन की तुलना करने का तरीका है संतुलन। यह दो प्रकार का है-

   (a) संतुलित - जब दोनों भुजायें समान प्रतिबिम्बित हो तो यह संतुलित संतुलन कहलाता है।

   (b) असंतुलित - जब दोनों भुजायें समान प्रतिबिम्बित न हो तो यह असंतुलित संतुलन कहलाता है।

3. **सामंजस्य** - प्रभावों को जोड़कर एक आकर्षक तस्वीर प्रस्तुत करने का तरीका है सामंजस्य।

4. **लय** - जब प्रस्तुत कला कार्य कुछ ऐसा हो कि रेखा बिना टूटे हुए घूमती है तो उसे लय कहते हैं। इस प्रकार निस्संदेह कहा जा सकता है कि कला के तत्वों और मौलिक सिद्धान्तों की जानकारी दृश्य संयोजन के सफल सृजन का पहला कदम होता है।

   कला के इन तत्वों की जानकारी बच्चों के कार्यों को विश्लेषित एवं मूल्यांकित करने में शिक्षकों की सहायता करता है और बच्चों को उनके आसपास और पर्यावरण को एक नये आयाम में अन्वेषित करने में सहायता कर सकता है जैसे कि एक दृश्य के बारे में हजारों तरीकों से बात किया जा सकता है।

प्रगति जाँच-1

1. क्य आप प्राचीन काल में दृश्य कला पाते हैं? सत्य/असत्य
2. दृश्य कला सम्मिलित करता है पेंटिग्स को .....
3. दृश्य कला संवेदनशीलता, मुक्त अभिव्यक्ति, सृजनात्मकता को विकसित करने में सहायता करता है और .....मूल्यांकन करता है।
4. रेखा दृश्य कला का एक ..... है।
5. .....प्राथमिक रंग है।
6. क्या आप एक मुद्रण में पेड़ की बनावट का अनुभव कर सकते हैं? हाँ/नहीं

2.2 दृश्य कलाओं और शिल्पों की विभिन्न सामग्रियों के साथ प्रायोगीकरण

सामग्रियाँ घटक या उपकरण हैं जो कि एक सृजनकर्ता द्वारा कला कार्य सृजित करने के लिए अपेक्षित है। विभिन्न कला सामग्रियों जैसे पेन्सिल, रंग, ब्रश, गोंद को अभिव्यक्ति के एक साधन के रूप में प्रयोग से समानुपात, गहराई, प्रकाश, छाया और स्पर्श अनुभव की संवेदना विकसित करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वे विभिन्न आकारों के कागज को अच्छी तरह से प्रयुक्त कर सकते हैं। प्रत्येक सामग्री का एक अद्वितीय लक्षण और गुण होता है। सामग्रियाँ हमारे चारों ओर उपलब्ध है। जैसे- पत्तियाँ, टहनियाँ, सूखे फूल, कपड़ों के टुकड़े, कागज के टुकड़े आदि। कला कार्य के उत्पादन के लिए पसंदीदा सामग्रियों को खोजने और उठाने के लिए हमें आवश्यकता है अपने चारों ओर देखने की।

प्राचीन कालीन मनुष्य ने अपने अनुभवों एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रकृति से प्राकृतिक सामग्रियोंका अन्वेषण किया। उदाहरणार्थ-पत्थर का एक टुकड़ा या पत्तियों का रस, फल, फूल, पत्थर आदि का प्रयोग जानवरों की तस्वीर और गुफाओं की दीवारों पर उत्कीर्ण मानव जो वर्षों पहले जीवित थे। प्राचीन कालीन मनुष्य पत्थर का प्रयोग करते थे जैसे कि अब तुम पेन्सिल का प्रयोग करते हो।

2.2.1 पेन्सिल

बच्चे बचपन से लिखने लगते हैं जैसे ही उन्हें एक पेन्सिल दी जाती है। कागज पर उनकी लिखने की आन्तरिक इच्छा को व्यक्त करने के लिए पेन्सिल सबसे आसानी से उपलब्ध माध्यम और एक उपकरण है।

पेन्सिल के प्रकार:-

- **ग्रेफाइट पेन्सिल** :- ये पेन्सिल के सबसे प्रचलित प्रकार हैं, लकड़ी के आवरण में आवेष्टित। ये मिट्टी और ग्रेफाइट के मिश्रण से बने होते हैं। इनका गाढ़ापन घूसर से काला में परिवर्तित होता है। पेन्सिल बहुत कठोर से लेकर बहुत मुलायम और काला होता है। पेन्सिल के कालेपन की अनेक अवस्थायें होती हैं:- H, 2H, B, HB, 3B, 2B, 5B, 6B

  HB - बहुत काला, लिखने में प्रयुक्त

  2B - दो गुना काला, हल्की छाया देने के लिए प्रयुक्त

  4 B - चार गुना काला, मध्यम छाया देने में प्रयुक्त

  6 B - छः गुना काला, गाढ़ा छाया देने में प्रयुक्त

- **रंगीन पेन्सिल** - इनमें मोम के साथ रंजक और अन्य पूरक पदार्थ होते हैं। कई रंग एक साथ मिलाकर बना दिया जाता है।

टिप्पणी

कुछ सुझाव – रंगीन पेन्सिल तकनीक

फेदरिंग

एक भाग को रंग करें और इसके ऊपर एक हल्कें रंग को धीरे से खींचे ताकि उसके माध्यम से वास्तविक हिस्सा दिखे।

मिलाना –

विभिन्न प्रकार के रंग प्राप्त करने के लिए विभिन्न रंगों को एक दूसरे पर रख कर मिलायें।

चमकाना या घोटना –

रंगों को चमकाने के लिए आपने जिन रंगों को पहले ही फैला रखा है उनपर एक सफेद पेन्सिल चलायें। तत्पश्चात् इस तकनीक को रंगों के सतहों को मिलायें जब तक कि ये रंग चमकने न लगें।

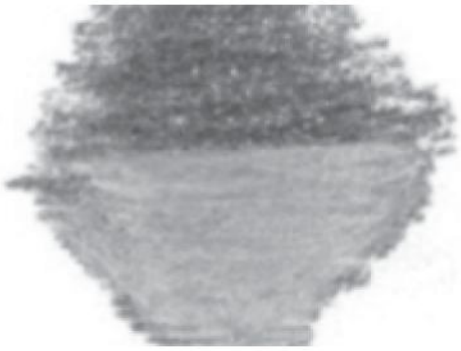

अलंकृत करना -

अपने चित्रकला के कागज पर कागज का एक टुकड़ा बिछायें। एक बॉल प्वाइन्ट पेन की सहायता से दबायें और अपने चित्र बनायें। कागज के टुकड़े को हटायें और अलंकृत क्षेत्र पर पेन्सिल के सिरा को रगड़ें।

- **चारकोल पेन्सिल** - ये चारकोल से बनती हैं और ग्रेफाइट पेन्सिल की अपेक्षा आसानी से धब्बा बनाती है। इस प्रकार ये चित्रकला में आसानी से रंग सृजित करने के लिए प्रयोग की जा सकती हैं।
- **जलरंग पेन्सिल** - ये जलरंग तकनीक के साथ प्रयोग करने के लिए बनायी गयी होती हैं। इन पेन्सिलों द्वारा बनाये गये धब्बों को पानी से संतृप्त किया जा सकता है और ब्रश की सहायता से फैलाया जा सकता है। जो बच्चे ब्रश का प्रयोग नहीं कर सकते और फिर भी जलरंग का प्रभाव देना चाहते हैं तो इन पेन्सिलों का प्रयोग कर सकते हैं। इनसे रंग भरने के पश्चात् पानी की एक सतह डाली जा सकती है जो कि जलरंगों का एक अच्छा प्रभाव देती है।

कुछ सुझाव - जलरंग पेन्सिल तकनीक -

एक चुटकी नमक -

एक पृष्ठभूमि को रंगे, गीला करे और फिर इस पर थोड़ा नमक छिड़क दें। आप बर्फ के कण जैसा प्रभाव पाते हैं। एक बार पेन्ट सूख जाता है तब आप अपनी चित्रकला जारी रख सकते हैं।

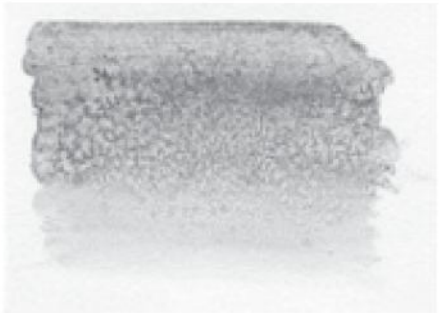

टिप्पणी

बिन्दु चित्रण :-

पेन्सिल का प्रयोग कर एक बाह्य रेखा खींचे। जलरंग पेन्सिल के नोंक को ब्रश से गीला करें। इसे कागज पर दबायें और बाह्य रेखा को भरने के लिए बार-बार ऐसे बिन्दु बनायें। यदि एक दूसरे के नजदीक आप एक समान लय का प्रयोग करते हैं तो रंगों के मिश्रण से एक प्रकाशिक भ्रम पैदा होता है। आप को इस तकनीक प्रयोग प्रकाशीय प्रभाव के लिए भी करना चाहिए जैसा कि आप तारे की चित्रकला के साथ देख सकते हैं।

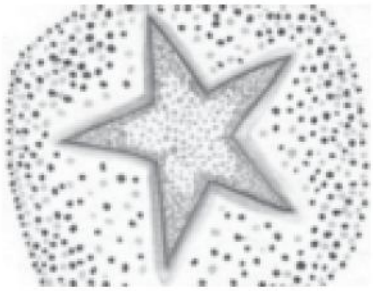

चमकदार प्रभाव:-

एक पूर्ण तस्वीर को चमक प्रदान करने के लिए जल आधारित गोंद से पेन्ट कर दें। चमक की उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए गांद की कई सतहों का प्रयोग करें।

प्रगति जाँच-2

1. छायांकन के लिए किस प्रकार की पेन्सिलों का प्रयोग किया जाता है?

   .....

   .....

   .....

2. हमारे प्रतिदिन के जीवन में लिखने के लिए कैसी पेन्सिल प्रयोग की जाती है?

   .....

   .....

.....

3. चारकोल पेन्सिल किसके लिए प्रयुक्त की जाती है?

.....

.....

.....

2.2.2 पेस्टल रंग

पेस्टल रंग एक वर्तिका के रूप में होता है जो कि पाउडर रंगों के संयोजनसे संयोजित होता है। पेस्टल रंग विभिन्न प्रकार का होता है–

सूखा पेस्टल– यह दो प्रकार का होता है–कठोर पेस्टल और मुलायम पेस्टल।

कठोर पेस्टल

- उच्च संयोजक, कम रंग।
- बाह्य रेखा खींचने में प्रयुक्त।
- रंग कम चमकीले होते हैं।
- स्थिरीकारक अपेक्षित नहीं है।

मुलायम पेस्टल

- अधिक संयोजक, कम रंग।
- बाह्य रेखा खींचने में प्रयुक्त।
- रंग कम चमकीले होते हैं।
- स्थिरीकारक अपेक्षित नहीं है।

तैलीय पेस्टल :- इनकी संसक्ति मुलायम और रंग चमकीले होते हैं। इनको मिलाना कठिन होता है लेकिन चित्रकला में लयात्मक प्रभाव सृजित करने के लिए कपड़े के टुकड़े का प्रयोग कर मिश्रित किया जा सकता है। इसके लिए स्थिरीकारक अपेक्षित नहीं है। रंगों को एक उचित रीति प्रदान करने के लिए एक अच्छी गुणवत्ता का कारतूसी कागज (दोनों के साथ) या पेस्टल शीट प्रयुक्त किया जा सकता है।

पेस्टल माध्यम का सर्वप्रथम उल्लेख लियानार्डो–दा–विन्सी ने किया था। चमकीले रंगों की विस्तृत उपलब्धता के कारण यह माध्यम लोकप्रिय हुआ।

रंग करने की कुछ मजेदार किन्तु प्रभावी विधियाँ–

टिप्पणी

क्रेयन तकनीक-

पेस्टल प्रभाव

क्रेयन का प्रयोग करते समय यदि आप इसे धीरे से दबाते हैं तो रंग पेस्टल जैसे बिल्कुल कोमल हो सकते हैं।

ग्रेफीटो तकनीक

यह तकनीक दो विभिन्न रंगों की सतहों पर आश्रित होती है। पहला एक हल्के रंग से कागज के शीट को ढकता है- यह विभिन्न रंगों के कुछ निकटवर्ती क्षेत्रों में हो सकता है। अब हल्के रंग को काले क्रेयन से ढँकदें। अब एक तीक्ष्ण धार वाली वस्तु से चित्रकला के काली सतह को इस प्रकार खरोंचे कि नीचे का रंग उद्घाटित हो।

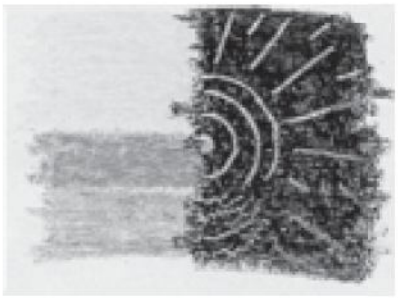

बैटिक (Batik)

पहले मोम के क्रेयन से आकृति खींचे। फिर जलरंगों या पतले रंगीन स्याही से पृष्ठभूमि पेन्ट करें। पानी मोम पर फिसल जाता है और इस प्रकार आकृति दृश्य रह जाती है।

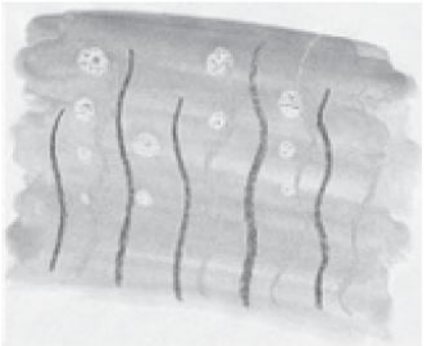

विभिन्न सामग्रियाँ

तैलीय पेस्टल क्रेयन किसी भी प्रकार की सतह पर प्रयुक्त की जा सकती है जैसे-ग्लास, प्लास्टिक या बरतन आदि।

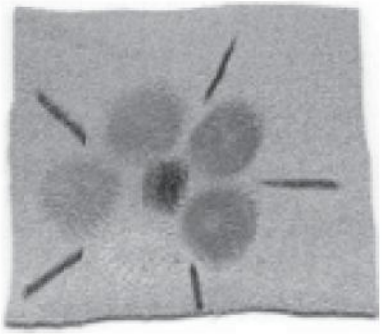

2.2.3 पोस्टर रंग

पोस्टर रंग गोंदयुक्त जलरंग है जो कि अपारदर्शी है और शीघ्र सूख जाता है जैसे कि गोंद। वे प्राय: काँच के मर्तबान में बेचे जाते हैं और इन्हें दृश्य कार्ड रंग या डिस्टेम्पर रंग भी कहा जाता है। ये पोस्टर लिखने या कार्ड बनाने में प्रयुक्त होते हैं।

पोस्टर रंगों का उपयोग

ये व्यापक रूप से प्राकृतिक दृश्य, पेन्टिंग और व्यावसायिक कला उद्देश्य जैसे चित्र, प्रदर्शनी और शैक्षिक कार्य में प्रयुक्त किये जाते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों को पोस्टर रंग के तकनीक को मस्तिष्क में रखने को निर्देशित कर सकता है। जैसे थोड़ा सा रंग प्लेट में ले और थोड़े से पानी से इसे पतला करें। वे गाढ़ा और चिकना रहते हैं। पदार्थ की बनावट को मस्तिष्क में रखते हुए जैसे-बालू खुरदरा है और आकाश चिकना ही ऐसे ही ब्रश के अटपटे प्रयोग से खुदरा प्रभाव दिया जाता है और ब्रश को सहजता से घुमाकर आकाश/पानी का चिकना प्रभाव दिया जा सकता है। बच्चों को गणतंत्र दिवस, किसी त्योहार, किसी अन्य सामाजिक मुद्दों जैसे जनसंख्या, वनीकरण या वैश्विक गर्माहट जैसे मुद्दों पर पोस्टर तैयार करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को पतली रेखायें या छोटे क्षेत्र को प्रदर्शित करने के लिए 0, 2, 4 नं. के गोल काले बाल के ब्रश को रखना चाहिए। बड़े क्षेत्र को रंगने के लिए 5, 6, 8 नं. के ब्रश का प्रयोग करना चाहिए। चौड़ा ब्रश पोस्टर पर लिखने में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। यह ब्रश को उचित तरीके से पकड़ने में बच्चे की सहायता भी करता है।

याद रखें

ब्रश की उचित सफाई के लिए एक खुरदरा कपड़ा रखना चाहिए जिससे एक रंग दूसरे रंग से मिल न जाये ऐसा होने पर रंग बिगड़ जाता है। एक रंग लगाने के बाद दूसरा रंग लगाने से पहले ब्रश की नियमित सफाई के लिए पानी का एक डब्बा अनिवार्य है।

टिप्पणी

प्रगति जाँच-3

1. सूखे पेस्टल के दोनों प्रकारों के नाम लिखो।

   .....

   .....

   .....

2. पेस्टल एक अच्छा माध्यम है किसके लिए?

   .....

   .....

   .....

3. तेल आधारित पेस्टल क्रेयन्स प्रयुक्त किये जा सकते हैं .....।

4. पेस्टल माध्यम सर्वप्रथम प्रयुक्त किया गया था के द्वारा .....।

5. पोस्टर रंग अपारदर्शी है। हाँ/नहीं

6. पोस्टर रंग कहे जाते हैं .....।

2.2.4 कलम और स्याही

कलम और स्याही का उपयोग पेन्सिल चित्रकला के समान है। बाजार मे अनेक प्रकार की कलमें हैं जैसे मोटे नोंक वाला मार्कर, फाउण्टनपेन आदि। हम प्रकृति से भी कलम बना सकते हैं जैसे-छड़ी, बाँस, नरकट, कौअे का पंखपिच्छ, निब पेन आदि। प्रत्येक कलम कागज पर एक अनन्य रेखा बनाती है जिसे अन्वेषित और प्रायोजित करने की जरूरत है। चित्रकला बनाने और चित्रकला में रूचि जागृत करने के लिए स्याही वाली कलम का प्रयोग कर सुलेखन लिखने में छात्रों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जैसे-विभिन्न मोटाई वालो कलमों का प्रयोग कर रूचिपूर्ण तरीके से वन्दे मातरम या जय हिन्द लिख सकते हैं।

विभिन्न कलमों के कुछ उदाहरण:-

बारीक रेखा वाली कलम-जेल पेन, एडिंग (Edding), staedtler, Roting, Berol आदि। मार्कर पेन - (Aquarelle Marker, Brush Marker, काँच और शिल्प मार्कर, ग्राफिक मार्कर आदि। felt Pens- Aquarelle Pens, Berol Felt Pen, Crayola felt Pen, Specialist Crafts Felt Pen आदि।

स्याही:-

स्याही पानी, कार्बन, कालिख शल्क लाक्षा और अन्य दूसरे बंधक सामग्रियों का मिश्रण है। स्याही पानी में घुलनशील है किन्तु सतह से हटाने में मुश्किल हैं स्याही के प्रभावी प्रयोग के लिए कागज की उचित पसंद अनिवार्य है।

स्याही के प्रकार - Acrylic Ink, Drawing Ink, Indian Ink.

रंग करने की कुछ मजेदार किन्तु प्रभावी विधियाँ

पानी अभेद्य स्याही का धब्बा पानी से भरे टब पर रखो फिर एक सफेद कागज को सावधानी से पानी के ऊपर रखो। जब इसे एक छोर से उठाया जाता है तो यह एक आश्चर्यजनक पैटर्न और संगमरमर का प्रभाव दिखाता है। अब इसे सुखाओं, यह शीट उपहार बॉक्स या पुस्तकों आदि को ढकने में प्रयुक्त किया जा सकता है।

2.2.5 रंगोली

रंगोली भारत की एक पारंपरिक सजावटी लोक कला है। ये हिन्दु उत्सवों के दौरान आँगन में बनाया जाता था।

विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के सजावट किये जाते हैं जैसे- राजस्थान में मन्दाना, बंगाल में अल्पना आदि। रंगोली सामान्य ज्यामितीय आकृतियों या दैवीय प्रतीकों जैसी हो सकती है। जैसे-स्वास्तिक, कमल या लक्ष्मीजी के चरण या अलंकृत प्रारूप हो सकते हैं।

रंगोली की सामग्रियाँ राज्यवार अलग होती है। कुछ प्रयोग हैं-

1. सूखे चावल या आटा- जिसमें हल्दी या प्राकृतिक रंग मिलाये जाते हैं।
2. फूल - गुलाब या गेंदे की पंखुड़ियों को सतह पर आकृति प्रदान करना।
3. बालू/धूल - सूखे फूल या धूल से आकृति बनाना।
4. दीया - एक मनोरंजक आकार में दीयों को व्यवस्थित करना। उदाहरणार्थ-वृत्त बनाना या स्वास्तिक बनाना फिर सूखे चावल या गुलाल के विभिन्न रंगों से वृतों को भरना।

कुछ सुझाव

प्रकृति से प्राप्त सामग्री

कीचड़, टहनियों, पत्तियों, सीपी, स्फटिक आदि का प्रयोग कर रंगोली बनाने के लिए बच्चों की

टिप्पणी

सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित किया जाता है। वे अपने आस-पास से सामग्री चुन सकते हैं जो कि उनकी अवलोकन क्षमता तथा प्रकृति की सृजनात्मक क्षमता को बढ़ा सकता है।

2.2.6 मिट्टी

सभी उम्र के बच्चे मिट्टी से खेलना पसन्द करते हैं। वे विभिन्न वस्तुओं की तस्वीर बनाते हैं जिनको वे अपने चारो ओर देखते है। मिट्टी से आकृति बनाने के लिए बहुत थोड़े उपकरण अपेक्षित हैं क्योंकि प्रारंभिक स्तर पर बच्चे अपने हाथों से ही मिट्टी को व्यवस्थित कर सकते हैं।

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों द्वारा अपने हाथों से भींचना, दबाना, थपथपाना और सहलाना उनके गति कौशलों को सुधारेगा। मिट्टी को पकाना महत्वपूर्ण नहीं है। मिट्टी के साथ कार्य करने का अनुभव अधिक महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक कक्षाओं में आसपास के कुम्हार मिट्टी का उत्पादन कर सकते हैं। बच्चे अपने हाथों की हथेलियों का प्रयोग कर पट्टी बनाना सीख सकते हैं जिससे वे भौगोलिक शिल्प बना सकते हैं। वे इन पट्टियों को मोड़कर, काटकर, जोड़कर घरों, भवनों, सड़कों, वाहनों आदि जैसी संरचनायें बना सकते हैं। वे बरतन बनाने के लिए कुंडलियों का अंबार एक दूसरे पर रख सकते हैं। वे इन बरतनों को आकृति प्रदान करने के लिए दबा भी सकते हैं।

महत्व

1. मिट्टी आँख-हाथ के संयोजन को बनाने में सहायता करती है।
2. यह बारीक गति कौशलों को विकसित करता है।
3. यह सृजनशीलता बढ़ाता है।
4. शिक्षण प्रक्रिया को अधिक रूचिपूर्ण और आनंदपूर्ण बना सकता है।
5. यह एकाग्रता बढ़ाता है या कला गतिविधियों में रूचि पैदा करता है।
6. इस गतिविधि को करते समय सभी संवेदनायें प्रयुक्त होती हैं क्योंकि अधिगम प्रक्रिया अत्यधिक लाभदायक है और लम्बे समय तक बना रह सकता है।

याद रखें

सिन्थेटिक मिट्टी के रूप में मिट्टी विविध ब्रान्डों एवं रंगों में बाजार में भी उपलब्ध है। यह सलाह दी जाती है कि शिक्षकों को सिन्थेटिक मिट्टी की अपेक्षा वास्तविक मिट्टी का प्रयोग करना चाहिए।

प्रगति जाँच-4

1. स्याही घुलनशील है ..... में।
2. प्रत्येक कलम में है एक अद्वितीय प्रकार की .....।
3. ..... रंगोली के सामग्री हैं।
4. मिट्टी गति कौशलों को विकसित करने में सहायता करती है। हाँ/नहीं
5. ....., ... औरमिट्टी के प्रारूप बनाने की दो विधियाँ हैं (दबाना और भींचना, कुण्डली)

2.2.7 मिश्र सामग्री

कई प्रकार के कला कार्य जैसे कोलाज, रंगोली, कक्षाकक्ष पृष्ठपट, मंच संचालन उपकरणों को मिश्र सामग्री से बनाया जा सकता है जो कि कम लागत, विषहीन, पारंपरिक, अपारंपरिक हो सकती है। हम गुफा पेन्टिंग्स या चट्टान पेन्टिंग्स से पूर्व के मानवों की खोज और फूलों, पतियों, घास, पेड़ के छाल, खनिजों आदि के रंगों को जानते हैं। उसी प्रकार हम अनुभव प्राप्त करते हैं-

- गेरू से भूरा रंग
- कोयला से काला रंग
- हल्दी से पीला रंग
- पत्तियों, घास, पालक से हरा रंग
- फूलों से हम पाते हैं- गुलाब से लाल, गेंदा से पीला, लाजवर्त, नील से नीला (फूलों के रंगों का प्रयोग कर हम मजेदार मधुबानी कला बना सकते हैं।)

शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर उपयुक्त सामग्रियों पर विचार किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ-पेस्टल शीट की अपेक्षा कोलाज बनाते समय, हम पतंग का कागज प्रयोग कर सकते हैं जो कम लागत वाला होता है। कोलाज तस्वीरों के काट, विभिन्न प्रकार के पत्थरों, स्फटिकों, पत्तियों, सीपियों, टिश्यू पेपर, कपड़ा, रस्सी आदि से भी बनाया जा सकता है। मिश्र सामग्रियों के साथ इस प्रकार का प्रयोगीकरण अधिगम को नमनीय बनाता है और यह सदा पारंपरिक कला पर आश्रित नहीं होता। यह विद्यार्थियों को सृजनात्मक, कल्पनावादी बनाने में सहायता करता है क्योंकि प्रत्येक सामग्री के अपने अद्वितीय लक्षण और गुण होते हैं।

कम लागत के मिश्र सामग्री आसानी से उपलब्ध हैं:-

(i) कागज - कारतूस पेपर, पेस्टल, क्रेप पेपर, पतंग पेपर, चमकीला पेपर, पत्रिका पेपर, टिश्यू पेपर, पैकिंग पेपर आदि।

टिप्पणी

(ii) रंग – पेन्सिल रंग, मोम क्रेयन, सूखा पेस्टल, जल रंग, पोस्टर कलर, प्राकृतिक और डाई रंग और खनिज रंग आदि।

(iii) ब्रश – गोल, सूअर बाल का ब्रश, सपाट, काला बाल का ब्रश।

(iv) पेन्सिल – 2 HB, 2B, 4B, 6B, 8B, HH चारकोल।

(v) गोंद – फेवीकोल, फेवीवाउन्ड, गोंद, फेवीस्टिक।

2.2.8 शिल्प सामग्री

हमारे घर के चारों दीवारों की परिधि के अन्दर बहुत सी सामग्रियाँ उपलब्ध रहती हैं जिन्हें फेंक दिया जाता है। इस कचरे से हम शिल्प सामग्रियों को खोज या पता लगा सकते हैं जिससे मजेदार शिल्प वस्तुएँ उत्पादित की जा सकती हैं। अपशिष्ट पदार्थ या कचरे का पुन: उपयोग करना एक विस्मयकारी अनुभव है। वस्तुओं को जैसी हैं उस रूप में नहीं बल्कि वे कैसी हो सकती हैं उस रूप में देखने की थोड़ी सी कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता, कौशल और योग्यता एक स्मरणीय और लाभप्रद अनुभव हो सकती है। यह बजट को भी कम करता है। कुछ ऐसे अन्वेषण अनपेक्षित परिणाम दे सकते हैं।

उपलब्ध शिल्प सामग्रियाँ निम्न हो सकती हैं:-

1. प्लास्टिक मर्तबान और बोतल
2. खाली डब्बे
3. खाली कार्डबोर्ड के डब्बे और कार्टून्स
4. पुराने टुथ ब्रश
5. पुरानी बोतले के प्लास्टिक के ढक्कन
6. पत्रिकायें और समाचार पत्र
7. पुराने और फटे कपड़े
8. सुतली, धागे, मोती, गोटा, बिन्दी
9. चूड़ियाँ टाइल्स, स्वीचें
10. पाइप, आइसक्रीम टब, चम्मच
11. बल्ब, ट्यूब लाइट, तार
12. नारियल का खोल, पिश्ता का खोल, अखरोट का खोल आदि।

अपशिष्ट पदार्थ से कोई वस्तु कैसे बनायें:-

1. अपने आस-पास में फेंकी गई वस्तुओं को जितना संभव हो इकट्ठा करें जो कि रूचिकर हों।

2. फेंकी हुई वस्तुएँ जो आपके द्वारा चुनी गई हैं से एक विचार का प्रारूप बनायें।
3. अपने विचार को कार्यान्वित करने के लिए अपेक्षित उपकरण जुटायें। जैसे-फेवीकोल, कैंची, कटर, सेलोटेप, स्टेपलर आदि।
4. अब समय है आपकी कल्पना को पंख देने का।

क्या आपने कभी चण्डीगढ़ में नेक चन्द द्वारा बनाये गये रॉक गार्डन को देखा है? यह अपशिष्ट पदार्थों को प्रयुक्त करने का सबसे अच्छा उदाहरण है और निश्चय ही यह अपशिष्ट सामग्री को एक नया आयाम प्रदान करता है।

प्रकृति रूपी माँ सामग्रियों से भरा एक थैला है। हम प्रकृति में आवरण, छाल, टहनियाँ, पत्तियाँ स्फटिक, पंख, बीज, बालू आदि का पता लगा सकते हैं जिनको यदि अन्वेषित करे तो विस्मयकारी कला कार्य उत्पादित कर सकते हैं। इन सामग्रियों का प्रयोग करते समय कोई तकनीक प्रशिक्षण अपेक्षित नहीं है। जब विद्यार्थियों को एक छोटी सी सहायतात्मक दिशा निर्देश दिया जाता है तो वे समझते हैं और इच्छित वस्तु की प्राप्ति के लिए नवीनता से उनका उपयोग करते हैं। उदाहरणार्थ-बच्चे पुराने मोजों या खिलौनों से कठपुतली बना सकते हैं। वे पुराने खिलौने के अन्दर एक छड़ी डालकर छड़ी कठपुतली बना सकते है। पुराने कार्टून, बक्से, खाली बोतल आदि का प्रयोग फूल का गमला बनाने में कर सकते हैं और इसे आसानी से उपलब्ध सामग्रियों जैसे-बटन, सीपी, धागे, माचिस की तीली, ढक्कन, मोती और अखरोट के छिलके आदि से सजा सकते हैं। यदि उनके घर में कोई कोना है जहाँ से कचरे में से चुनी हुई वस्तुओं को रख सकते हैं ताकि आवश्यकता होने पर वे आसानी से उपलब्ध हो जायें। अन्वेषण एवं प्रायोगीकरण की इस प्रक्रिया के दौरान वह कला के तत्वों से जुड़ता है और सृजन करना शुरू कर देता है।

प्रगति जाँच-5

1. मिश्र सामग्रियों प्राप्त की जा सकती हैं इनसे ..... ।
2. क्या यह आवश्यक है कि शिल्प सामग्री बाजार से प्राप्त की जाये? हाँ/नहीं
3. निम्नलिखित कौन सा रंग दे सकते हैं:-
   (i) गेरू से .....
   (ii) कोयला से .....
   (iii) हल्दी से .....
   (iv) पत्तियों, घास, पालक से .....
   (v) लाजवर्त, नील से .....

टिप्पणी

2.3 दृश्य कलाओं और शिल्पों की विभिन्न विधियों के साथ अन्वेषण एवं प्रयोगीकरण

2.3.1 चित्रकला और पेन्टिंग

चित्रकला दृश्य अभिव्यक्ति का एक प्रकार है और दृश्य कला का सबसे उपयुक्त प्रकार है। चित्रकला का उद्देश्य द्वि आयामी माध्यम पर विविध रेखाओं या आकृतियों द्वारा निर्मित एक दृश्य चिह्न छोड़ना है।

कोई नहीं जानता कि चित्रकला वास्तव में कब शुरू हुइ। लेकिन लोगों ने प्रागेतिहासिक काल से ही चट्टान एवं गुफा चित्रकला बनाया है। जब 14वीं शताब्दी या उसके बाद कागज उपलब्ध हुआ तब से चित्रकला उस पर किया जाने लगा था। चित्रकला या पेन्टिंग, संवेगों या घटनाओं को मूर्त रूप देने में सहायता करता है जिसे बच्चा शाब्दिक या लिखित रूप में व्यक्त नहीं कर सकता। यह कला रूप उनके विचारों और भावनाओं को कागज पर व्यक्त करने के लिए मार्ग उपलब्ध कराता है। उदाहरणार्थ छोटे बच्चे जो आइसक्रीम पसन्द करते हैं वे कागज पर इसका चित्र बनाना पसन्द करेंगे। गुब्बारे, घर, अभिभावक, विद्यालय, फूल, कार आदि जिसे वे अधिक देखते या प्यार करते हैं को व्यक्त करने के लिए उनका चित्र बनाना पसन्द करते हैं। कभीकभी वे अपनी पेन्टिंग द्वारा कहानी वर्णित करना भी पसन्द करते हैं।

चित्रकला

चित्रकला बनाने के लिए जो सामान्य उपकरण प्रयुक्त किये जा सकते हैं वे निम्नवत है:-

- चॉक
- चारकोल
- गल्प
- क्रेयन
- ग्रेफाइट
- पेस्टल
- मार्कर
- कलम और स्याही
- पेन्सिल
- ब्रश

ये एक नुकीली छड़ी के रूप में होते हैं जो मीडिया के कण को आधार पर रखते हैं। इनमें से अधिकांश सामग्री या तो सुखी (ग्रेफाइट, चारकोल, पेस्टल, गल्फ) या एक घुलनशील तरल युक्त (मार्कर, कलम और स्याही) होते हैं।

चित्रकला के लिए आधार हो सकते हैं:-

1. कागज
2. कैनवास
3. धातु
4. लकड़ी
5. प्लास्टर
6. दीवार (भित्ति के लिए)

पेन्टिंग

पेन्टिंग रंगों को एक सतह पर रखने की विधि है। ये रंग पेन्ट, क्रेयन या अन्य कोई सामग्री हो सकते हैं जिन्हें हाथों/अंगुलियों, चाकू, स्पैचुला आदि से भी किया जा सकता है।

पेन्टिंग में प्रयुक्त होने वाले रंगों के प्रकार:-

1. **प्रत्यक्ष रंग :-** रंगों के इस वर्ग के अन्तर्गत सूखे पेस्टल, क्रेयन, रंगीन पेंसिल आती हैं। ये छोटे बच्चों द्वारा आसानी से उपयुक्त की जा सकती है और रंग करने के लिए प्राथमिक स्तर पर बच्चे को परिचित कराया जाना चाहिए क्योंकि वे किसी सख्त उपकरण को नहीं चाहते।
2. **तैल रंग :-** ये ट्युब में उपलब्ध हैं। इन्हें पेन्टिंग के लिए तारपीन के तेल से पतला किया जाना है। पेन्टिंग सामान्यत: बोर्ड या कैनवास पर की जाती है। ये बड़े बच्चों द्वारा प्रयुक्त किये जाते हैं जिनके लिए अधिक उपकरण अपेक्षित है जो व्यवस्थित करने में कम मुश्किल हैं।
3. **जल रंग/पोस्टर रंग :-** तैलीय पेन्टिंग की अपेक्षा जल रंग प्राचीन हैं। सामान्यत एक मात्र माध्यम पानी आवश्यक है। जल रंग पारदर्शी होते हैं अत: इसकी एक या अधिक परतें पेन्ट की जा सकती हैं। जल रंग पेन्टिंग में प्रत्येक को विशाल क्षेत्र प्रदान करता है। जैसे वे रंगीन पेन्सिल, पेस्टल, कलम, स्याही या कोई भी चीज जो पानी के साथ संयोज्य हो के माध्यम से प्रयुक्त की जा सकती हैं।

2.3.2 खण्ड (ब्लॉक) पेन्टिंग

छपाई प्रभाव अर्जित करने की एक रूचिपूर्ण विधि है। यह उतना ही सामान्य हो सकती है जितना कि अंगुली का निशान होने के लिए अँगुठे को स्टाम्प पैड पर रखकर दबाना होता है।

सब्जी की छपाई:- आलू, प्याज, गोभी, शिमला मिर्च आदि जैसी सब्जियों को काटकर रंग या पेन्ट से गीला कर छाप अंकित करने के लिए कागज पर दबाया जाता है। शिक्षा या मनोरंजन के लिए माध्यम सृजित करने में यह छपाई बनाई जा सकती है।

टिप्पणी

प्रकृति की छपाई:- प्रकृति में प्राप्त वस्तुयें छपाई के लिए प्रयुक्त की जा सकती हैं। उदाहरणार्थ-पत्तियाँ या पर्णांग, पंख, लकड़ी का एक टुकड़ा या वृक्ष की शाखा आदि।

हाथ/अँगुली/अँगुठा की छपाई:- बच्चे अपनी अँगुलियों, अँगुठों या यहाँ तक कि हाथों को भी रंग करना पसन्द करते हैं। हाथों और अँगुलियों को गाढ़े पेन्ट में डुबाकर छाप छोड़ने के लिए कागज पर दबा देते हैं। फिर ये छाप विभिन्न जानवरों, पक्षियों, फलों, सब्जियों, चेहरों आदि को सृजित करने में प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

1. अँगुठे प्रयुक्त किये जा सकते हैं एक मोटी तस्वीर या सपाट चेहरा या आकृति सृजित करने में।
2. अँगुलियाँ प्रयुक्त की जा सकती हैं एक घेरा या हाथ/पैर बनाने में।
3. हाथ प्रयुक्त किये जा सकते हैं एक तितली या मोर आदि बनाने में।

2.3.3 कोलाज निर्माण

कोलाज एक फ्रांसिसी शब्द है जिसका अर्थ है चिपकाना। कला की शब्दावली में एक सौन्दर्यात्मक संयोजन सृजित करने के लिए यह मुख्यत: कागज, कपड़ा और अन्य सामग्रियों को जोड़ने व्यवस्थित करने और चिपकाने को कहा जाता है। यह किसी भी सामग्री के उपयोग को शामिल करता है और यह सृजनात्मक कल्पना के लिए लाभप्रद है। इसका आधार कागज, बोर्ड, प्लाई या कैनवास हो सकता है। बच्चों द्वारा प्रयुक्त कचरे के प्रयोगीकरण से कोलाज को मनोरंजक एवं सृजनात्मक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ जैसे-कागज, पत्रिका के कागज, समाचार पत्र, रंगीन कागज, पुराने कपड़े, बटन, धागे, बॉक्स, फ्वायल, पंख कपाल, बालू पत्तियाँ टहनी, सूखे फूल आदि प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

कोलाज का विषय गंभीर हो सकता है। जैसे, प्रदूषण, शहर की सफाई, वनों की कटाई आदि या मनोरंजन जैसे पतंग बनाना घर बनाना आदि।

कोलाज का महत्व:-

- यह बच्चों द्वारा काटने और चिपकाने के माध्यम से उनके गत्यात्मक कौशलों को विकसित करने में सहायता करता है।
- ऐसी गतिविधियाँ बच्चों की सृजनात्मक कौशल बढ़ाती हैं।
- बच्चे जो प्रभावी ढंग से खींच नहीं सकते और हतोत्साहित अनुभव करते हैं। ऐसे बच्चों में कलाकार्य के प्रति रूचि विकसति करने में कोलाज एक महत्वपूर्ण विधि है।
- कोलाज निर्माण में सामूहिक कार्य इसको बढ़ा सकता है।

सुझाव :-

- बच्चे सड़क पर धुँआ छोड़ते वाहनों तथा प्रदूषण को दिखाने के लिए माचिस का उपयोग कर सकते हैं।

- जंगल दिखाने के लिए बच्चे पेड़ बता सकते हैं और पेड़ के पत्ती वाले भाग को दिखाने के लिए उस पर पत्तियाँ रख सकते हैं।
- सफाई दिखाने के लिए वे विद्यालय में टॉफी, चिप्स आदि के आवरण को चिपकाकर पालकी बना कर दिखा सकते हैं।

इस प्रकार मिश्र सामग्री को चिपकाकर बना कोलाज बच्चों को प्रकृति, व्यक्तिगत सफाई, अन्य सामाजिक मुद्दों को सुरूचिपूर्ण तरीकों के प्रति सचेत कर सकता हैं और बिना अधिक चित्रकारी के प्रभावी पोस्टर सृजित करसकते हैं। छोटे बच्चे जो कैंची का उपयोग नहीं कर सकते वो भी काटने और चिपकाने के द्वारा अच्छी कलाकृति बना सकते हैं।

2.3.4 मुखौटा एवं कठपुतली निर्माण

कठपुतली एक निर्जीव सादृश्य मूलक जीवित तस्वीर या एक मनोरंजनकर्ता द्वारा चालाकी से चालित वस्तु है जिसे कठपुतली चलाने वाला कहते हैं। यह रंगमंच का एक बहुत प्राचीन रूप है। कठपुतली कई प्रकार की होती हैं और वे कई प्रकार की सामग्रियों से बनी होती हैं जो उनके प्रकार और अभिष्ट उपयोग पर निर्भर करता है। कठपुतली कला अपनी प्रकृति में नमनीय एवं मौलिक माध्यम है। बच्चे प्राथमिक स्तर पर अपने आस-पास उपलब्ध सामस्य सामग्रियों जैसे धागे, कागज के टुकड़े, घास, कागज के थैले, समाचार पत्र, बटन, ऊन, झाड़ू की सींक, पुराने कपड़े या मोजे आदि से मुखौटा और कठपुतली बना सकते हैं। बच्चे अपशिष्ट पदार्थ का प्रभावी उपयोग सीखते हैं. स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों को चुनने में उत्प्रेरित होता है और कृत्रिम या अधिक लागत वाले सामग्री से बचते है। बच्चे अधिक अनुपालक होते हैं और नई वस्तुओं का अन्वेषण करते हैं। कुछ सामान्य तकनीकें इस प्रकार हैं:-

अँगुली कठपुतली :- बिना अधिक उपकरणों के कठपुतली बनाने का यह सबसे आसान तरीका है। कोई भी अँगुलियों पर कपड़े का टुकड़ा बाँध कर और पेन्ट के द्वारा अँगुठे पर आँख, नाक, मुँह आदि बनाकर एक चरित्र का सृजन कर सकता है और अँगुलियों से विभिन्न चरित्रों को चित्रित कर सकता है।

मोजे के कठपुतली :- ये कठपुतली गर्म मोजों को हाथों में पहन कर बनाया जाता है। आँखें या अन्य गुण धागे, बटन, पॉम-पॉम, रिबन, पंख, शिल्प, फोन और मोतियों आदि का प्रयोग कर बनाया जा सकता है। दास्ताने से बनायी आकृतियों को फिर कठपुतली बातचीत दिखाने के लिए कार्यान्वित करते हैं।

कागज के थैला की कठपुतली :- सफेद या भूरे कागज का थैला प्रयोग करे। कागज के थैले पर नीचे चेहरा बनाने के लिए मार्कर का उपयोग करें। मुँह नीचे के किनारे पर होगा जहाँ से थैला मुड़ता है। आप अगुँलियों के लिए कलम का भी उपयोग कर सकते हैं और आँख, नाक आदि काट कर बनायें। कागज के थैले के नीचे किनारे पर कागज से काट कर छोटा नुकीले आकार का कान कागज और गोंद से चिपकायें। एक बार जब चेहरा बन जाये तो आप उसके शरीर को बनाबर पूर्ण कर सकते हो। दिखाने के लिए आपकी कागज के थैले की कठपुतली तैयार है।

दास्ताना कठपुतली :- दास्ताना कठपुतली कपड़ों के दो टुकड़ों को एक साथ जोड़कर अच्छी तरह बनाया जाता है जिससे अन्दर खोखलापन हो ताकि अँगुलियाँ और हथेली उसमें अन्दर जा सके।

मुखौटा :-

यह सामान्यत : चेहरे पर पहना जाता है और छद्मवेश धारण करने और मनोरंजन दोनों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। मुखौटा विभिन्न उत्सवों या कहानी कहने आदि के लिए प्राय: चेहरे पर पहना जाता है। एक कागज की प्लेट, कुछ पंख, कुछ छोटे चमकीले प्लेट आदि वास्तव में एक अच्छा मुखौटा बनाते हैं।

जिस प्रकार कठपुतली बनाई जा सकती है ठीक उसी प्रकार बच्चे विभिन्न सामग्रियों का अन्वेषण और अपनी कल्पना का प्रयोग मुखौटा सृजन के लिए करते हैं। कुछ प्रकार के मुखौटा प्राथमिक बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्रियों से बनाये जा सकते हैं जो इस प्रकार हो सकते हैं:-

कागज का मुखौटा

हम मुखौटा निर्माण के लिए किसी भी कागज का प्रयोग कर सकते हैं। बच्चे चरित्र के अनुसार रेखा खींच कर काटते हैं और फिर उनमें कुछ गुण जोड़ देते हैं। आकृति बनाने के लिए विभिन्न रंग के कागज और सजावट के लिए विभिन्न सामग्रियों को अपनाया जाता है।

मुखौटा का निर्माण

सामग्री-पेस्टलशीट, कारतूस शीट, फेवीकोल, कैंची।

चरण:-

1. पेस्टल शीट का 1/8वाँ भाग लें
2. अण्डाकार आकार में काटें
3. पत्तियों के आकार में आँख का स्थान काटे और इनमें आँख की पुतली लगा दें।
4. नाक काटे और चिपका दें।
5. अपनी इच्छानुसार हँसता चेहरा या उदास चेहरा की मुद्रायें बना दें।

कागज के थैले का मुखौटा:- ये बनाने में सबसे आसान होते हैं। बड़े लिफाफे या कागज का थैला लें जिसमें बच्चे का सिर चला जाये। देखने, साँस लेने और बोलने के लिए उपयुक्त छिद्र बनाने के लिए आँख, नाक और मुँह अंकित करें। बच्चे को उसकी

कल्पना से पेन्ट करने को कहें। आप उनके द्वारा सृजित चरित्रों को देखकर आश्चर्य चकित होंगे।

कागज की प्लेट के मुखौटे:- ये भी बनाने में बहुत आसान होते हैं। एक कागज की प्लेट लें, छिद्र बनायें, मोड़ने के लिए चारो किनारों को काट दें और चेहरे के अनुसार अण्डकार आकार में चिपका दें, दो किनारों पर रबर लगायें और इसे पहन लें। खेलने के लिए मुखौटे को पेन्ट कर दें।

पेपर मैसी (कुट्टी) के मुखौटे:- ये मुखौटे कागज की लुग्दी या कागज को गीला कर गेहूँ की लेई से बनाये जाते हैं। इस सामग्री से कोई भी चेहरे की आकर्षक रूपरेखा बना सकता है। जब यह सूख जाता है तो कठोर और टिकाऊ हो जाता है। चरित्र निर्माण के लिए इसे रंग से पेन्ट कर दें। जरूरत के अनुसार पूरा या आधा मुखौटा बनाया जा सकता है।

2.3.5 मिट्टी से प्रारूपण

मिट्टी अन्वेषण का एक अच्छा माध्यम है क्योंकि यह मुलायम और आघातवर्ध्य है। चूँकि इसे आसानी से साँचे में ढाला जा सकता है। छोटे बच्चों के लिए मिट्टी से वस्तुएँ बनाना बहुत प्राकृतिक है। अपने बचपन में हममे से बहुतों ने मिट्टी के घर, आकृतियाँ बनाई हैं और मैदानों में खेला है। वे मिट्टी की कोमलता का आनन्द लेते हैं क्योंकि वे ऐसी गतिविधियों को करना पसंद करते हैं।

बच्चे सर्वप्रथम गोल आकृति बनाते हैं क्योंकि वे गेंद को पहचानते हैं और उससे खेलते है। इसके बाद ये गेंद पक्षी, फल, सब्जियाँ, मानवीय चेहरे आदि के निर्माण में विकसित हो जाती हैं।

मिट्टी से कार्य करते समय कुछ सावधानियाँ आवश्यक हैं:-

- पानी का अधिक उपयोग मिट्टी को कमजोर बनायेगा और बाद में पट्टों में दरारे आ जायेंगी।
- यह भी सुनिश्चित करें कि मिट्टी में दरार न हो इसे रगड़-रगड़ कर चिकना करना चाहिए।
- यदि आपका काम पहले दिन पूर्ण नहीं होता तो मिट्टी को सूखने से बचाने के लिए इसे गीले कपड़े से ढक देना चाहिए। इससे दूसरे दिन काम किया जा सकता है।
- मिट्टी से कार्य करते समय बच्चों को सफाई और स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। इसलिए उन्हें पेटबन्ध बाँधना चाहिए और सुनिश्चित करें कि उनके हाथ सतह या दीवारों को गन्दा न करें।
- मिट्टी से कार्य करने के पश्चात् उनको हाथ उचित तरीके से साफ करना चाहिए।
- मिट्टी की जिन वस्तुओं को सुरक्षित रखना है उन्हें अलग शेल्फ पर प्रदर्शित करना चाहिए।

टिप्पणी

मिट्टी को सुरक्षित रखने के सुझावः-

मिट्टी को भंडारण के लिए प्लास्टिक के थैले में लपेट कर अच्छे से पैक करना चाहिए। ताकि यह सूखने से बचे। प्रत्येक सत्र की समाप्ति पर बच्चे मिट्टी को सैण्डविच बैग में रख सकते हैं। यदि मिट्टी धीरे-धीरे सूख रही है तो इस पर पानी का छिड़काव करें और फिर इन्हें थैले में रख कर पैक कर दें। जब तक आवश्यकता न हो ये अच्छी तरह से पैक बाल्टी में रखी जा सकती है।

2.3.6 कागज काटना और मोड़ना

कागज काटना : यह कागज को ढाँचों में काटने की एक कला है। यह लोककला का एक प्राचीन रूप है। पूरे विश्व में विभिन्न संस्कृतियों ने इस कला को विभिन्न शैलियों में अपनाया साँझी (Sanjhi) कागज काटने की भारतीय कला है।

आज कागज कतरन मुख्यत: सजावट में प्रयुक्त होती है। ये घरो में दीवारो, खिड़कियों, दरवाजों, दर्पणों, लैम्प और लालटेनों को अलंकृत करते हैं और त्योहारों पर सजावट में भी प्रयुक्त होते हैं। त्योहारों एवं अवकाशों में इनका विशेष अभिप्राय हैं उदाहरण के लिए दीवाली और नव वर्ष पर प्रवेश द्वार को कागज कतरन से सजाया जाता है जो कि अच्छा भाग्य लाने वाला माना जाता है। कागज कतरन प्रतिमानो के लिए विशेषकर कशीदाकारी और रोगन कार्य के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। कागज कतरन की दो विधियाँ हैं- कैंची और चाकू का प्रयोग कर। कागज के आठ टुकडों तक को एक साथ बाँधा जाता है। इसका मूलभाव है कागज को तेज धारवाली कैंची से काटना। चाकू से कागज काटने के लाभ अधिक है क्योंकि कैंची से काटने की अपेक्षा चाकू से एक बार में अधिक कागज काटें जा सकते हैं। द्वि-आयामी या त्री-आयामी काट सामान्य हैं जो कि गहराई और अनुपात आदि का भ्रम सृजित करता है।

केस अध्ययन :-

बच्चे किसी भी प्रकार का एक वर्गाकार कागज ले सकते हैं और इसे किसी ज्यामितीय शैली में क्षैतिज या उर्ध्वाधर मोड़ सकते हैं।

कागज काटना

पच्चीकारी

चरण:

1. कागज की तीन पतली धारियाँ काटें और फिर 1 से.मी. के वर्गाकार छोटे टुकड़े प्राप्त करने के लिए इन्हें क्षैतिज काटें।
2. एक कागज पर एक नमूना, ढाँचा या तस्वीर बनाओ।
3. तद्नुसार इन्हें रंगीन कागज के वर्गों से भरें।

4. हम स्केच पेन से सूक्ष्म विवरण खींचे जैसे फूल का तना।
5. पूर्ण चित्र एक पच्चीकारी के जैसा दिखता है।

(कागज का मुखौटा बनाने की विधि जो 2.5 में दिया गया है)

कागज मोड़ना

जैसे ही हम कागज मोड़ने का शब्द सुनते हैं हमारे मस्तिष्क में लोकप्रिय जापानी शैली 'ओरिगामी' (ओरि का अर्थ मोड़ना और गामी का अर्थ कागज) आता है। कला के रूप में एक शिल्प जैसा संरचनात्मक या कंक्रीट आकार देने की योग्यता अपेक्षित है। इस कला का लक्ष्य है पदार्थ के एक समतल शीट को मोड़ने और शिल्प तकनीकों के माध्यम से पूर्ण शिल्प में परिवर्तित करना और ऐसे काट और गोंद विचारित नहीं है केवल एक जरूरत है कि इसमें एक चुन्नट होनी चाहिए। कागज शिल्प बहुत हल्का और संभालने में आसान है। ऐसे शिल्प के लिए पुराने समाचार पत्र प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

प्रगति जाँच-6

1. चित्रकला कागज और कैनवास पर भी किया जा सकता है। हाँ/नहीं
2. चित्रकला कागज पर.....कोमुक्त करने की एक विधि है।
3. कैनवस पर पेंटिंग.....रंगों से की जा सकती है।
4. ब्लॉक छपाई सब्जियों से की जा सकती है। सत्य/असत्य
5. छोटे बच्चों के लिए प्रयुक्त छपाई तकनीकें ..... हैं।
6. निम्न को मिलाओं–

1.	कोलाज	–	एक जापानी कला
2.	मुखौटा	–	मन्दाना
3.	कठपुतली	–	स्लैब एवं क्वायल विधि
4.	कागज मोड़ना (ओरिगामी)	–	विभिन्न सामग्रियों को जोड़ना
5.	रंगोली (राजस्थान)	–	अँगुली, ग्लोव, स्टिक
6.	मिट्टी	–	कागज का थैला

2.4 किये गये कार्य के लिए फोल्डर बनाना

2.4.1 फोल्डर का अर्थ और अभिप्राय:-

फोल्डर की एक प्रस्तुति संगठन और अभिलेख के लिए खुले कागजों या दस्तावेजों को एक साथ रखना है। इसका आवरण शीटों को अन्दर पकड़ने के लिए क्लिप के साथ मोटे कागज से बना होता है।

टिप्पणी

2.4.2 फोल्डर कैसे बनायें:-

फोल्डर हस्तनिर्मित कागजों या कार्डबोर्ड आदि से बनाया जा सकता है। बाजार में प्लास्टिक के फोल्डर उपलब्ध हैं। हमारी जरूरतों के अनुसार फोल्डरों को नाम देना महत्वपूर्ण है।

2.4.3 फोल्डर का उपयोग

बच्चों के अनुच्छेदों, शिल्प सामग्रियों और कला कार्य के फोटों के भंडारण के लिए फोल्डर प्रयुक्त किया जाता है। ये अभिलेख हैं जो बच्चों को विविध अनुभवों को पुन: संयोजित करने में सहायता करते हैं और शिक्षक के लिए यह सतत एवं समग्र मूल्यांकन में सहायक है।

2.5 सारांश

दृश्य कला शिक्षा के प्राथमिक स्तर का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह बच्चे की अधिगम प्रक्रिया का केन्द्र गठित करता है और यह विद्यालय पाठ्यचर्या का अपरिहार्य अंग है। कला कार्य के माध्यम से विचारों ओर संवेगों को अभिव्यक्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यह बहुबुद्धि को विकसित करने में लाभप्रद है तथा आनंदपूर्ण अधिगम का साधन है। प्रायोगीकरण के विवरण के लिए इकाईयाँ विविध माध्यमों और सामग्रियों जैसे पेन्सिल, पेसटल, कलम, स्याही, पोस्टर रंगों, मिट्टी, कागज आदि के साथ विस्तार में लिया जा चुका है। दृश्य कलाओं और शिल्पों जैसे पेन्टिंग, कोलाज, मुखौटे, मिट्टी प्रारूपण, कागज कतरन और मोड़ने की विविध विधियों के अन्वेषण एवं प्रायोगीकरण को विस्तार में लिया जा चुका है। अन्तत: सभी कार्यों के प्रदर्शन के लिए फोल्डर का निर्माण बहुत महत्वपूर्ण है। यह शिक्षक और बच्चों की सहायता करता है।

इकाई सुनिश्चित करती है कि यदि एक बच्चा को सृजनात्मक वातावरण दिया जाये जहाँ उसे प्रयोग करना और अन्वेषण करना स्वीकृत है तो अधिगम एक साकल्यवादी विकास उपलब्ध करायेगी। बच्चा स्वतंत्रता पूर्वक सोचना, अपने वातावरण और विश्व के बारे में जानना, प्रयोग को सीखना और संभावनाओं का अन्वेषण करना आदि सीखेगा। यह सभी बड़ों ओर शिक्षकों के लिए चरितार्थ है कि कौन बच्चे के जीवन और एक पीढ़ी के सबसे संवेदी बिन्दुओं को स्पर्श करता है और सभी यथार्थ ज्ञान को प्रत्यक्ष अनुभव में उद्‌भुत भी करता है।

2.6 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

1. सत्य
2. (शिल्प, फोटोग्राफी, वास्तुकला)
3. सौन्दर्यात्मक
4. तत्व

5. (लाल, नीला, पीला)

6. नहीं

प्रगति जाँच-2

1. (2B, 4B, 6B)

2. (B)

3. (लयों)

प्रगति जाँच-3

1. मुलायम, कठोर

2. बच्चे

3. शीशा, प्लास्टिक या मृदभाण्ड

4. लियोनार्डो-दा-विन्शी

5. नहीं

6. टेम्परा

प्रगति जाँच-5

1. (आस-पास)

2. नहीं

   (i) भूरा

   (ii) काला

   (iii) पीला (हल्दी)

   (iv) हरा

   (v) नीला

प्रगति जाँच-6

1. हाँ

2. (चिह्न)

3. तेल

टिप्पणी

4. सत्य

5. (अँगूठा/हाथ की छपाई)

6. 1. कागज मोड़ना (ओरिगामी) – एक जापानी कला
   2. रंगोली (राजस्थान) – स्लैब और क्वायल विधि
   3. मिट्टी – स्लैब औश्र क्वायल विधि
   4. कोलाज – विभिन्न सामग्रियों का संयोजन
   5. कठपुतली – अँगुली, दास्ताना, स्टिक
   6. मुखौटा – कागज का थैला

2.7 संदर्भ ग्रन्थ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- www faber-castell.ie/34272/creative-ideas/creative-techniques/crayon-techniques/default news.aspx.
- www faber.castell.ie/34870/creative-ideas/creative techniques/colour pencil techniques/default news.aspx
- www faber.castell.ie/34873/creative-ideas/creative techniques/pastel techniques/default news.aspx
- www faber.castell.ie/34874/creative-ideas/creative techniques/poster paint techniques/default news.aspx
- www faber.castell.ie/34871/creative-ideas/creative techniques/water colour techniques/default news.aspx

1.	National Book Trust	बच्चे के विकास के लिए खेल गतिविधियाँ	Mina Swamina than & Prem Daniel
2.	NCERT	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005	
3.	NECRT	Focus Paper-1.7	
4.	National Book Trust	कला: शिक्षा का आधार	देवी प्रसाद
5.	National Book Trust	सबसे महान कौन है?	रेखा जैन
6.	Tora books	प्रत्येक दिन की सामग्री से बच्चे की कला	Tarit Bhattarjee Kanchan Arni Geet Wolf

7.	Print World (P) Ltd.	कला, सुन्दरता और सृजनात्मकता	श्यामला गुप्ता
8.	Mapin Publishing Pvt. LTd Ahmedabad	भारतीय कला पर सर अरविन्दो	Elisabeth Beck
9.	NCERT	Training Package on Arts Educations for primary Teachers	

2.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. दृश्य कला क्या है? कला के तत्व, कला के मूलाधार
2. दृश्य कला के उद्देश्य क्या हैं?
3. प्राथमिक शिक्षक के लिए दृश्य कला का महत्व।
4. सामग्री से आप क्या समझते हैं? प्राकृतिक, कम लागत, अपशिष्ट सामग्री
5. शिक्षा में कठपुतली का क्या महत्व है? उपयुक्त की जा सकने वाली कठपुतलियों के प्रकार का वर्णन करो।
6. ब्लॉक छपाई तकनीकों को परिष्कृत करें जो कि छोटे बच्चे के लिए पेन्टिंग करने में प्रयुक्त होने वाली सबसे सामान्य विधि है।
7. पेन्सिल क्या है? बाजार में पेन्सिल के कितने प्रकार उपलब्ध है?
8. पेस्टल्स क्या हैं? इनके प्रकारों के नाम लिखे और व्याख्यायित करें।
9. रंगोली क्या है? रंगोली बनाने में क्या-क्या सामग्रियाँ प्रयुक्त हो सकती है?
10. ''कोलाज एक कला कार्य है जो विभिन्न सामग्रियों को जोड़कर बनाया गया है।'' व्याख्या करें।
11. मिश्र मीडिया विभिन्न सामग्रियों के साथ अन्वेषण एवं प्रयोग की एक मजेदार विधि है। क्या यह सत्य है? यदि हाँ तो व्याख्यायित करें।
12. बच्चों में सम्पूर्ण गति कौशलों को मिट्टी कैसे बेहतर करता है? (मिट्टी का महत्व)
13. क्या कागज को मोड़कर विभिन्न रूप सृजित किये जा सकते हैं? यदि हाँ तो इसे कौन सी कला कहा जाता है और एक विधि की व्याख्या करें। एक प्रारूप सृजित करें (उदाहरणार्थ-टोपी या पक्षी)
14. पेन्टिंग में रंगों का क्या महत्व है? (पेन्टिंग में प्रयुक्त होने वाले रंगों के प्रकार का वर्णन करें)

इकाई-3 निष्पादन कला (प्रायोगिक)

टिप्पणी

संरचना

3.0 प्रस्तावना

3.1 अधिगम उद्देश्य

3.2 विभिन्न निष्पादन कलाओं में तत्त्व

3.2.1 संगीत

3.2.1.1 कंठ संगीत

3.2.1.2 वाद्य संगीत

3.2.2 नृत्य

3.2.2.1 लोक नृत्य

3.2.2.2 शास्त्रीय नृत्य

3.2.2.3 सृजनात्मक नृत्य

3.2.3 रंगमंच

3.2.3.1 लोक रंगमंच

3.2.4 कठपुतली

3.2.5 क्षेत्रीय कला रूपों की सार्थकता

3.3 किसी भी निष्पादन कला की योजना और तैयारी

3.3.1 योजना

3.3.2 तैयारी

3.3.3 प्रस्तुतीकरण के सुझाव

3.4 प्रायोगिक गतिविधियों को आवृत करने के लिए फोल्डर का निर्माण

3.5 सारांश

3.6 प्रगति जांच के उत्तर

3.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

3.0 प्रस्तावना

पूर्व के अध्याय में आपने दृश्य कलाओं और शिल्प के विषय में सीख लिया है। ये अध्याय आपको दृश्य कलाओं और शिल्पों के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी देते है। यह कला के मूलाधारों, विभिन्न सामग्रियों के साथ प्रायोगीकरण तथा दृश्य कलाओं और शिल्पों की विभिन्न विधियों के साथ अन्वेषण एवं प्रायोगीकरण को विश्लेषित करता है। शिक्षकों द्वारा कला का कार्यान्वयन विद्यार्थियों के लिए अन्वेषण एवं प्रयोग का विस्तृत अवसर प्रदान करेगा। यह बच्चों की सृजनात्मकता बढ़ायेगा और उनको तात्कालिक पर्यावरण का अन्वेषण एवं आनन्द लेने में भी सहायता प्रदान करेगा। कलाकृतियों के रूप में जीवन के प्रत्येक कदम में प्राय: कला और भारत समानार्थक हैं। ठीक जन्म से बच्चे को शान्त करने के लिए लोरी गाना, विद्यालयों और सामुदायिक आयोजन में महाभारत, रामायण, पंचतंत्र जैसे महाकाव्यों की वीरतापूर्ण कहानियों का अभिनय करना ये सभी हमारे कला से जुड़े है। सभी कला रूप सांस्कृतिक जागरूकता को पोषित और सांस्कृतिक अभ्यासों को प्रोत्साहित करते हैं। यह साधन है जिससे लोगों के ऐतिहासिक भविष्य, परंपराओं, सभ्याताओं, रीतियों को जाना समझा जा सकता है। साहित्य, कविता, महत्त्वपूर्ण मूल पाठों के माध्यम से मानवीय उपलब्धियों को एक पीढ़ी से दूसरी में संचरित किया जा सकता है। इसलिए यह हमारे समृद्ध एवं महत्वपूर्ण भविष्य के मूल्यांकन के द्वारा अति संवेदनशील मस्तिष्कों के लिए उनके रचनात्मक वर्षों में कलाओं के उचित उद्घाटन को प्राप्त करने में बहुत मूल्यवान है। कला शिक्षा की यह इकाई निष्पादन कलाओं के विविध अनुशासनों के बारे में एक विचार देगी कि कैसे उनका कार्यान्वयन एक अधिगमकर्ता के लिए लाभदायक होगा। निष्पादन कलायें संगीत, संगीतात्मक वाद्ययंत्रों, नाटक, नृत्य, कविता पाठ, वृतांत्त, साहित्य आदि को समाविष्ट करती हैं। यह एक बहुत विस्तृत सप्तक है और प्रारंभ से ही मानव जीवन का एक अंग रहा है। ये रूप हमारे सामाजिक जीवन में बहुत सुन्दरता से अंत: स्थापित हैं और इनके बिना जीवन नीरस, हल्का और असौंदर्यात्मक हो जायेगा। अत: हमारे पारंपरिक और समकालीन निष्पादन कलाओं के गौरव को भविष्य की पीढ़ियों के फायदे के लिए संचित, महिमा मंडित, अभ्यासित और पुन संरक्षित किया जाना चाहिए।

3.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई की समाप्ति के बाद आप सक्षम होंगे–

- निष्पादन कला के क्षेत्र और परिप्रेक्ष्यों को समझने में।
- हमारे क्षेत्रीय कला रूपों संगीत, नृत्य, रंगमंच, कठपुतली को समझने में।
- निष्पादन कला गतिविधियों को दैनिक शिक्षण से जोड़ने में।
- हमारे स्थानीय विशिष्ट कलाओं और क्षेत्रीय कला रूपों के महत्त्व का विश्लेषण करने में।
- भविष्य की पीढ़ियों के लिए क्षेत्रीय कला रूपों के साथ बन्धन मजबूत करने और उसे संरक्षित करने में।

- विभिन्न कला रूपों का अन्वेषण करने और उनके अंत: संबंधों को समझने में।
- निष्पादन कलाओं के साथ अन्य पाठ्यसहगामी क्षेत्रों के एकीकरण को समझने में।
- समस्त बच्चों में सृजनशीलता, वैयक्तिकता, समूह कार्य, संवेदनशीलता आदि को बढ़ाने में।

शिक्षक के परिप्रेक्ष्य

शिक्षक को, विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित एवं उत्प्रेरित करना चाहिए। शिक्षक एक मार्गदर्शक, प्रेरक, मूल्यांकनकर्ता, सरलीकर्ता, योजनाकर्ता, निष्पादक, संगठनकर्ता, प्रेरक, सलाहकार, प्रवर्तक और संशोधक की भूमिका निभायेगा।

निष्पादन कलाओं के मूलाधार

किसी पक्षी या गलियों में बेचने वाले की आवाज सुनो, आप उनमें व्यवस्थित मनोरंजक संगीतात्मक स्वर सुनेंगे। शीतल समीर में झूलते वृक्ष को देखो, आप उनमें मनोरंजक नृत्य की गतियां पायेंगे। ऐसा प्रत्येक दिन प्रत्येक क्षण होता है जरूरत है उनको खोजे जाने की। निष्पादन कलाओं और दैनिक जीवन के बीच एक गहरा संबंध है। हमारे देश में सभी धार्मिक उत्सवों और त्योहारों में संगीत, नृत्य और नाटक के तत्व पाये जाते हैं। जीवन में विविध भूमिकाओं को निभाते हुए हम विशिष्ट चरित्रों जैसे मां, बच्चा, पत्नी, पति, चाचा, दादा, चाची आदि समाज में पारिवारिक संबंधों में अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं। जब हम एक विशेष अभिव्यक्ति को पसंद करते हैं तो वह बातचीत या व्यवहार का एक तरीका हो सकता है। हम अनुकरण करते है और धीरे-धीरे यह सौंदर्यात्मक सक्षमताओं में परिवर्तित हो जाता है। विभिन्न कला रूप संवेगों, विचारों, क्रिया, प्रतिक्रियाओं, मनोवृतियों, विश्वासों आदि का व्यवस्थित अभिव्यक्ति है। जब हम इन अभिव्यक्तियों को एक शैली में अपनाते हैं तो हम उनमें संगीत, नृत्य, नाटक, कठपुतली, काव्य पाठ आदि का मूल तत्व सृजन करते हैं। यह समझ, ज्ञान, नये रास्ते खोलता और विकसित करता, अधिगम कौशलों को प्रोन्नत करता और रूचि तथा सृजनात्मकता को बढ़ाता है। यह कला के विभिन्न माध्यमों जैसे गीत, नृत्य, नाटक, कठपुतली आदि अभिव्यक्तियों के द्वारा विविध भूमिकाओं में रूचि रखने और उत्सुकता को संतुष्ट करने का एक विस्तृत अवसर देता है।

3.2 विभिन्न निष्पादन कलाओं में तत्व

सभी निष्पादन कलाओं के आधार हैं–सुनना, देखना, आत्मसात करना, अनुकरण करना, अन्वेषण करना, अभिव्यक्त करना, निष्पादन करना आदि। जब हम एक नृत्य, संगीत या नाटक देखते या करते हैं तो हमारे सभी संवेदी अंग जागृत हो जाते हैं जैसे हम सभी उपर्युक्त विशेषताओं के प्रति स्वत: प्रसन्न हो जाते हैं।

- **अभिव्यक्ति**–सभी जीवों के पास संवेदी अंग होते हैं जो हमें सुनने, देखने, सूंघने, स्पर्श करने और स्वाद लेने में सहायता प्रदान करते हैं। जब हम वास्तव में उपर्युक्त गतिविधि यों को करते हैं जो कि किसी भी मानव जाति के लिए स्वैच्छिक है तो हम विविध

अभिव्यक्तियां देते हैं। ये अभिव्यक्तियां दूसरों को हमारे विचारों को समझने में सहायता करती हैं। उसी प्रकार जब कभी हम किसी भी कला के माध्यम से अपनी प्रस्तुतियों को शैलीकृत करते हैं तो अभिव्यक्तियां एक मुख्य भूमिका अदा करती हैं। एक पिता को अपनी हथेलियों में उपहार छुपाये और आशान्वित पुत्री को असमंजस में इंतजार करते देखो, आप इसमें अभिव्यक्ति के तत्व और स्वैच्छिक नाटक पायेंगे। जब एक बच्चा एक सुन्दर फूल देखता है या एक गुलाब सुंघता है या आकाश में उड़ते पक्षी को अचानक देखता है तो उसकी अभिव्यक्तियां स्वत: होती हैं और कोई भी जो उसके आसपास है उसकी अनुभूति को समझने में सक्षम होता है। सभी निष्पादन कलायें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की होती हैं जब अभिव्यक्ति के तत्व सशक्त होते हैं।

- **सुनना**–हमारे आसपास और वातावरण में विविध आवाजें हैं जैसे–पक्षियों का चहचहाना, पानी का बहना, जानवरों की आवाजें, वर्षा के बूंदों की पिट-पिट, पत्तियों का खड़खड़ाना, हवा की स्निग्धता, कदमों की आवाज, विभिन्न मानव जाति की आवाज आदि। मानव जाति विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न आवाजें संचारित करता है जैसे–बच्चे के जन्म पर, परिवार में मौत पर, विभिन्न प्रकार के उत्सवों आदि पर। अत: सुनना एक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक अभ्यास है।

- **अवलोकन**–आओ एक नजर अपने चारों ओर देखें–हमारी आंखें असंख्य वस्तुओं की गवाह होंगी किन्तु जब हम वास्तव में सभी वस्तुओं को देखते हैं तो हमारी आंखें अपनी पसंद की कुछ ही वस्तुओं को चुनती है शेष वस्तुओं को उपेक्षित कर देती हैं। मान लो हम नृत्य-रंगमंच या संगीत में प्रस्तुति करते हैं तो हम क्या देखते हैं:–

  प्रस्तुति की स्थिति, मंच कहां बनाये गये हैं, दर्शकों की क्या स्थिति है आदि। उसके बाद हम निष्पादन पक्ष पर आते हैं–भंगिमा, शैली, वस्त्र का रंग, गहने, साधन, बनावट आदि, दर्शकों के साथ उपयुक्त आंख संयोजन के लिए कलाकार की मंच पर स्थिति आदि। तीक्ष्ण अवलोकन या दर्शन का यह विकास हमारी अन्वेषण, समझ और उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग की क्षमता को सुधारता है। यह अनुकूलता निष्पादन और प्रस्तुति को सुसाध्य बनाता है। अत: एक शिक्षक को विद्यार्थियों को उनके पड़ोस में प्रत्येक क्षण को विस्तार में देखने की समझ को विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह केवल गतिविधियों की योजना बनाने में सहायता नहीं करेगा बल्कि उनके पड़ोस की बेहतर समझ भी अर्जित करायेगा जो उन्हें आसानी से उपलब्ध स्थानीय संसाधनों के उपयोग में मदद करता है।

- **अन्वेषण**–सुनना, अनुकरण करना, आत्मसात करना, संबंधित करना आदि अन्वेषण के मूलाधार हैं। शिक्षक निष्पादन कला रूपों के माध्यम से उत्सुकता बढ़ाकर अन्वेषण करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं। अन्वेषण की यह मनोवृत्ति विशिष्ट और नवीन ज्ञान अर्जित करने में सहायता करता है। हम हमारे ज्ञान और समझ के साथ अन्वेषण करते हैं।

टिप्पणी

निष्पादन कलाओं के साधन–संगीत, नृत्य, रंगमंच, कठपुतली कला

सामान्यत: ज्ञात कला रूपों संगीत, नृत्य, नाटक, काव्य, सृजनात्मक लेखन आदि के तत्वों को सृजनात्मक कला के विचार में समाहित किया जाना चाहिए। इनमें अन्य कलाओं को भी जोड़ा जा सकता है जैसे–काव्यपाठ, कहानी कहना, स्वांग, कठपुतली, मुखौटा, नृत्य, सामान्य नृत्य संयोजन और समूह गान आदि। क्षेत्र में लोकप्रिय कला चाहे लोक कला, जनजातीय कला या शास्त्रीय कला हो को जोड़ा जाना आवश्यक है। यह इस पर भी निर्भर करता है कि आपका विद्यालय किस क्षेत्र में स्थित है और आपकी कक्षा के बच्चे कौन सा कला रूप चुनना चाहते हैं। यह बच्चों को नृत्य या संगीत से परिचित कराने का सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि स्थानीय कलायें अत्यधिक सार्थक प्रभाव सृजित करती हैं। शिक्षक को कभी भी किसी विशेष कला रूप पर बल नहीं देना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर अधिगम के लिए लक्ष्य होना चाहिए सुखद शरीर, खड़े होने में आत्मविश्वास होना, सबको सुनाई देने योग्य तेज आवाज, एक साथ गाना आदि। आप ऐसे गीतों कहानियों को चुन सकते हैं जो आपके क्षेत्र के निष्पादन कलाओं में लोकप्रिय हैं। जबकि यदि बच्चे किसी निष्पादन कला में रूचि व्यक्त करते हैं तो आपको उन्हें उस कला की तस्वीरें दिखानी चाहिए, रूचिपूर्ण लक्षणों जैसे बनावट, गति संचालन, प्रयुक्त वस्त्र आदि पर विचार विमर्श करना चाहिए जोकि सामान्यत: कला में उनकी रूचि बढ़ायेगा।

''भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विकास–स्वामी प्रज्ञानन्द'' से एक महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद:–प्राचीन समय में सभी अनुष्ठान एवं उत्सव संगीत के तत्वों से जुड़े हुए थे। धार्मिक गीत, लोरियाँ, प्रेमगीत, खेल एवं पीने के गाने, कृषि के गाने, शिकार, शादी, शोक, युद्ध, यात्रा और मौसमी गाने लोगों के जीवन का एक अपरिहार्य अंग बन गये है। लोकप्रिय गाथा गीत और लोकगीत लोगों के घरेलू घटनाओं और अस्तित्व के स्वैच्छिक आनंद के वर्णनात्मक लेखा के समान है। विभिन्न व्यवसायों के संपूर्ण संगीतात्मक वृतान्त जैसे–दक्ष पटाऊओं के चित्रात्मक गीत, सहजियों और बॉउल्स के रहस्यमयी गीत, काल्पनिक नदी–गीत, जादू–गीत, संपेरों के गीत, संथालों के शिकार गीत सामान्यत: देश के सभी क्षेत्रों में पाये जाते हैं। लोकगीत के विभिन्न वाद्य यंत्रों जैसे–इकतारा, दो तारा, सारिन्दा, गोपीयंत्र, वेनु (बांसुरी), तीप्रा, मदाला, ढोलक, खामका, आनन्दलहरी, खंजनी करताल आदि लोगों के सांस्कृतिक स्वाद और उनके दृष्टिकोण के प्रमाण हैं। जब हम उपर्युक्त संस्कृतियों को देखते हैं जो आज तक भी जीवित हैं तो हम एक विद्यार्थी की अवलोकन एवं श्रवण क्षमता बढ़ाकर उसको समर्थ बनाते हैं।

3.2.1 संगीत

संगीत की संकल्पना

- हमारा पर्यावरण बहुत सी विभिन्न आवाजों से बना है। जब हम अधिक अन्वेषण करते हैं, हम विविध प्रकार की आवाजों का अनुभव करते हैं और सुनते हैं जो मनोरंजक, कोमल, तीव्र और एक दूसरे से भिन्न होते हैं। यदि हम चारों ओर देखें, हम चिड़ियों के चहचहाने, जानवरों के गरजने या मिमियाने, एक विक्रेता के पुकारने, घंटियों के बजने, सड़क पर गाड़ियों की आवाज, मानवीय आवाजों, वर्षा की टिप-टिप, और प्रकृति की अन्य आवाजों

टिप्पणी

को सुनते हैं। हम ताली बजाने, मेजों के थपथपाने, चीखने आदि जैसी आवाजें भी सुनते हैं। संगीत एक कला है जिसका माध्यम है आवाज। जब हम आवाजों को एक ऐसे तरीके से जोड़ते हैं जो कि मधुर, आनन्ददायक और लयात्मक हो तब हम उसे संगीत कहते हैं।

मानव जाति ने अपने पड़ोस और पर्यावरण के आवाजों का अनुकरण किया और पुन उत्पादित किया है तथा सात स्वरों एवं अन्य स्वरों के बीच आवाज को व्यवस्थित करने का रास्ता तैयार किया, असीमित संयोजन संगीत का सृजन किया है। इन्हीं सात स्वरों से विविध प्रकार के संगीत का सृजन किया गया है।

हम बचपन से ही हमारे दैनिक जीवन से विभिन्न अवसरों जैसे बच्चे का जन्म, शादी, त्योहार, धार्मिक स्थानों आदि पर संगीत सुनते आये हैं। यह संगीत हमारे क्षेत्र से संबंध रखता है जहाँ जीवन के प्रत्येक अंग और मनोदशा को स्पर्श करने वाले गीत पाये जाते हैं। संगीत केवल स्वरों के बारे में नहीं है, यह अनुभवों और संवेगों के माध्यम से स्वरों को अभिव्यक्त करता है। यह सामान्यत: कहा जाता है कि ''संगीत की भाषा नहीं है और यह सबके लिए साध्य है।''

हम संगीत को वाचिक और वाद्यिक दोनों रूपों में सुनते हैं–

3.2.1.1 वाचिक संगीत

लय और ताल संगीत के दो महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। जब हम शब्दों को ताल के साथ लय में रखते हैं तो यह एक गीत बन जाता है। सभी ताल सातों सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी, सा से सृजित विभिन्न सरगमों पर आधारित हैं। उदाहरणार्थ–नमूना इस प्रकार हो सकता है:–

स्थायी			
सा सा धा पा	गा रे सा रे	गा... पा गा	धा पा गा.....
गा पा धा सा	रे सा धा पा	सा पा धा पा	गा रे सा.....
0	3	x	2
अन्तरा			
गा गा पा धा	पा सा..... सा	धा धा सा रे	गा रे सा धा
गा गा रे सा	रे रे सा धा	सा सा धा पा	गा रे सा....
0	3	x	2

यह 16 तालों की लयात्मक संरचना पर आधारित है। इसी प्रकार विविध लयात्मक संरचनाओं में बहुत से नमूने बताये गये हैं। किसी भी गीत या संरचना का यही आधार है। संगीत समूह की संवेदना को भी प्रस्तुत करता है। संगीत के दोनों क्षेत्रीय एवं शास्त्रीय संदर्भ में भारत की एक समृद्ध रिक्थ है। क्षेत्रीय वाचिक संगीत के कुछ उदाहरण वर्गानुरूप नीचे दिये जा रहे हैं:–

टिप्पणी

लोग गीत :

- ओकुन बीजे बाजरों ए बादली ओकुन बीजे मोठ मेवा मिश्री..... राजस्थान

  dgj okrky

  ekk=k 123456781

  ckksy/kkxsufrAud/ksuA/kk

  Rkkyh & [kkyb x o x

इस गीत का ताल उपर्युक्त है और इसका प्रसंग वर्षा ऋतु पर आधारित है। वर्षा लोगों के जीवन में खुशी और आनन्द लाती है। मयूर नाचती है, कोयल गाती है और हरे मैदान अच्छी फसल के संकेत है।

- यीछु सोन चमन.....काश्मीर

इस गीत में भारत की स्तुति है। हमारा देश एक बाग है जो कि हम जैसे फूलों के कारण सुन्दर है। हमें मिलकर रहना चाहिए और किसी से घृणा नहीं करना चाहिए। कठिन स्थितियों में भी हमारा दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक रहना चाहिए।

प्रथा गीत

चले धान काटे धनिया जल्दी चलना..... बिहार

यह गीत फसलों को काटने के समय गाया जाता है। यह गीत अभिव्यक्त करता है कि फसलों की कटाई यथा शीघ्र पूर्ण करने के लिए लोग कैसे खेतों में काम करते हैं ताकि वे छठ पर्व का आनन्द ले सकें।

भक्ति गीत

आनन्द लोक मंगल को..... रविन्द्र संगीत

यह नोबेल प्रतिष्ठित राजकवि द्वारा लिखा गया सर्वशक्तिमान का एक आह्वान है। यह अभिव्यक्त करता है कि कैसे सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान ईश्वर सभी लोगों में बुद्धि, शान्ति एवं सामंजस्य ला सकता है।

गीतों का संघटन

मिले सुर मेरा तुम्हारा..... (लिंक-यू ट्यूब)
मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा
सुर की नदियां हर दिशा से, बहते सागर में मिलें
बादलों का रूप लेकर, बरसे हल्के हल्के
मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा

टिप्पणी

कश्मीरी (ks) चैन तरज तईं मियां तरज, इक वाट बनाइये सायें तरज

पंजाबी (pa) तेरा सुर मिले मेरे सुर दे नाल, मिलके बने एक नवॉ सुर ताल

मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा

मुन ही जों सुर तुन हीं जे सान पियारा मिले जद अहीं, गीत आसान जो मधुर तरानों बने तद् अहीं

सुर की दरिया बहते सागर में मिले

बदलों दा रूप लैके, बरसाँ हौले हौले

Isaindhal Namm Iruvarin Suramum Namadhakum

Dhisai Veru Aanalum Aazi Ser Aarugal Mugilai

Mazaiyai Pozivadu Polisai Nam Isai

Nanna Dhvanige Ninna Dhvaniya, Seridante Namma Dhvaniya

N ā Svaramu N Svaramu Sangamamai, Manna Svarang Avatarindi

Ente Svaravum Ninnkalote Svaravum, Ottucernnu Namote Svaram y

To r S r M d r Su , Sristi K ruk ik s rSristi Hauk Aikyat n

Tuma mara Svarara Milana, Sristi Kari ChaluEkaTana

गुजराती [Gu] Male Sur Jo Taro Maro, Bane pn Sur Nir to

महाराष्ट्री [Mr] Majhy Tumchy Jult T r , Madhur Sur nchy Barasti Dh r

हिन्दी [Hi] सुर की नदियां हर दिशा से, बहते सागर में मिले

बादलों का रूप लेकर, बरसे हल्के हल्के

मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा

देशभक्ति पूर्ण गीत: आसाम

आई माटी रे मारो मौहे माटी के सुमिलो

आई माटी ते जी बोन मो बी आँकी आँकी मोमिलो

यह गीत आसाम के लोगों की उनकी मातृभूमि के प्रति प्यार और त्याग की अनुभूति को निर्दिष्ट करता है। यह गीत उस स्थान की सुन्दरता का भी वर्णन करता है।

बाल गीत

- हरा समन्दर गोपी चन्दर, बोल मेरी मछली कितना पानी....
- हिन्द देश..... हो हो.....

हम सभी..... एक है..... भाषाऽऽ एक है यहाँ एक क्या है दीदी?

अनेक यानी बहुत सारे..... बहुत सारे, क्या बहुत सारे?

अच्छा, बताती हूं.....

सूरज एक..... चांद एक..... तारे अनेक.....

त्योहार के गीत:

भैया मेरे राखी..... रक्षा बन्धन

3.2.1.2 वाद्ययंत्रात्मक संगीत

भारत में प्राचीन उद्धरण को कहते हैं:

^^xhraoklauR:a E'e~laxhreqP;rs..

'गीतम, वदयम, नृत्यम त्रयम संगीत मुचयते'

भारतीय संगीतात्मक वाद्ययंत्र सदियों से विकसित हुए हैं। किसी अन्य सांस्कृतिक इतिहास के समान प्रत्येक वाद्ययंत्र के विकास की एक सुन्दर कहानी है। बर्तन, तवा, प्लेट आदि मानव जाति द्वारा रसोईघर में प्रयुक्त किये जाने वाले आवश्यक बर्तन थे जो बाद में संगीतात्मक वाद्ययंत्र में बदल गये। इस प्रकार अधिकांश भारतीय वाद्ययंत्र हालांकि सामान्य रूप में शुरू हुए, क्योंकि एक लम्बे विकास क्रम के कारण विविध स्वर और अष्टम स्वरों को उत्पन्न करने में सक्षम अब उत्तम वाद्ययंत्र हो गये हैं। क्या यह विकास नहीं हुआ था, हमारे देश में हम लोगों ने बहुत अधिक वाद्ययंत्र नहीं देखा होगा।

क्षेत्रीय संगीत या लोक संगीत के कलाकार हैं जो क्षेत्र विशेष के संगीत का प्रदर्शन मंजूषा है ठीक उसी प्रकार शास्त्रीय संगीतज्ञों की दो शैलियां-हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटकी हैं। इन सभी संगीतज्ञों ने सैकड़ों संगीतात्मक वाद्ययंत्र सृजित किया है जिनमें से कुछ सामान्यत: अभ्यस्त हैं, कुछ दुर्लभ हैं और कुछ समाप्त हो गये या नवीन वाद्ययंत्रों में मिल चुके हैं। देश के सभी क्षेत्रों में विविध प्रकार के संगीतात्मक वाद्ययंत्र उपलब्ध हैं। हमारे संगीतात्मक वाद्ययंत्र निम्नवत चार विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत हैं:

1. तंत्री वाद्ययंत्रों को तारवाद्ययंत्र (तट्-वाद्य) के नाम से जाना जाता है।
2. वायु वाद्ययंत्रों को एरोफोन (सुशीर-वाद्य) के नाम से जाना जाता है।
3. चर्म वाद्ययंत्रों को झिल्लिका वाद्ययंत्र (अवांधा वाद्य) के नाम से जाना जाता है।
4. आघात वाद्यों को इडियो फोन (घाना-वाद्य) के नाम से जाना जाता है।

हम सभी हमारे दैनिक जीवन में जैसे–मंदिरों, चर्च, समूह कार्यों, संगीत-समारोहों, सिनेमा, प्रचारों और बच्चों के कार्यक्रमों आदि में संगीतात्मक वाद्ययंत्रों को देखते और सुनते हैं। संगीतात्मक वाद्ययंत्रों के कुछ उदाहरण हैं:

1. तार वाद्ययंत्र (तंत्री वाद्ययंत्रों)-तट-वाद्य)

उपर्युक्त नाम वाद्ययंत्र के प्रकार के समानार्थी हैं जो कि विभिन्न प्रकार के सतहों पर तंत्रियों को तानकर आवाज उत्पन्न करते हैं। तंत्री वाद्ययंत्र सामान्यत: कपास, सिल्क और लकड़ी, धातु मिट्टी, जानवरों के चमड़े जैसे सामग्रियों से बनाये जाते हैं। तांबा, पीतल, इस्पात, लोहा, जानवरों के आहार-नाल, विभिन्न जानवरों की खाल को एक सतह पर तानकर और उचित लय के साथ एक आनंददायक संगीतात्मक आवाज उत्पन्न की जाती है। प्राचीन धर्मग्रंथों में वर्णित हैं कि 'तत्' वाद्ययंत्र विभिन्न तारों जैसे–कपास, सिल्क, मुंज आदि से भी बनाये गये थे।

भारत में प्रचलित तंत्री वाद्ययंत्रों को स्थूल रूप से चार समूहों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में वो हैं जो एक मिजराब की सहायता से आवाज उत्पन्न करते हैं जैसे–वीणा, सितार, सरोद आदि। दूसरे वर्ग में वो तार वाद्ययंत्र हैं जो एक धनुष का प्रयोग कर बजाये जाते हैं जैसे–रावण हत्था, सारंगी, सरिन्दा आदि। तीसरा वर्ग जिसमें संतूर जैसे तार वाद्ययंत्र हैं जिनके तारों पर एक जोड़ी लकड़ियों से पीटकर बजाया जाता है। चौथा वर्ग वह है जिसे हाथों से बजाया जाता है जैसे–एकतारा, तानपुरा आदि।

2. एरोफोन (वायु वाद्ययंत्र)–सुशीर वाद्य

वायु वाद्ययंत्र या एरोफोन के वर्ग को सुशीर वाद्य के नाम से जाना जाता है। इस वर्ग के वाद्ययंत्रों में विविध प्रकार के आवाज उत्पन्न करने के लिए वायु का प्रत्यक्ष या परोक्ष उपयोग किया जाता है। सुशीर शब्द का अर्थ खोखला, छिद्रित या छिद्रों से भरा होता है। कागज को मोड़कर बनायी गयी सीटी, भोंपू, लाउडस्पीकर या कोमल पत्तों को मोड़कर बनायी गयी छोटी सीटी जिसे पीपड़ी के नाम से जाना जाता है, सुशीर वाद्ययंत्र के उदाहरण हैं। विभिन्न प्रकार की ध्वनि उत्पादन विधियों के अनुसार सुशीर वाद्ययंत्रों को वर्गीकृत किया गया है। कुछ वाद्ययंत्रों में मुखिका होती है जिसमें फूंक मारकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है जैसे–बांसुरी या अलगोजा। हारमोनियम जैसे कुछ वाद्ययंत्रों में ध्वनि उत्पन्न करने के लिए रीड जैसी तकनीक होती है। अन्य प्रकार के सुशीर वाद्यों में धौंकनी के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न की जाती है। जब फूंक या धौंकनी के

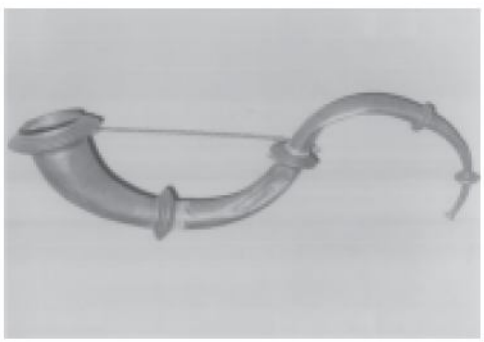

माध्यम से वायु में कम्पन किया जाता है तो कम्पन की आवृत्ति के स्तर से विभिन्न श्रुतियां या पहचानने योग्य नोट्स उत्पन्न होते हैं। छिद्रों को अंगुलियों से ढंककर और खोलकर या अवरोध कों द्वारा वायु वाद्ययंत्रों की ध्वनि को अनुकूल बनाया जाता है। कुछ अन्य वाद्ययंत्र हैं:

रणसिंघा-जन्मू, अलगोजा-राजस्थान, हारमोनियम, बांसुरी, मुरली, शहनाई, तुरी, बीह आदि।

3. झिल्लिका वाद्ययंत्र (चर्म वाद्ययंत्र)-अवांधा वाद्य

अवांध का अर्थ होता है 'जो ढका हुआ हो'। अवांध वाद्य वो वाद्ययंत्र है जिनके मुख आवृत्त होते हैं। लकड़ी, मिट्टी या धातु के खोखले भाग जो जानवरों की खाल या झिल्ली से आवृत होते हैं और जो प्रकृति से आघाती हैं। प्रारंभिक अवांध वाद्ययंत्र वृक्ष के ठूंठ रहे होंगे जो जमीन पर सीधे खड़े थे। एक मात्र आकृति वाला तना जिसे खोखला किया गया होगा और जिसे खाल या झिल्ली से आवृत्त किया गया, पहला ड्रम हुआ होगा। गिरे हुए वृक्ष की तनाओं को खोखला करने की कला धीरे-धीरे पूर्ण हुई थी। विविध आकृतियों एवं आकारों के खोखले रूप विभिन्न प्रकार के संगीतात्मक वाद्ययंत्रों के सृजन के आधार बने।

जानवरों को पकड़ने के लिए एक गड्ढा खोदें और फिर पृथ्वी के एक भाग को जानवरों के मांस का उपयोग करने के पश्चात् उसकी खाल से ढक दें। एक दूसरा ड्रम बनायें जिन्हें 'भूमि दुन्दुभी' नाम दिया गया है। जानवर की पूंछ जो जुड़ी रह गई थी उससे झिल्ली को पीटा जाता था। सख्ती से फैलाये गई झिल्ली से खोखले शरीर को जमीन में कील गाड़ कर ध्वनि उत्पन्न करने के लिए या तो हाथ से या एक वस्तु से बजायें।

क्रमश: विभिन्न आकृतियों और आकार के मिट्टी के बरतन, लकड़ी के बरतन, गोलाकार बरतन, छिछले पैन, लम्बे जार आदि को जब ढंका गया तो विभिन्न प्रकार के लयात्मक संगीतात्मक वाद्य बन गये।

हम देखते हैं इडिक्का (एक मुंह वाला), तबला, ढोल (दोनों तरफ से खुले) आदि। कुछ हथेली और अंगुलियों से और अन्य लकड़ी से बजाये जाते हैं। कुछ वाद्ययंत्र इस प्रकार हैं:

ढोल-पंजाब, नाल-महाराष्ट्र, ढाक-बंगाल, हुडका-हिमाचल प्रदेश, डप्पु-आंध्र प्रदेश

4. इडियोफोन (आघात वाद्य)-घाना वाद्य:

मानव जातियां अपने घरों में बरतन और पैन प्रयुक्त करते हैं। इस प्रक्रिया में ये बरतन और पैन आपस में एक दूसरे से टकराते हैं जो कभी-कभी कानों को अच्छी लगने वाली ध्वनि उत्पन्न करता है। ये

रास्ते पत्थर, लकड़ी और मिट्टी को संगीतात्मक या लयात्मक अनुभूति का एक माध्यम बनाता है। पहले ही जैसा बताया गया था संगीतात्मक अभिव्यक्ति की प्राकृतिक शुरुआत बरतनों जैसे–थाली, घाटम, डांड जैसे वाद्ययंत्र प्राथमिक वाद्ययंत्र होने चाहिए। इनको घाना वाद्य या इडियोफोन नाम दिया गया। घाना का अर्थ है ठोस। घाना वाद्य प्रायः धातु, लकड़ी, मिट्टी जैसी ठोस संरचना के बने होते हैं। डांडिया, मंजीरा, घण्टा, घुंघरू, घाटम आदि कुछ घाना वाद्य यंत्र हैं।

इन वाद्ययंत्रों से संबंधित कुछ अवलोकन इस प्रकार हैं:

- सचमुच किन्हीं दो ठोस टुकड़ों को ठोका या एक साथ रगड़ा जाये तो इडियोफोन हो सकता है।
- मानव जातियों द्वारा रसोई में या अपनी सुरक्षा में प्रयुक्त आधारभूत सामग्रियों जैसे–बरतन, पैन, डण्डा से ये विकसित हुए हैं। श्रेष्ठ संगीतशास्त्री B.C. Deva ने कहा है–''भौतिक संस्कृति से दूर हटकर संगीतात्मक प्रयोग बाद के स्तरों में विशिष्टि हो जाता है।''
- इनकी ढलाई या उत्कीर्णन के समय वे एक, निश्चित स्वर ग्रहण करते हैं जो केवल पीटने के बाद ही सुने और विश्लेषित किये जा सकते हैं।
- जो सुना जाता है वह लम्बी ध्वनि नहीं होती और इसीलिए एक मात्र वाद्ययंत्र से स्वरमाधुर्य उत्पन्न करना उनके लिए संभव नहीं है।
- जो ध्वनि एक बहुत छोटे समय विस्तार के लिए उत्पन्न हुई हैं वे लयात्मक संगत के लिए उपयुक्त है। कुछ वाद्ययंत्र इस प्रकार हैं:

गोंग–सिक्किम, कामस्ले–कर्नाटक, भोरताल–आसाम, लेजियम–महाराष्ट्र, घाट्टम–काश्मीर

प्रगति जांच–1

1. हमारी पांच इंद्रियों का नाम लिखें।
2. जब हम अपनी आंखें बंद करते हैं, हमारी सुनने की शक्ति.....(बढ़ जाती हैं/घट जाती है)
3. निष्पादन कला के सबसे महत्त्वपूर्ण घटक क्या है?
4. जिन ध्वनियों को आप अपने तात्कालिक पर्यावरण में सुनते हैं उनकी सूची बनायें।
5. संगीत सरगम से शुरू होता है। (सत्य/असत्य)
6. संगीत वर्गों में विभक्त है..... (वाचिक और वाद्यिक)
7. किसी प्रकार की ध्वनि संगीत है, क्या आप सहमत हैं? (हां/नहीं)
8. संगीतात्मक वाद्ययंत्रों के वर्ग हैं.....

टिप्पणी

3.3.2 नृत्य

नृत्य शरीर मस्तिष्क और आत्मा की अभिव्यक्ति है। संगीत के साथ चेहरे की अभिव्यक्ति से शारीरिक अंगों के समन्वयन का नाम नृत्य हो सकता है। भारत विविध संस्कृति का एक देश है और प्रत्येक क्षेत्र के नृत्य हैं जो वंशागत हैं। नृत्य के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं–कायिक संचालन, चेहरे की अभिव्यक्ति, संगीत, संगीतात्मक वाद्ययंत्र, साहित्य, स्थान प्रबंधन, समूह और एकल समन्वयन, बनावट, परिधान आदि। नृत्य के परिधान और आभूषण किसी क्षेत्र के पर्यावरणीय स्थिति से प्रेरित होते हैं। क्षेत्रीय नृत्य रूप समूहों में धार्मिक अवसरों, शादियों, सांस्कृतिक घटना, गणतंत्र दिवस परेड, क्षेत्र विशेष के स्थानीय त्योहार, पर्यटन स्थलों आदि पर निष्पादित किये जाते हैं। ये नृत्य एकल, युगल और समूह में निष्पादित होते हैं। इन नृत्यों में विभिन्न आयु-समूह के लोग अपने विशिष्ट क्षेत्रों के नृत्यों का स्वत: निष्पादन करते हैं। उदाहरणार्थ–गुजरात में डांडिया या पंजाब में भागड़ा में हम हजारों लोगों को एक साथ क्षेत्रीय संगीत की धुन पर नाचते पाते हैं।

एकल : एकल नृत्य एक व्यक्ति द्वारा निष्पादित किया जाता है।

युगल : यह दो निष्पादकों द्वारा निष्पादित किया जाता है। सामान्यत: यह दोनों लिंगों के उनकी वैयक्तिक लक्षणों और पहचान के साथ उसी समय किया जाता है।

समूह : हम उत्सवों के अवसर पर लोगों के बड़े समूह को एक साथ नृत्य करते देखते हैं।

धिमसा (देवी पूजा) ..... आन्ध्र प्रदेश

गरबा गुजरात .....

बिहु बंगाल .....

संगीतात्मक वाद्ययंत्रों के बारे में हम पूर्व के पृष्ठों में पढ़ चुके हैं और जो प्रयुक्त भी है और जो नृत्यों में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

नृत्यों के प्रकार

3.2.2.1 लोक नृत्य

लोक नृत्य का विकास सामान्य लोगों के जीवन से हुआ है और जो सामंजस्य में निष्पादित किया जाता है। ये नृत्य त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों और रीतियों, धार्मिक उत्सवों, आनन्द के अवसरों, मौसमों आदि के अवसर पर निष्पादित किये जाते हैं।

3.2.2.2 शास्त्रीय नृत्य

नृत्य रूप जो कि विकसित, सृजित और ठोस आधार वाला है को शास्त्रीय नाम दिया गया है। इसकी एक विशिष्ट शैली है और कौशल गुरुओं द्वारा सीखे जाते हैं। नृत्य का शास्त्रीय रूप मंदिरों के साथ-साथ शाही राज दरबारों में निष्पादित किया जाता था। मंदिर में नृत्य का एक धार्मिक उद्देश्य था जबकि राजदरबारों में यह शुद्ध मनोरंजन के लिए प्रयुक्त होता था। अब यह

टिप्पणी

लोक निष्पादन और कक्षा में व्यवस्थित अधिगम के लिए मंच पर आ चुका है। शास्त्रीय नृत्यों के कुछ प्रकार हैं–कत्थक, भारतनाट्यम, मणिपुरी, ओडिसी आदि।

3.2.2.3 सृजनात्मक नृत्य

पाश्चात्य रंगमंचीय तकनीकों के रूपान्तर का भारतीय शास्त्रीय, लोक और जनजातीय नृत्य के तत्वों के साथ अनुप्राणित होना ही एक सृजनात्मक नृत्य रूप है। उदय शंकर इस प्रकार के अनुकूलन के अगुआ थे इस प्रकार उन्होंने आधुनिक भारतीय नृत्य की जड़ों को जमाया। सृजनात्मकता, तात्कालिक भाषण, कल्पनाशीलता की कला किसी भी प्रकार के सृजनात्मक नृत्य के लिए मूलाधार है। सृजनात्मक नृत्य रूप अपने आप को पारंपरिक और शास्त्रीय नृत्य रूपों के अनुकरण से अलग रखता है। सांस्कृतिक रिक्थ के सार की खोज पर बल देते हुए यह इसे एक भिन्न भारतीय पहचान देता है। पूर्व के वर्षों में उदयशंकर के पश्चात् बहुत से नर्तकों जैसे–आनन्द शंकर, नरेंद्र शर्मा आदि ने सृजनात्मक नृत्य के क्षेत्र में कार्य किया। उदय शंकर के अनुयायी शांति बर्धन ने हमें अमर रामायण दिया जिसमें मानव जातियों ने कठपुतलियों के समान निष्पादन किया। उन्होंने पक्षियों और जानवरों के गति संचालनों का सृजन करते हुए पंचतंत्र की पौराणिक कथाओं को भी प्रस्तुत किया। सृजनात्मक नृत्य पर अत्यधिक बल देने वाली निष्पादन कलाओं की एक अन्य संस्था है दर्पण एकेडमी।

प्रगति जांच–2

1. भारत के कुछ लोक नृत्यों के नाम लिखें।
2. कत्थक और भारतनाट्यम भारत के.....नृत्य हैं।
3. नृत्य शरीर की..... है।
4. सृजनात्मक नृत्य समाविष्ट करता है ..... और इसीलिए यह किसी भी संस्कृति का रिक्थ है।

3.2.3 रंगमंच

रंगमंच की संकल्पना

एक बच्चा जन्म के समय स्वाभाविक अभिव्यक्तियों जैसे–हंसी, मुस्कराहट, रोना, उत्तेजना, आनंद, भय, क्रोध आदि के साथ पैदा होता है। इस स्तर पर बच्चे की कोई भाषा नहीं होती लेकिन वह दूसरों की अभिव्यक्तियों को समझने एवं अभिव्यक्त करने में भी सक्षम होता है। रंगमंच एक कला, एक प्लेटफार्म है जो इन अभिव्यक्तियों, विचारों और संवेगों को एक संघटन प्रदान करता है। स्व–अन्वेषण, आत्मनिरीक्षण, संवेगों के साथ विचारों का संगठन, सामाजिक मुद्दों जैसे विस्तृत विषयों का प्रकटीकरण एवं हल प्रदान करना, मानवीय दृष्टिकोण तथा सम्पूर्ण जीवन को शैलीकृत एवं सौन्दर्यात्मक तरीके से देखने का एक उपागम है रंगमंच। रंगमंच या नाटकों का निष्पादन सामाजिक सम्मान, जागरूकता, संदेश, सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन,

पौराणिक कहानियों, महाकाव्यों, प्रसिद्ध व्यक्तित्वों की कहानियों और धार्मिक अनुष्ठानों आदि पर आधारित है।

रोल प्ले

बच्चे के जीवन में रंगमंच की शुरूआत उसके तात्कालिक पर्यावरण से रोल प्ले के रूप में अनुकरण के माध्यम से होता है। हम अपने दैनिक जीवन में लोगों को विभिन्न भूमिकाओं जैसे धोबी, सब्जी, विक्रेता, फल विक्रेता, शिक्षक, दासी आदि को निभाते हुए देखते हैं। इन सभी लोगों का बच्चे के जीवन से एक प्रत्यक्ष संबंध है। बच्चे लोगों का उसके आस पड़ोस में अवलोकन करते और उनका अनुकरण करते हैं। यह रोल प्ले हैं। इसके अतिरिक्त जब वे विभिन्न व्यक्तियों या किसी जानवर, फल, सब्जी, मशीन आदि के बारे में पढ़ते है तो विभिन्न चरित्रों का स्वांग करना पसंद करते हैं और इस प्रक्रिया में आत्मनिरीक्षण करना और बहुत से तथ्यों के बारे में सोचना प्रारंभ कर देते हैं। जैसे–यदि वे कछुआ का रोल प्ले करते हैं तो वे उसकी शरीर रचना, बाह्य संरचना, यह कहां रहता है, क्या खाता है, कैसे घूमता है आदि के बारे में सोचने लगता है। इस प्रकार इस गतिविधि के माध्यम से वे इस जीव के बारे में बहुत सी सूचनायें इकट्ठा करने में सक्षम हो जाते हैं। इस प्रकार रोल प्ले करना बच्चे के लिए लाभदायक है क्योंकि यह सृजनात्मक, संवेगों के निकास, आवाज अनुकूलन, स्व अभिव्यक्ति, भाषा विकास और पर्यावरण को बेहतर तरीके से समझने का प्रचुर अवसर प्रदान करता है।

कहानी कहना और कहानी का अभिनय

कहानी कहना बचपन से शुरू होता है और यह बच्चे के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राचीन समय में कहानी कहना और कहानी का अभिनय बच्चे के समग्र वृद्धि और विकास का एक बेहतर तरीका सिद्ध हुआ है। सामान्यत: दादा–दादी बच्चे के साथ प्रचुर समय बिताने के लिए इसको प्रयुक्त करते हैं। सूक्ष्म परिवारों के बच्चों को आजकल कहानियां सुनने का बहुत कम अवसर मिलता है क्योंकि संयुक्त परिवार प्रणाली अब समाप्त हो रही है। कहानियां बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ाती है और उनको अपने संसार में जीने का अवसर प्रदान करती हैं। कहानी सुनने का आनन्द और उसी समय नैतिक मूल्यों को प्राप्त करना एक मजेदार उपागम है। शिक्षक कहानी को आसानी से कहने के कौशल को एक प्रभावी तरीके से लागू कर सकते हैं। अभिव्यक्ति, भाव भंगिमाओं, आवाज अनुकूलन, गति संचालन और शब्दों के संयोजन के साथ कहानी कहना एक कला है। इसप्रकार, एक कुशल शिक्षक कहानी कहने और अभिनय के माध्यम से बच्चे के जीवन में अंतर पैदा कर सकता है क्योंकि रंगमंच की शुरुआत बच्चे के जीवन में इसी बिन्दू से होती है।

3.2.3.1 लोक रंगमंच

एक अरब से अधिक विविध जातीय समूहों में बसा भारत लोक रंगमंच को अद्‌भुत कला के माध्यम से लोक संस्कृति का एक रंगीन वर्गीकरण और सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करता है। लोक रंगमंच में स्थानीय उपभाषा प्रयुक्त होती है। कुछ लोकप्रिय रंगमंच हैं–रासलीला, रामलीला, भांड, नौटंकी, वांग, जात्रा आदि। कुछ गाथागीत गायन का रंगमंचीय उत्पादन हैं:–मणिपुर का पाबुजीकाफड, नुपीपाला आदि।

टिप्पणी

लोक रंगमंच में साधन के रूप में प्रयुक्त होने वाले कुछ वाद्ययंत्र हैं जैसे–ढोल, करताल, मंजीरा, खंजीरा आदि। कुछ क्षेत्रीय रंगमंच के प्रकार नीचे दिये जा रहे हैं:

1. **भांड पाथेर**–यह रंगमंच रूप काश्मीर और पंजाब से संबंधित हैं। किसान कटाई के मौसम का उत्सव मनाते और देवी-देवताओं को पूजा करते हैं। यह प्रहसन, हाजिर जवाबी और पैरोडी का संयोजन है। शिकारगाह एक पारंपरिक पाथेर है जो कि शिकारियों द्वारा मृगों के शिकार पर आधारित प्रहसन है। इनमें जानवरों को चित्रित करने के लिए मुखौटों को प्रयुक्त किया जाता है।

2. **कृष्णाअट्टम**–केरल के गुरु वायुर के कृष्ण मंदिर में प्रत्येक वर्ष कृष्णाअट्टम का निष्पादन होता है। इनमें प्रत्येक वर्ष कृष्ण के आठ नाटक लगातार आठ दिनों में अभिनीत किये जाते हैं। ये आठ नाटक हैं: अवतारम, कालियावरदान, रासाकृदा, कमसावदा, स्वयंवरम, बना युद्धम, विविदा वधम और स्वर्गारोहण। कृष्णाअट्टम प्रत्येक वैयक्तिक के जीवन से निकटता से संबंधित है जहां जीवन के विभिन्न स्तरों के सभी पहलुओं को लिया जाता है। उदाहरणार्थ–कृष्ण का जन्म, कालियादमन, कमसावध बताता है कि मां एक बच्चे को जन्म देती है लेकिन सम्पूर्ण परिवार उसका ख्याल रखता है। जैसे बच्चा बड़ा होता है वह सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ना या आवाज उठाना शुरू कर देता है और इनके उन्मूलन के लिए कार्य करता है। क्षेत्रीय रंगमंच के कुछ और उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं:

स्वांग	– हरियाणा, पंजाब
नौटंकी	– उत्तर भारत
रासलीला	– उत्तर प्रदेश
भवाई	– गुजरात और राजस्थान
जात्रा	– बंगाल और उड़ीसा
तमाशा	– महाराष्ट्र
यक्षगान	– कर्नाटक

शहरी क्षेत्रों में अच्छे निष्पादन के लिए रंगमंच में प्रशिक्षण का प्रावधान है। सम्पूर्ण देश में रंगमंच के कई समूह हैं जैसे–नान्दीकर, पृथ्वी रंगमंच, रंगायन, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा आदि जो शिक्षा के क्षेत्र में, कलाकारों के प्रशिक्षण में, समूहों के लिए अधिक बड़े आयोजन करने में रंगमंच को प्रोन्नत करता है। हांलाकि हमारे शहरी केंद्रों में रंगमंच देखने और करने की संस्कृति बहुत अधिक उत्सुक है। लेकिन दूसरी तरफ छोटे क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों में रंगमंच लोगों के लिए, लोगों के साथ मंचित होता है और यह समूहों के दिल के अधिक निकट है। रंगमंच सामान्य व्यक्ति के विचार को प्रवर्तित करता है। यह चुनौतियों का सामना करने के लिए समाज को एक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसके लिए औपचारिक मंच स्थापित करने की विशेष आवश्यकता अपेक्षित नहीं है।

अत: निष्पादन के लिए टेन्ट और अस्थायी मंच का होना जरूरी है। सृजनशीलता और संगीत प्रदर्शन के लिए बहुत अधिक विस्तार है। यह संवेगों को निकलने का अवसर प्रदान करता है। यह सामान्य व्यक्ति के लिए मनोरंजन का सबसे प्रामाणिक साधन है।

कक्षा कक्षों में रंगमंच

ड्रामा/रंगमंच करना: कक्षाकक्ष नाट्यकला में पाठ्यचर्चा संबंधी क्षेत्रों को लिया जाता है और बच्चों के द्वारा कक्षाकक्ष में नाटक आविष्कृत किया जाता है। कभी-कभी ऐतिहासिक उपाख्यान या पूर्व में लिखे गये रंगमंच भी शिक्षा के उद्देश्य के लिए विचारित किये जाते हैं। वर्षों से ये अधिक प्रभावकारिता प्राप्त कर रहे हैं। पाठ्यचर्या संबंधी क्षेत्रों को ड्रामा, वर्णनात्मक वृतांत या कहानी वाचन के माध्यम से करके अध्यापक अत्यधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

प्रगति जांच-3

1. रोल प्ले के लिए अपनी पसंद के किन्हीं 3 चरित्रों को लिखें।
2. क्षेत्रीय रंगमंच निष्पादन के लिए क्या औपचारिक मंच की स्थापना अपेक्षित है? (हॉ/नहीं)
3. कहानी वाचन के माध्यम से मूल्यों को मन में बैठाया जा सकता है। (सत्य/असत्य)
4. कहानी वाचन के 2 अत्यधिक महत्त्वपूर्ण घटकों को लिखें।
5. भांड पाथेर क्षेत्रीय रंगमंच रूप है.....और पंजाब का।
6. .....रंगमंच रूप केरल में प्रति वर्ष कृष्णा नाटक में निष्पादित किया जाता है।

3.3.4 कठपुतली कला

कठपुतलियां निष्पादन कला की अद्भूत पहलू हैं जो कि शिक्षा शास्त्रीय हो सकती हैं। यह सामाजिक जागरूकता, पार्यावरणीय संचेतना, ऐतिहासिक घटनाओं, पारंपरिक कहानियों जैसे विक्रमादित्य की 32 कठपुतली वाली सिंहासन बत्तीसी' जो कि नैतिक शिक्षा देती हैं को फैलाने में सहायता करती हैं। कठपुतलियां हमारे दृष्टिकोण, विचारों और सोचों को संचारित करने में प्रयुक्त होती हैं। वह क्षण जब हम एक कठपुतली को हाथ में पकड़ते हैं, हम उस चरित्र और अन्तदर्शन में मिल जाते हैं। यह मस्तिष्क में एक घण्टी बजाता है और समझने तथा व्याख्यायित करने की योग्यता देने के लिए चरित्र अचानक जीवित हो जाते हैं। यह विषय में अत्यधिक मजा लाता है और यद्यपि यह परिचालन के माध्यम से गंभीर वाद-विवाद लाता है। दृश्यकला और शिल्पकला के सभी तत्व जैसे रंग, सामंजस्य आदि कठपुतली में प्रयुक्त होते हैं। कठपुतली के अधिक सामान्य विषय इस प्रकार हैं–नैतिक मूल्यों वाली कहानियां, महाकाव्यों, स्थानीय मिथक आदि। कठपुतलियां स्थानीय क्षेत्र की पहचान और लक्षणों को चित्रित करती हैं और इनको मस्तिष्क में रखते हुए सृजित की जाती है। कठपुतली कला मानसिक एवं शारीरिक रूप से विकृत लोगों के लिए शिक्षा और जागरूकता फैलाने में सफलतापूर्वक प्रयुक्त हुआ है। ताकि वे संकल्पना को अच्छी तरह समझ सकें।

टिप्पणी

क्षेत्रीय कठपुतली कला के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं:

कठपुतली के प्रकार	स्थान/क्षेत्र	विषय/कठपुतली का नाम
दस्ताना कठपुतली	उत्तर प्रदेश	–
	उड़ीसा	राधा–कृष्ण
	पश्चिम बंगाल	–
	केरल	'पावोकुथु' रामायण और महाभारत
तार वाली कठपुतली	राजस्थान	कठपुतली
	उड़ीसा	कुण्देई
	कर्नाटक	गोम्वेयाट्टा
	तमिलनाडु	बोमालट्टम
इलाका कठपुतली	पश्चिम बंगाल, उड़ीसा	–
छाया कठपुतली	उड़ीसा	रामायण
	केरल	थोल पावोकूथु
	आंध्र प्रदेश	थोलु बोम्मालट्टा
	कर्नाटक	टोगालु गोम्वेयाट्टा, विषय–महाभारत और स्थानीय किंवदन्ती
	महाराष्ट्र	
	तमिलनाडू	

प्रगति जांच–4

1. कठपुतलियों के किन्हीं 3 प्रकारों के नाम लिखें।
2. कठपुतली कला के सबसे सामान्य विषय क्या हैं?
3. कठपुतली कला शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकृत लोगों के लिए सफलतापूर्वक प्रयुक्त होता है। (सत्य/असत्य)
4. कठपुतली कला अभिव्यक्ति की सबसे रूचिकर और ..... माध्यम है।
5. कठपुतली कला शारीरिक एवं मानसिक विकृत लोगों के लिए सफलतापूर्वक प्रयुक्त की गयी है। (सत्य/असत्य)

3.2.5 क्षेत्रीय कला रूपों की सार्थकता उदाहरणार्थ–संगीत, नृत्य, रंगमंच और कठपुतली (प्रारंभिक स्तर पर)

क्षेत्रीय कला रूप प्राथमिक स्तर पर बच्चों के जीवन में एक सार्थक भूमिका निभाते हैं:

1. यह बच्चों के साकल्यवादी विकास में सहायता करता है। कला रूप शारीरिक, संवेगात्मक, ज्ञानात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और भाषा को स्पर्श करते है।
2. गतिविधियों में भागीदारी समन्वयन, सहयोग, साझेदारी, धैर्य, एकता को शक्ति, नेतृत्व और प्रवर्तन और अनुकरण की योग्यता को बढ़ाता है।
3. यह जीवन के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति को बनाने में सहायता करता है।
4. यह अन्वेषण के द्वारा किसी भी स्थिति में समस्या समाधान करने का अवसर देता है।
5. यह एकाग्रता की शक्ति और ध्यान विस्तार को बढ़ाता है। यह मानसिक योग्यताओं को तीक्ष्ण करने में सहायता करता है।
6. यह सृजनशीलता और कल्पनाशीलता को समृद्ध करने में सहायता करता है।
7. यह बच्चे की भावनाओं को सन्तुष्ट करने और ऊर्जा को निकलने का मार्ग देता है।
8. गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों के बीच अंत:क्रिया होती है जो भाषा की बाधाओं को तोड़ता है।
9. कक्षा कक्ष में विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं अत: निष्पादन भाईचारा की भावनाओं को बढ़ाते हैं।
10. क्षेत्रीय कला रूपों का संघटन प्रारंभिक स्तर पर होता है, यह क्षेत्रीय बंधन को शक्ति देता है और क्षेत्र के लिए आदर विकसित करता है।
11. यह विद्यार्थियों को उनकी भारतीय संस्कृति को जानने और समझने तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में सहायता करता है।

3.3 किसी भी निष्पादन कला की योजना और तैयारी

एक विषय के आयोजन में योजना और तैयारी एक सार्थक भूमिका निभाता है। एक विषय की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। एक अच्छी प्रारूपित योजना और तैयारी जीतने की स्थिति में परिणित हो जाती है। योजना का प्रभावी कार्यान्वयन सम्पूर्ण प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3.3.1 योजना

1. प्रसंग का चुनाव विषय के अनुरूप होना चाहिए। कला रूपों का चुनाव करते समय हमें विषय के लक्ष्य एवं उद्देश्य के प्रति जागरूक होना चाहिए। यह अवसर की जरूरत से सह संबंधित होना चाहिए।

2. कला रूप की सूचना प्रामाणिक होने के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है जो कि विभिन्न संसाधनों से एकत्रित की जा सकती है। सूचना एकत्र करने और देने की इस प्रक्रिया में अभिभावक, समुदाय, पुस्तकें, इंटरनेट, अन्य क्षेत्रों के लोग, विद्यार्थी आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए यह अच्छा अन्वेषण हो सकता है जो कि उन्हें एक जीवनपर्यन्त अधिगम अनुभव देगा।

3. यह मस्तिष्क में रखना चाहिए कि निष्पादन किसके लिए प्रायोजित हो रहा है। कला रूपों का चुनाव करते समय दर्शकों के दृष्टिकोण और गुणवत्ता को मस्तिष्क में रखना होता है।

4. नियमित विद्यालय पाठ्यचर्या में स्थान की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए तिथि एवं समय का निर्धारण होता है। विद्यालय कार्यक्रम जैसे परीक्षा, छुट्टियों को जानना अनिवार्य है।

5. विषय की स्थिति, मंच या परिवेश के स्थान का निर्णय कोष की उपलब्धता, पहुंचने में आसानी, दर्शक के लिए स्थान (उत्सव, वार्षिकोत्सव आदि), विषय का स्तर (विद्यालय स्तर, अन्तर्विद्यालयी स्तर, राज्य स्तर आदि) के आधार पर होता है।

6. विषय के आयोजन में विभिन्न मदों के अंतर्गत कोष का आवंटन और वितरण एक निर्णायक भूमिका अदा करता है।

7. विद्यालय में भागीदारी अधिकतम होनी चाहिए क्योंकि सम्मिलन प्रत्येक बच्चा को उत्प्रेरित करता है। कक्षाकक्ष, प्रेक्षागृह, समुदाय भवन आदि सभी समय उपयोग में लाये जा सकते है। निष्पादन के लिए समूहों में योजना और समायोजन ऐसे विषयों में सहायता करता है। प्रतियोगी निर्देशकों द्वारा स्थान और समय सभी परिकलित किये जाते हैं।

8. निष्पादन के लिए प्रयुक्त संगीत, कथालेखन और वाद्ययंत्रों को ऐसा होना चाहिए जो निष्पादन की जरूरतों को परिपूर्ण करता हो साथ-ही साथ कला की प्रमाणिकता को बनाये रखता हो।

9. निष्पादन के लिए वस्त्र और आभूषणों के चुनाव और निर्धारण में यह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

10. कार्य के विभाजन और कर्त्तव्यों के हस्तातंरण को कार्यक्रम में विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों की अधिकतम भागीदारी को स्वीकृत करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों में अधिक अन्वेषण और उनकी क्षमताओं के प्रदर्शन के लिए इसे उन्हें एक प्लेटफार्म भी देना चाहिए।

3.3.2 तैयारी

1. एक निष्पादन की तैयारी के लिए कार्य के विभिन्न स्तरों पर एक पूर्ण जागरूक टीम का होना महत्त्वपूर्ण है।

2. विद्यार्थियों का ध्वनि-परीक्षण और चयन निष्पादन की जरूरत के अनुसार होना चाहिए।

टिप्पणी

3. नियमित विद्यालय पर्यावरण को बाधित किए बगैर कथा, गीत, संगीत, कठपुतली जैसे संवाद प्रेषण, आवाज अनुकूलन, शारीरिक गति संचालनों, मुद्राओं आदि के पूर्वाभ्यास के लिए समय का उचित प्रावधान और आवंटन होना चाहिए। ऐसे कार्यक्रमों में समय का व्यवस्थापन अपेक्षित है। ऐसे केसों में सत्र की शुरुआत से पहले, अग्रिम तैयारी लाभदायक सिद्ध होती है।

4. मंच की बनावट विभिन्न निष्पादनों में प्रतिभागियों की संख्या के अनुसार होनी चाहिए। सीढ़ियों का प्रावधान मंच के दोनों किनारों पर होना चाहिए। मंच के पीछे उचित स्थान होना चाहिए ताकि प्रतिभागी आसानी से अपना स्थान ले सकें।

5. मंच का विन्यास, दर्शकों और निष्पादनकर्ताओं के बीच दृष्टि संयोजन का विस्तार देने वाला होना चाहिए।

6. ध्वनि-प्रणाली की व्यवस्था निष्पादन की जरूरतों जैसे बेतार माइक्रोफोन, मंच का माइक आदि के अनुसार होना चाहिए।

7. मंच की प्रकाश व्यवस्था निष्पादनों की जरूरत के अनुसार व्यवस्थित होनी चाहिए। कला रूप के अनुसार मंच सज्जा और प्रदर्शन अग्रिम में स्थायी और प्राकृतिक कच्चे माल के प्रयोग से होनी चाहिए।

8. वस्त्र, आभूषण और सजावट स्वनिर्मित, किराये पर या विद्यालय में पहले से उपलब्ध हो सकती है। वस्त्र मौसम को ध्यान में रखते हुए प्रतिभागियों को सुरक्षा और आराम देने वाला होना चाहिए। गुणवत्ता जांच के पश्चात् ही मेक-अप किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में कोई समझौता नहीं करना चाहिए। शिक्षक को प्रतिभागियों को स्वयं उनके मेकअप किट लाने को कहना चाहिए।

9. कला रूप की जरूरत के अनुसार उपकरण अग्रिम में तैयार होने चाहिए। ये गृहनिर्मित, विद्यार्थियों और शिक्षकों की एक टीम द्वारा विद्यालय में निर्मित, यदि आवश्यक हो तो बाहर से लाया जाना चाहिए या किराये आदि पर ली जा सकती हैं। कला रूप के लिए उचित पर्यावरण बनाने के लिए पर्याप्त उपकरण होने चाहिए।

10. कठपुतली के लिए मंच विन्यास कठपुतली के प्रकार जैसे–रस्सी, छाया, दस्ताना आदि के अनुसार होना चाहिए। कठपुतलियां स्वनिर्मित हो सकती है या बनाने के लिए बच्चों के साथ कार्य करने के लिए विशेषज्ञों को बुलाया जा सकता है। हम एक कठपुतली शो में विविध प्रकार की कठपुतलियों का प्रयोग कर सकते है।

11. रंगमंच के लिए कथा को सावधानी से अंतिम रूप दिया जाना चाहिए। सम्पूर्ण नाटक के साथ एक संबंद्ध होने के लिए प्रतिभागियों के पास कथा की एक प्रति होनी चाहिए।

12. कोष न्यायपूर्ण व्यवस्थित होने चाहिए क्योंकि ऊपर विमर्शित क्रिया की सम्पूर्ण योजना कोष की उपलब्धता पर आधारित है।

टिप्पणी

13. कार्यक्रम से एक दिन पहले मंच पर सवेश रिहर्सल होना चाहिए ताकि प्रत्येक चीज को जांचा और सुधारा जा सके। अंतिम क्षण की परेशानियों से बचने के लिए वस्त्र से संबंधित सभी तैयारियों जैसे–आयरन करना, कांट-छांट, किसी भी पहनावे के लिए आभूषण की जांच कर लेना चाहिए।

14. श्रव्य ध्वनि प्रणाली व्यवस्था, CD, कैसेट्स आदि अग्रिम में जांच लेनी चाहिए।

15. विद्यार्थियों की चिकित्सिय स्थिति के बारे में जानने के लिए अभिभावकों द्वारा चिकित्सिय स्वीकृति को हस्ताक्षरित एवं संग्रहित कर लेना चाहिए।

16. पानी, नाश्ता, बैठने एवं शौचालय/आराम घर की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। प्रतिभागियों को उनके निष्पादन के समय और संख्या के संबंध में सूचित करने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। शो के समन्वयन के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों की एक टीम को स्वयं सेवा करनी चाहिए।

17. कार्यक्रम में बिजली की विफलता के कारण उत्पन्न बाधा से बचने के लिए बिजली बैक अप की व्यवस्था आवश्यक है। सुरक्षा मानकों जैसे अग्नि सुरक्षा आदि को अपनाना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

अत: किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रभावी पर्यवेक्षण के साथ उचित योजना, तैयारी, उत्तरदायित्वों का हस्तांतरण आदि एक कुंजी है।

3.3.3 प्रस्तुतीकरण के लिए सुझाव

विषय से संबंधित

1. निष्पादन कलाओं में चयनित विषय होने चाहिए:
   - बच्चे में विकास के पहलूओं से संबंध रखने वाले।
   - पाठ्यचर्या के क्षेत्रों से जुड़े हुए।
   - एक बच्चे के लिए सुरक्षित होना चाहिए।
   - बच्चों द्वारा चिन्तन को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए।
2. कोई भी कला रूप जो कि चयनित हैं को सटीकता से पढ़ाया जाना चाहिए न कि बेतरतीब तरीके से।
3. क्षेत्रीय कलाओं को प्रोन्नत किया जाना है। सिनेमा जगत में संगीत का प्रत्येक जगह बहुत अधिक प्रभुत्व है। यद्यपि लोक रंग मंच सुन्दर स्वरमाधुर्य, नृत्यरूप खो चुके हैं। मोहकता आकर्षित करती है किन्तु समझना है कि हमारी क्षेत्रीय कलायें बहुत विकसित हो चुकी हैं, इनमें एक गहराई है और यह हमारे देश के लोगों के बारे में बोलती है।
4. उत्सवों से जुड़े कुछ विषय विद्यालयों में लिये जाने चाहिए जो कि समुदाय में जोश और प्रसन्नता के लिए बच्चों को अतिरिक्त सूचना पाने में सहायता करते हैं।

5. विभिन्न भाषाओं और शब्दकोशों की जानकारी बढ़ाने के उद्देश्य वाला होना चाहिए।
6. प्रभावों को प्रस्तुत करता हो।

मानो जल जगत चित्रित हो रहा है

- पानी के प्रभाव के लिए दुपट्टों का प्रयोग करो।
- मछली के लिए मस्तक मुखौटे प्रयुक्त किये जा सकते है।
- उचित वातावरण बनाने के लिए पृष्ठभूमि में छोटी और बड़ी मछलियां घूम सकती हैं।

कठपुतली के माध्यम से

पंचतंत्र की कहानी 'शेर और खरगोश' को दस्ताना कठपुतली, छाया कठपुतली और श्लाका कठपुतली की सहायता से प्रस्तुत किया जा सकता है। जंगल का दृश्य दिखाने के लिए कठपुतली की सहायता से विभिन्न जानवरों को दिखाया जा सकता है। कुंआ जिसमें शेर छलांग लगाता है को एक बड़े खाली कार्टून से बनाया जा सकता है या हम दर्पण–प्रतिबिम्ब संकल्पना की व्याख्या करने के लिए इसे दर्पण से बदल सकते हैं। बच्चे अपने पड़ोस में देखी वस्तुओं से आसानी से संबंध स्थापित कर सकते हैं।

संभार–तंत्र से संबंधित

1. किसी भी निष्पादन के रिहर्सल के लिए स्थान उचित आकार का होना चाहिए। शेष विद्यालय का कार्य बाधित नहीं होना चाहिए।

2. किसी प्रकार की दुर्घटना को टालने या व्यवस्थित करने के लिए सभी प्रकार की अतिरिक्त सामग्री जैसे–सेफ्टी पिन, हेयर पिन, सूई और धागे, मेकअप किट आदि हाथ में उपलब्ध होनी चाहिए।

3. उपकरण और कठपुतलियां स्थायी और उपयोग करने में आसान होनी चाहिए।

4. सुरक्षा के लिए श्रव्य कैसेट्स जैसे CD की दो या अधिक प्रतियां रखी होनी चाहिए।

5. निष्पादन के दिन के लिए प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था बनाई जानी चाहिए।

6. यदि अपेक्षित हो तो निष्पादन के लिए प्रतिस्थापन तैयार होना चाहिए।

7. मौसम संबंधित मुद्दों को व्यवस्थित करने के लिए एक हॉल या, प्रेक्षागृह या एक ढके हुए बड़े क्षेत्र की वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए।

8. समय और परिस्थिति की जरूरत के अनुसार परिवर्तन करने का प्रावधान ओर योग्यता होनी चाहिए।

प्रगति जांच-5

1. एक निष्पादन की योजना बनाते समय ध्यान में रखे जाने वाले किन्हीं तीन बिन्दुओं की सूची बनायें।
2. कठपुतलियाँ उपयोग करने में .....और आसान होनी चाहिए।
3. मंच एक ऐसी ऊंचाई पर होना चाहिए जहां निष्पादकों और दर्शकों के बीच..... संयोजन हो।
4. निम्नलिखित को सुमेलित करें:

A		B
स्थायित्व	–	रिहर्सल और प्रस्तुती के लिए
स्वयंसेवक	–	योग्यता और वितरण
सवेश रिहर्सल	–	उपकरण, वस्त्र, पृष्ठपर
कोष	–	उपकरण संकेतन
स्थान	–	शिक्षकों और विद्यार्थियों
कठपुतली कला	–	कार्यक्रम से एक दिन पहले

सभी कला रूपों का एकीकरण

इस इकाई में हम सभी चार वर्णित क्षेत्रीय कला रूपों जैसे–संगीत, नृत्य, रंगमंच और कठपुतली कला को प्रस्तुतीकरण में एक विषय में लागू करेंगे।

कहानी–'एक तोता और एक लाल परी'

दृश्य-1 (कहानी)

1. कपड़े के टुकड़े के प्रयोग से कठपुतली शो का प्रस्तुतीकरण।
2. कठपुतली के चरित्र हैं–एक तोता, एक लाल परी, दो नृत्य करती परियां
3. कठपुतली शो के लिए कपड़े को पकड़ने के लिए दो स्वयंसेवक
4. कपड़े के पीछे से कठपुतली गतिसंचालनों और संवादों को सृजित करेगी।
5. स्वर्ग के प्रभाव के लिए धुआं और प्रकाश को बादलों को दिखाने में प्रयुक्त किया जा सकता है। अगले दृश्य में प्रस्तुतीकरण के शेष भाग के लिए कठपुतलियाँ एक सजीव चरित्र के रूप में दिखायी जायेंगी।

टिप्पणी

दृश्य-2 (कहानी)

दृश्य का बदलाव–जब प्रस्तुतकर्ता कहानी का विस्तार कर रहा हो तो कठपुतली शो का मंच और पृष्ठभूमि (बच्चों द्वारा किये गये चित्रकला) दृश्य-2 के लिए बदल दिये जायेंगे।

मंच प्रदर्शन–पृथ्वी, गांव, पेड़, कुंआ, घर आदि के दृश्य।

चरित्र–एक तोता, गीत गाती एवं बरतनों में पानी भरने के लिए जाती ग्रामीण महिलायें।

वस्त्र, आभूषण, मेक-अप–तोता-हरा मस्तक मुखौटा, ग्रामीण महिलायें–राजस्थानी, लहंगा, चुनरी, बोर, कड़े आदि।

उपकरण–एल्यूमिनियम के बरतन या बरतनों को पकड़ने की क्रिया।

संवाद और गीत पूर्व रिकार्डेड या उसी क्षण गाये जा सकते है। ग्रामीण महिलाओं का गीत कोरस में है और तोता का गीत एकल है।

वाद्ययंत्र–ढोलक और हारमोनियम।

प्रकाश और ध्वनि–पक्षियों की चहचहाहट के साथ सुबह का समय।

सभी ग्रामीण महिलायें मंच के पीछे एक किनारे घूमती हैं और परी दूसरी ओर से प्रवेश करती है।

दृश्य-3 (कहानी)

मंच प्रदर्शन दृश्य-2 के समान ही रहता है।

चरित्र–एक लाल परी

वस्त्र, आभूषण, मेक-अप–लाल गाउन, पंख, चांदी के आभूषण मुकुट के साथ, हाथ में एक छड़ी।

संवाद–तोता और लाल परी के बीच सम्पूर्ण बातचीत लयात्मक होती है। (बच्चे इसे शिक्षकों की सहायता से विकसित करें)

दृश्य-4 (कहानी)

जब प्रस्तोता कहानी का आगे विकास करता है तब गांव का दृश्य धोबीघाट में परिवर्तित हो जाता है।

मंच प्रदर्शन–दुपट्टा से पानी के तरंगों को दिखाना, एक तार और उस पर लटका कपड़ा, पेड़ आदि।

चरित्र–धोबी, खच्चर, तोता और लाल परी।

टिप्पणी

वस्त्र, आभूषण, मेक-अप–धोबी-एक धोती और बंडी, खच्चर-एक मस्तक मुखौटा के साथ खच्चर जैसा वस्त्र (खच्चर की स्थिति में खड़ा रहना)

उपकरण–धोने के लिए कपड़े या अभिनय किया जा सकता है।

3.4 प्रायोगिक गतिविधियों को आवृत करने के लिए एक फोल्डर का निर्माण करना

फोल्डर का निर्माण उसी तरीके से करना है जैसा इकाई-2 में विवेचित किया गया है। कक्षा, सभा उत्सवों में की गई सभी गतिविधियों के रिकार्ड को अनुरक्षित करना है। विचारित की गयी गतिविधि पर छोटे नोट्स, अपनायी गई विधियां, फोटो, पाठ्यचर्या से संदर्भित अन्य विषय, विभिन्न लोगों जैसे–दर्शक, मित्र, अभिभावक, अन्य शिक्षकों, प्रधानाचार्य की प्रतिक्रियाओं को लिखा जाना चाहिए।

ये सहायता करेंगी–

- विविध गतिविधियों की प्रक्रियाओं के प्रलेखन को जानने में।
- स्व विश्लेषण और प्रतिक्षण समकालिक सुधार में।
- भविष्य के लिए फोल्डर के पुनः भंडार में–जब बच्चे बड़े होते हैं और अपने बिते हुए रिकार्ड को देखते हैं तो उनमें उल्लास और विजय की समझ आती है।

3.5 सारांश

भारत सभी कला रूपों से समृद्ध संस्कृति का एक देश है। क्षेत्रीय कला रूपों ने पीछे की सीट ले ली है क्योंकि इनको प्रोन्नत नहीं किया गया। अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि इन कलारूपों के महत्त्व को प्रायोजित किया जाये और इन्हें आगे लाया जाये। इस उद्देश को संरक्षित करने और पाने के लिए विद्यालय सबसे उपयुक्त स्थान है। विद्यार्थियों को समृद्ध सांस्कृतिक संपत्ति को अनुभूत करने में समर्थ बनाने के लिए यह शिक्षकों का उत्तरदायित्व हैं कि वे विभिन्न विषयों में प्रसंगों को कला रूपों के साथ संबंधित करें। भारत में निष्पादन कलाओं का संसार मोहक और सौन्दर्यात्मक है। इनका उचित कार्यान्वयन बच्चों को सृजनशील चिन्तक बनाने में उनके जीवन को सुन्दरता से आकार देगा। कोई भी कलात्मक निष्पादन कला की गहराई को समझने में सहायता करता है, आत्मबल को बढ़ाता है और मस्तिष्क तथा शरीर को सक्रिय करता है। यद्यपि बच्चे के अधिगम के प्रारंभिक वर्षों में कला के माध्यम से शिक्षा लाभदायक होगी। शिक्षकों का प्रयास हमारे जीवन में क्षेत्रीय और शास्त्रीय कला रूपों की उपयोगिता को समझने में बच्चों की सहायता करेगा और विद्यालय वार्षिकोत्सव के लिए एक अनमेल किनारा नहीं होगा।

टिप्पणी

3.6 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जांच-1

1. आंख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा
2. बढ़ जाती है
3. अभिव्यक्ति, श्रवण, अवलोकन, अन्वेषण
4. विभिन्न ध्वनियों की सूची बनायें
5. सत्य
6. वाचिक और वाद्यिक
7. हां
8. तंत्री वाद्ययंत्र, वायु वाद्ययंत्र, चर्मवाद्ययंत्र, आघात वाद्ययंत्र

प्रगति जांच-2

1. (दिमसा, गरबा, बिहू)
2. (शास्त्रीय)
3. (गति संचालन)
4. (परंपरा और सृजनशीलता)

प्रगति जांच-3

1. सब्जी विक्रेता, कबाड़ी वाला, फल विक्रेता आदि
2. नहीं
3. सत्य
4. अभिव्यक्ति और भंगिमा
5. काश्मीर
6. कृष्णाअट्टम

प्रगति जांच-4

1. दस्ताना, श्लाका और तार वाली
2. पौराणिक साहित्य, महाकाव्य, नैतिक कहानियां, स्थानीय मिथक
3. सत्य

4. आकर्षक

5. सत्य

प्रगति जांच-5

1. समय, स्थान, मंच, कथा, वस्त्र, आभूषण आदि

2. स्थायी

3. दृश्य

4. स्थायित्व – उपकरण, वस्त्र, पृष्ठपट
   स्वयंसेवक – शिक्षक और विद्यार्थी
   सवेश रिर्हसल – कार्यक्रम से एक दिन पहले
   कोष – उपलब्धता और वितरण
   स्थान – रिहर्सल और प्रस्तुतीकरण के लिए
   कठपुतली कला – संकेतात्मक उपकरण

3.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. नेशनल बुक ट्रस्ट	किंगडम ऑफ ब्लू स्काइज	मायालक्ष्मी चट्टोपाध्याय
2. नेशनल बुक ट्रस्ट	कोंकणी लोक कथायें	ओलविन्हो जेएफ गोमस
3. नेशनल बुक ट्रस्ट	भारत शास्त्रीय नृत्यों का आनंद	लीला सैमसन
4. नेशनल बुक ट्रस्ट	तानासेन-जादूई संगीतकार	अशोक डवार
5. नेशनल बुक ट्रस्ट	सृजनात्मक ड्रामा और शिक्षा में कठपुतली	मेहर आर. कान्ट्रैक्टर
6. नेशनल बुक ट्रस्ट	वृक्ष क्या हैं?	मारती
7. तारा बुक्स	दैनिक सामग्रियों से असीमित कठपुतलियाँ	गीता वोल्फ, अनुष्का रविशंकर
8. तारा बुक्स	दैनिक सामग्रियों से खिलौने और कहानियाँ	सुदर्शन खन्ना, गीता वोल्फ, अनुष्का रविशंकर
9. तारा बुक्स	दैनिक सामग्रियों से मुखौटे और निष्पादन	गीता वोल्फ, V गीता, अनुष्का शंकर

टिप्पणी

10. संदीप प्रकाशन	भारतीय संगीत की झलक	गौरी, कुप्पुस्वामी, एम. हरिहरन
11. संदीप प्रकाशन	निष्पादन कलाओं का प्रलेखन	एल. अन्नपूर्णा
12. प्रकाशन अनुभाग	जीवन में एक क्षण	अलका रघुवंशी
13. प्रकाशन अनुभाग	ड्रम और अन्य कहानियों पर बातचीत	मालिनी सीगल

3.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. निष्पादन कलाओं के महत्त्वपूर्ण घटक क्या हैं?
2. ध्वनियों से आप क्या समझते हैं?
3. हमारे देश में गाये जाने वाले गीत के विभिन्न प्रकार क्या हैं? तीन उदाहरण दें।
4. लोक नृत्य और शास्त्रीय नृत्य के बीच क्या अन्तर है?
5. अपने पाठ्यचर्या के किसी अध्याय से एक कथा बनायें और उसका मंचन करें। इनके बारे में लिखें।
6. आप एक प्रायोगिक फोल्डर क्यों रखते हैं?
7. कुछ आघाती संगीतात्मक वाद्ययंत्रों के नाम लिखें और ये किस राज्य से संबद्ध है?
8. क्या आपने क्षेत्रीय युगल नृत्य देखा है? विषय, क्षेत्र जिससे संबद्ध हो, वस्त्र, क्षेत्र के लोगों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन करें।
9. आप की कक्षा में विभिन्न क्षेत्रों के बच्चे हैं। उनके कौन-कौन से उत्सव है? इन अवसरों पर वे कौन से गीत गाते या नृत्य करते हैं? कम-से-कम दो उदाहरण दें।
10. अपने पाठ्यपुस्तकों से सुझाव दें–किस अध्याय को निष्पादन कलाओं के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है?

क्रियाकलाप

1. किसी त्योहार का अवलोकन करें और लिखें कि इनमें किन विभिन्न प्रकार की निष्पादन कलायें हैं?
2. अपने क्षेत्र के कठपुतली कलाकार के बारे में पता लगायें। वह किन कहानियों का वर्णन करता है?

टिप्पणी

इकाई-4 कला शिक्षा की योजना और संगठन

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 प्रारंभिक कक्षा के लिए कला अनुभूति की योजना (गतिविधि और समय सारणी)

4.2.1 कला अनुभूति क्या है?

4.2.2 कला अनुभूति की योजना कैसे करें?

4.2.3 विद्यालय समय सारणी में कला शिक्षा का स्थान।

4.3 कला अनुभूति के लिए स्थान और सामग्री का संघटन।

4.3.1 कला अनुभूति के लिए क्या सामग्रियां अपेक्षित हैं?

4.3.2 कला अनुभूति के लिए स्थान सामग्री को कैसे संघटित करें?

4.3.3 सामग्री का भंडारण और रखरखाव

4.4 कला अनुभूति का संगठन और सरलीकरण

4.4.1 कला शिक्षा में सरलीकरण क्या हैं?

4.4.2 सरलीकरण की प्रक्रिया

4.5 सारांश

4.6 प्रगति जांच के उत्तर

4.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

4.0 प्रस्तावना

पूर्व के अध्यायों में आपने कला शिक्षा के दोनों रूप दृश्य और निष्पादन कला के अभिप्राय और महत्त्व के बारे में सीख लिया है। निष्पादन कला का विस्तृत क्षेत्र हम सब को अगली पीढ़ी को प्रदान करने के लिए एक चुनौती और खजाना दोनों हैं। यह विशिष्ट कला रूपों जैसे संगीत,

टिप्पणी

नृत्य, नाटक, कठपुतली, पेटिंग, चित्रकला, शिल्पकला, छपाई, कोलाज, कठपुतली निर्माण, फोटोग्राफी, काव्य पाठ आदि को आवृत्त करता है और अन्य क्षेत्रों जैसे सामाजिक विज्ञान, गणित, सौंदर्यशास्त्र, साहित्य आदि को भी आवृत्त करता है। यह एक समुद्र के समान है और जिसमें एक डुबकी लगाना अधिगमकर्ता और शिक्षक को ज्ञान रूपी मोती देगा। कार्यान्वयन के लिए प्रयुक्त विधियों का अध्ययन आपके द्वारा किया जा चुका है और अब हमें आगे बढ़ना पसंद करना चाहिए।

यह स्वीकार किया जाता है कि बच्चे में अभिव्यक्त करने की एक सहज प्रवृत्ति होती है। यह स्वाभाविक प्रवृत्ति बाधित हो जाती है जब प्रारंभिक वर्षों में बच्चे को एक माध्यम जैसे–कागज, रंग, संचालन, गीत, संवाद आदि दिया जाता है। अभिव्यक्ति तत्काल विविध शैलियों या निष्पादन और दृश्य कल्प रूपों में बदल जाती है। शिक्षक द्वारा, प्रदत्त समर्थन, ज्ञान, उत्साह और प्रोत्साहन अधिगम प्रक्रिया में अत्यधिक सहायता करता है।

यद्यपि उपयुक्त तकनीकों के साथ योजना और संगठन अपेक्षित है। कला शिक्षा से संबंधित मुद्दों की योजना और संगठन में एक शिक्षक को समर्थ होना चाहिए। यह विभिन्न विधियों और सामग्री के बारे में ज्ञान, इसकी उपलब्धता, रखरखाव और दृश्य कलाओं के सरलीकरण की प्रक्रिया को समाविष्ट करेगा। निष्पादन कला में कला रूपों को करने के विभिन्न तरीकों की विधियों को कार्यान्वित किया जाता है, समय, स्थान, वस्त्रों, उपकरणों आदि की उपलब्धता और व्यवस्था की योजना की जाती है। बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए संपूर्ण अभ्यास में एक छोटी सी पूर्व योजना अपेक्षित है।

4.1 अधिगम उद्देश्य

पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप समक्ष होंगे:

- अपनी कक्षा में एक कला गतिविधि की योजना बनाने में।
- संगठन के उद्देश्य और महत्त्व का वर्णन करने में।
- संगठन और सरलीकरण के विविध तरीकों को अपनाने में।
- कला की अनुभूति के लिए अपेक्षित सामग्री की सूची बनाने में।
- कला की अनुभूति के लिए सामग्री और स्थान को उचित तरीके से संगठित करने में।
- कला की अनुभूति के लिए बच्चों को मदद देने में।

4.2 प्रारंभिक कक्षा के लिए कला अनुभूति की योजना

किसी कला अनुभूति की योजना के लिए शिक्षक को निम्नलिखित के बारे में जागरूक होना चाहिए:

टिप्पणी

- एक बच्चे की मानसिक क्षमता जिसमें दृश्य बिम्ब, अवास्तविक कल्पना, आनंद और उत्तेजना है।
- वैयक्तिक की अधिगम जरूरतों को समझने और सुसाध्य बनाने की कोशिश करना।
- किसी कला रूप की प्रक्रिया का प्रायोगिक अनुभव।
- आधारभूत तत्वों जैसे आरामदेह स्थान, सफाई और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण, संगीत और नृत्य के लिए संगीतात्मक वाद्ययंत्रों, कलम, कागज, दृश्य कलाओं के लिए रंग आदि की उपलब्धता।

4.2.1 कला अनुभूति क्या है?

कला विद्यार्थियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए बहुमुखी रास्ते उपलब्ध कराती है। आनंद के संदेशों को पाने और संचारित करने के एक उपकरण के रूप में भाषा की अपनी सीमायें हैं और इसलिए यह कला के निरूपण, संगीत और नृत्य के द्वारा संपूरित किया जाता हैं''

—नन्दलाल बोस।

शिक्षा की एक व्यापक प्रणाली को एक जीवन के विविध घटकों जैसे–शारीरिक, मानसिक या बौद्धिक, भावात्मक और आध्यात्मिक को आदर्श रूप में संबोधित करना चाहिए। अधिकांश कला गतिविधियां अनिवार्य रूप से उपर्युक्त घटकों की एक या अधिक बहुआयामी संबोधन हैं और सोचने और करने की दिशा में व्यक्ति को स्वत: शामिल करती है। चित्र बनाना, नाचना, गाना, मिट्टी प्रतिरूपण, कहानी वाचन, अभिनय, या एक संगीतात्मक वाद्ययंत्र बजाना, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक कार्यों और चुनौतियों की बहुसंख्या को शामिल कर मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों को स्वत: प्रेरित करता है। उपर्युक्त सभी गतिविधियां एक व्यक्ति को हममें से प्रत्येक के सृजनात्मक पक्ष के साथ जुड़ने का अवसर देती हैं जहां कोई भी अनुभव करने, अभिव्यक्त करने साझा करने और दूसरे शब्दों में सही या गलत होने के फैसले से बिना डरे सुंदरता को सृजित करने में हम सब को बच्चे के साथ जुड़ने का अवसर देती है। इस प्रकार शिक्षा में कला के अनुभव को यदि सही तरीके से कार्यान्वित किया जायें तो अत्यधिक लाभदायक है।

कला की अनुभूति एक प्रक्रिया है जिसका मौलिक तत्त्व कला कार्य के सामग्री और यांत्रिकता जितना अधिक लम्बा तो नहीं किन्तु अनुभव के स्तरों की अपेक्षा थोड़ा लम्बा है। एक अनुभूति वैयक्तिक रूप से आपके जीवन को प्रभावित करती है। कला अनुभूति इस बहुआयामी अधिगम को उपलब्ध कराती है। कला अनुभूति में क्या रंग प्रयोग किया जाये? कैसे एक रेखा बनाई जाये? किसी चीज का क्या आकार हो? क्या निष्पादन करना है? आदि प्रत्येक कदम निर्णय निर्माण को शामिल करता है। प्रत्येक पसंद के साथ बहुतों के द्वारा साझा अनुभव अत्यधिक वैयक्तिक हो जाता है।

कला अनुभूतियों के माध्यम से बच्चा अमूर्त विचारों का दृश्य अभिव्यक्ति सृजित करता है। कला अनुभूति के क्षेत्रों को शामिल करना चाहिए:–

टिप्पणी

- संसार जिसमें वे रहते और जानते हैं।
- लोग और अन्य जीव
- स्वप्न चित्रों और रहस्यों

अवसर बच्चों को समर्थ बनाता है वास्तविक या काल्पनिक अनुभवों को जीने में अपने अद्‌भूत तरीके से।

प्रगति जांच-1

1. कला अनुभूति से आप क्या समझते हैं?

   .....

   .....

   .....

2. कला को अनुभव करने का अवसर देने में यह क्यों महत्त्वपूर्ण है?

   .....

   .....

   .....

3. किसी कला अनुभूति के स्तरों का वर्णन करें जिनकी आप योजना बनाना चाहते हैं।

   .....

   .....

   .....

4.2.2 एक कला अनुभूति की योजना कैसे बनायें?

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों की जरूरत प्रत्येक गतिविधि में शिक्षक की भूमिका को निर्धारित करता है। एक शिक्षक पढ़ाता नहीं है किन्तु कला गतिविधि में बच्चे की रूचि और भागीदारी बढ़ाने में एक गाइड के रूप में कार्य करता है। अत: हम कहां से शुरू करें?

सर्वप्रथम, शिक्षक एक कला रूप के बारे में सोचता है। शिक्षक संभावनाओं के साथ कार्य करता है और प्रतिदिन कुछ नया प्रवर्तित करने की योजना बनाता है। यह सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है जिसका शिक्षक प्रतिदिन सामना करता है। बच्चा हर्ष, बुद्धि, अति सक्रिय, व्यग्र, कोलाहलपूर्ण सृजनात्मक और अन्य का एक पुंज है। इस ऊर्जा और योग्यता को सांचे में ढालना आसान कार्य नहीं है। यद्यपि कला की कोई गतिविधि जो बच्चे में रूचि और कल्पनाशीलता को जागृत करती है को नवीनता से नियोजित किया जाता है।

बच्चों की अनुभूति एवं अधिगम के लिए सार्थक प्रसंग का चयन अग्रिम में किया जाना चाहिए।

विचार-विमर्श के पाठ्यक्रम के सत्रों के दौरान प्रसंगानुसार विचार स्वत: आ सकते हैं। बच्चों को उनके सार्थक विचारों, बिम्बों, भावनाओं और अनुभूतियों को साझा करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए कविता को स्पष्ट करने के लिए या विगत वर्षों से संबंधित किसी अन्य कलाकार द्वार सृजित कलाकृतियों की नकल करने के लिए शिक्षक द्वारा सही और अपेक्षित पर्यावरण उपलब्ध कराना चाहिए। उसे सभी पहलूओं जैसे उद्देश्यों, कक्षा का स्तर, उपलब्ध सुविधाओं, विद्यार्थियों की संख्या, सामग्री और समय की उपलब्धता आदि पर विचार करना चाहिए।

पाठ्य पुस्तक से बाहर के विषय का अन्वेषण करने के लिए बच्चों को समय दें। अनुभूतियों को बहुसंवेदी नियोजित किया जाना चाहिए और उनमें अवलोकन, अन्वेषण, प्रायोगीकरण तथा सृजन को शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षक को समय सारणी और योजना समय पर भी विचार करना चाहिए।

शिक्षक समुदाय में उपलब्ध विशेषज्ञों जैसे अभिभावकों, कलाकारों, व्यवसायियों को देख सकता है और पाठ को संचारी, ज्ञानपूर्ण और मनोरंजक बनाने के लिए उन्हें आमंत्रित कर सकते हैं।

कला अनुभूतियों की योजना शामिल करती है:

- एक विचार कि क्या करना है?
- उत्प्रेरक के रूप में सामग्रियों और उपकरणों का प्रयोग करना।
- स्थान और समय का संगठन करना।
- समर्थित पर्यावरण सृजित करना।
- प्रदर्शन क्षेत्र के लिए एक दृष्टिकोण होना।
- कार्य के दौरान और समाप्ति के बाद मूल्यांकन के लिए अभिलेख रखना।

कुछ गतिविधियों के लिए सुझाव:

आओ हम एक नृत्य गतिविधि का उदाहरण लेते हैं। शिक्षकों को नृत्य, संबंधित संगीत और साहित्य, वस्त्र, साज सज्जा और मंच-शिल्प का ज्ञान होना जरूरी है। उपर्युक्त सभी तत्वों के लिए यात्रा-क्रम संगठित और उपर्युक्त योजना के माध्यम से क्रमश: चुने जाते हैं। उदाहरणार्थ:

- प्रसंग चयनित किया जा चुका हो।
- पाठ्य पुस्तकों, पुस्तकालय की पुस्तकों, विशेषज्ञों से विचार-विमर्श, अभिभावकों और समुदाय के लोगों की सहायता से विषय पर एक छोटा शोध कार्य किया जा चुका हो।
- प्रसंग और विषय का एक प्रारूप अस्थायी रूप से निर्धारित किया जा चुका हो। (विचारों में ये परिवर्तन और सुधार सरलीकर्ता द्वारा दिये गये स्थान के कारण सृजनात्मकता को सुधार देता है।)
- दृश्यों को नियोजित किया जा चुका हो।

टिप्पणी

- संगीत नया सृजित किया गया हो, यदि इनको पूर्व संघटित या अभिलेखित किया गया हो तो इनका चयन बुद्धिमानी से किया जाना चाहिए। यदि सजीव संगीत की कसौटी है तो इसका सृजन और योजना एक संगीतकार के द्वारा किया जाये।
- वस्त्रों, आभूषणों के प्रकारों का निर्धारण किया जा चुका हो। (विद्यालय में यदि आभूषण या वस्त्र बच्चों द्वारा एक कार्यशाला में निर्मित हों तो ये अत्यन्त लाभदायक है और अनुभव आनंदयोग्य, स्मरणीय और सृजनात्मक हो जाता है।)
- स्थान अवलोकित किया जा चुका हो और बच्चों की सहायता से इसका सर्वोत्तम उपयोग किया जा सकता है।
- मंच शिल्प, पृष्ठपठ, प्रकाश (यदि संभव हो), ध्वनि प्रणाली आदि भी संघटित की जा चुकी हो। कला अनुभूति के लिए इस प्रकार की योजना विद्यार्थियों को योजना में वास्तविकता और फंतासी को जोड़ने में, उनके पर्यावरण को जांचने में, विविध मीडिया और सामग्रियों में उनके अवलोकनों के परिणाम को व्यक्त करने में प्रोत्साहित करता है।

कला गतिविधियों को करने में निम्नलिखित विषयों को विचारित किया जा सकता है:–

- एक सूचना पट्ट तैयार करो और विशिष्ट प्रसंगों पर समाचार पत्रों के संबंधित अनुच्छेदों की कतरन, कहानियां, कविता, आत्मकथा आदि को चिपकाओ और इसे अपने तरीके से सजाओ।
- 'पृथ्वी दिवस' मनाओ। पृथ्वी की जरूरतों के बारे में बच्चों को पढ़ने को कहों। पृथ्वी की जरूरतों के बारे में वे जो सोचते हैं उनकी तस्वीर बना सकते हैं या रंग सकते है। अपने विचारों को रखने के लिए वे स्लोगन लिख सकते हैं।
- बच्चों को स्वयं का एक चित्र बनाने की स्वीकृति दें और उन्हें इन पर कुछ शब्द लिखने को कहें। तस्वीर प्रतिदिन कुछ शब्दों से अपने आप को परिवर्तित कर लेती है। पूछने पर वे अपने लिए भविष्य की योजनाओं को उद्घाटित करेंगे। कुछ प्रेरक शब्द एक अच्छे भविष्य के बारे में उनकी सहायता कर सकते है।
- कागज से मुखौटे बनाने एवं पहनने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। रोल प्ले के लिए उन मुखौटों का प्रयोग करने में कक्षा को स्वीकृति दें।
- बच्चे छपाई के लिए पत्तियों को रगड़कर एक सुन्दर डिजाइन सृजित कर सकते हैं–एक मजेदार शिल्प गतिविधि।
- डायनासोर या जिराफ या मिकी माउस का एक समूह में एक विशाल संरचना बनायें और विद्यालय में प्रमुख स्थान पर लगायें।
- बच्चे उनकी अपनी कहानी या तस्वीर की पुस्तक सृजित कर सकते हैं।
- एक उत्सव या वार्षिकोत्सव का संगठन या योजना बनायें जहां बच्चे निष्पादन कर सकें।
- एक प्रदर्शनी का आयोजन करें जहां आप बच्चों द्वारा सृजित कला या उत्पाद का प्रदर्शन कर सकते हैं।

- आप अपने कार्टून चरित्र सृजित करें और नाम दें तथा उनका एक प्रहसन में प्रयोग करें।
- कुछ समूह बनायें और विभिन्न प्रकार की कठपुतलियां बनायें तथा एक कठपुतली शो की योजना बनायें।
- विद्यार्थियों को एक रंग को विभिन्न वस्तुओं के साथ संबद्ध करने को कहें। उस विशेष वस्तु पर रंग के प्रभाव के बारे में लिखें।

प्रगति जांच-2

1. अपनी कक्षा के लिए किन्हीं चार गतिविधियों का सुझाव दें।

   (i) .....

   (ii) .....

   (iii) .....

   (iv) .....

2. एक कला अनुभूति की योजना बनाते समय आप क्या याद रखेंगे?

   (a) .....

   (b) .....

   (c) .....

4.2.3 विद्यालय समय सारणी में कला शिक्षा का स्थान

विद्यालय समय सारणी अधिकांश उच्च विद्यालयों से संबद्ध हैं क्योंकि प्रारंभिक विद्यालयों के पास सामान्य और नमनीय संरचनायें है। इस स्तर पर समय सारणी अधिक मानवीय फैसलों को शामिल करता है। कला के लिए अलग समय रखें ये कक्षायें नियमित एवं लगातार होनी चाहिए। बहुत छोटे बच्चे प्रतिदिन कला के लिए समय दे सकेंगे क्योंकि उनका ध्यान विस्तार छोटा है, उनका अनुभव अंतिम 5 से 10 मिनट का होगा।

उद्देश्यपूर्ण और आनंददायी कला गतिविधियों के लिए समय का प्रभावी संघटन निर्णायक है। एक विशेष आवश्यक कार्य के संवेगों को बनाये रखने के क्रम में समय का कालावधि की छोटी इकाईयों में विभाजन समय की आवश्यकता पर हो सकता है। कला गति विधियों के लिए दिये गये समय की मात्रा अन्य विषय की गतिविधियों के समान होनी चाहिए। शिक्षक को वैयक्तिक और समूह कार्य दोनों में सहयोग के लिए स्वीकृति देनी चाहिए जहां बच्चे विचारों को साझा कर सकते हैं। कथ्य परक कार्य जैसे वृहद स्तर पर प्रारूपण कभी-कभी अधिक समय मांग सकते हैं और शिक्षक को अधिक व्यवस्था करना पड़ता है। अत: समय के वितरण की योजना अग्रिम में होनी चाहिए।

टिप्पणी

जब शिक्षक कला के साथ अन्य विषयों को एकीकृत करते हैं तो पाठ्यचर्या के बहुत से क्षेत्र श्रेष्ठ दृश्य और काल्पनिक प्रेरण प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक कला कक्षा के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इस प्रकार उन विशेष विषयों के लिए आवंटित समय को कला अनुभूति के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। कहानियों, कविताओं, ड्रामा, चित्रकला में ऐतिहासिक घटनाओं, पेन्टिग्स को समझाना, उस कालावधि को कला के लिए प्रयोग करना प्रत्यक्ष अवसर हैं। सुनिश्चित करने के लिए सावधानी रखनी चाहिए कि कला का उद्देश्य स्पष्टता से केंद्रित है। यदि एक कला अध्याय के उपयुक्त उद्देश्य स्पष्ट नहीं हैं तो ऐसी कला कक्षायें निरर्थक हैं।

प्रगति जांच-3

1. कौन सा कथन सही है:–

- हम कला को अन्य विषयों के साथ एकीकृत कर सकते हैं। ( )
- कला के लिए दिया गया समय अन्य विषयों से कम होना चाहिए। ( )
- एक व्यक्ति को कला के लिए आवंटित समय के प्रति सख्त होना चाहिए। ( )

4.3 सामग्री का संगठन और कला अनुभूति का स्थान

कक्षा कक्षा की सफलता के लिए प्रभावी संघटन निर्णायक है। इसलिए अग्रिम तैयारी अनिवार्य है। अध्याय की जरूरतों के लिए सूची बनाना और पर्याप्त एवं उचित प्रयोग के लिए अपेक्षित सामग्रियों को अग्रिम में जांचना उचित है। इनको अग्रिम में संघटित किया जाना चाहिए।

4.3.1 कला अनुभूति के लिए क्या सामग्रियां अपेक्षित हैं?

दृश्य कला के किसी कार्य में सृजन के लिए बच्चों को सामग्री की जरूरत है। उदाहरणार्थ–यदि चित्रकला एक सामान्य कार्य है तो सामग्री के रूप में बच्चे को कम-से-कम एक पेंसिल, एक शीट, एक अपमार्जक की जरूरत है। प्रशासनिक मुद्दों के साथ लेन-देन के बाद एक शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह न्यूनतम सामग्री की आपूर्ति में सक्षम हो।

कला गतिविधियों के लिए सामग्री, एक सेतु के नट, बोल्ट के जैसा है। एक शिक्षक ने बच्चों की जरूरत को ध्यान में रखकर सामग्री का संघटन किया।

(i) दृश्य कला के लिए

दृश्य कला में एक शिक्षक इन विकल्पों को अपना सकता है :

- चित्रकला
- पेन्टिंग
- छपाई
- अल्पना/रंगोली
- शिल्प
- कोलाज

- मिट्टी प्रतिरूपण
- कठपुतली निर्माण
- पेपर मेंसी
- कागज शिल्प
- प्रतिष्ठापन

उपर्युक्त दृश्य कला और शिल्पों के लिए अपेक्षित सामग्री :

गोंद और टेप	पेन्ट और ब्रश
मिट्टी और लोई	बालू
क्रेयन्स	किताबें
कलम, पेन्सिल, मार्कर	दृश्य, श्रव्य
कैंची और कटर	पेपर मेंसी
स्टेनसिल	मोम

समाचार पत्र और पत्रिकायें, लकड़ी की आकृतियां

एक बार आपके पास सामग्री का संग्रह हो जाता है तो आप वैसी ही वस्तु खोज लेंगे जो गतिविधियों पर निर्भर होकर अनेक प्रकार से प्राय: प्रयुक्त हो सकती है। जैसे–एक समाचार पत्र पैकिंग के साथ-साथ पेपर मैसी शिल्प में भी प्रयुक्त हो सकता है।

(ii) निष्पादन कला के लिए

हमें निष्पादन कला गतिविधियों के आयोजन के लिए महंगे वाद्ययंत्रों, वस्त्रों, आभूषणों की जरूरत नहीं है। दृश्य कला के लिए निर्मित कथ्यपरक सामग्रियां निष्पादन कला के साथ साझा की जा सकती है। दृश्य कला में सृजित मुखौटे, ताज, वस्त्र ड्रामा, रोल प्ले आदि में प्रयुक्त हो सकते हैं। उदाहरण के लिए–आकृति और स्थान की दृश्य संकल्पना नृत्य के माध्यम से वास्तविक बन जाती है। नृत्य के माध्यम से अन्वेषित प्रसंगों को दृश्य कला मीडिया के माध्यम से आगे विकसित किया जा सकता है। जबकि निष्पादन के लिए बच्चे अपने सेट, वस्त्र, मुखौटे आदि बना सकते हैं। वस्त्र निर्माण उतना ही आसान हो सकता है जितना कि रूपान्तरण, एक पुरानी टीशर्ट और पैन्ट को पिनों के द्वारा आश्चर्यजनक रूप से एक काल्पनिक परिधान में रूपान्तरित किया जा सकता हैं। शिक्षक का अपना योगदान बच्चों के आविष्कार के उत्प्रेरण के संभाव्य रास्तों को तलाशने में संगत होना चाहिए।

सामान्य रूप से उपलब्ध विभिन्न प्रकारों की सामग्री इन रूपों में प्रयुक्त हो सकती है:–

- मोतियों की माला के रूप में
- कागज के आभूषण
- सामान्य पारंपरिक साड़ी

टिप्पणी

- सामान्य रूप से बजाये जाने वाले वाद्ययंत्र
- विभिन्न पृष्ठ पट बनाने के लिए कागज
- फूलों, पत्तियों, मोम और मिट्टी से निर्मित आभूषण
- विभिन्न मुखौटे
- साज-सज्जा के लिए क्रेप पेपर
- विभिन्न उपकरणों
- विविध प्रकार की कठपुतलियां
- माइक या ध्वनि व्यवस्था
- विविध प्रकार के कपड़े

एक शिक्षक को मस्तिष्क में रखना चाहिए

- सामग्री का संग्रह गतिविधि के समय से ठीक पहले होना चाहिए। आपके आयोजन में सामग्रियां आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए।
- तीक्ष्ण वस्तुओं/सामग्रियों से बचें। सामग्री बच्चों के लिए सुरक्षित होनी चाहिए।
- बच्चों को सामग्रियों को लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, दबाव नहीं डालना चाहिए।
- कक्षा में जादू की टोकरी या बॉक्स सृजित करें जहां बच्चों द्वारा संग्रहित सामग्रियों को रखा जा सके।
- अभिभावकों पर बोझ डालने से बचें, सामग्रियों के लिए आग्रह करें।
- बच्चों द्वारा खरीदी गयी सामग्रियों से बचना चाहिए।
- सामग्रियों को इकट्ठा करने और गतिविधि पर कार्य करने के लिए बच्चों को समूहों में बांट देना चाहिए।
- याद रखें सामग्री पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए।
- कक्षा कक्ष में बैठने की व्यवस्था नमनीय रखें।
- बच्चों को समूहों में रखकर सामग्रियों का प्रभार दें और उनका स्थान नियमित रूप से बदलते रहे।
- सामग्री की सांस्कृतिक संदर्भ में सराहना करें।
- सामग्री विशिष्ट आयु समूह की होनी चाहिए।
- आपकी सर्वोत्तम और विश्वसनीय सामग्री हैं आप और आपके विद्यार्थियों की कल्पना।

बच्चे आपूर्तियों को संरक्षित रखने की अपनी भूमिका निभायेंगे एक बार जब वे समझ जाये कि क्यों और कैसे देखभाल की जाये। सफाई की प्रक्रिया भी पहले ही नियोजित कर लेनी चाहिए।

प्रगति जांच-4

1. निम्नलिखित सामग्रियों के साथ कला रूप को मिलायें:

सामग्री	**कला रूप**
संगीत प्रणाली	कठपुतली शो
साड़ी	कोलाज
पुरानी पत्रिकायें	रोल प्ले
माइक	पेन्टिंग
रंग और ब्रश	नृत्य

4.3.2 कला अनुभूति के लिए स्थान और सामग्री कैसे संघटित करें?

शिक्षण अधिगम अनुभूति के संघटन के लिए एक शिक्षक में उत्साह, दृढ़ संकल्प, वैयक्तिक ऊर्जा, समृद्ध सौन्दर्यात्मक समझ, उपकरणों की विस्तृत श्रृंखला, बेहतर कल्पनाशीलता और अच्छा संप्रेषण कौशल जरूरी है। यह शिक्षक की संवेदनशीलता पर निर्भर करता है कि कितनी अच्छी तरह से वह विद्यार्थी की जरूरत का प्रबंध करता है।

(i) दृश्य कला के लिए

सामग्री

बच्चों, अभिभावकों, विद्यालय और समुदाय को शामिल करते हुए दृश्य कला के लिए उपर्युक्त सामग्री का संघटन करना एक परामर्शी और सहयोगी प्रक्रिया है। रूचि और उत्साह बनाये रखने के लिए सामग्री और उपकरणों का एक नियमित और पर्याप्त आपूर्ति अनिवार्य है। सभी संभव संसाधनों के बारे में सोचना भी महत्त्वपूर्ण है। सामग्री दो स्तर की होनी चाहिए:

- शिक्षक/विद्यालय द्वारा प्रदत्त
- बच्चों/समुदाय द्वारा व्यवस्थित

शिक्षक बच्चों, प्रधानाचार्य और अभिभावकों के बीच अच्छा संवाद सामान्य उद्देश्य को विकसित करने और सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायक होगी। यहां शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। उसे सामग्री को निम्नलिखित से संघटित करना चाहिए:

1. **बच्चे :** कला गतिविधियों की योजना करते समय शिक्षक विद्यार्थियों को उनके पड़ोस से सामग्री संचित करने के लिए शामिल कर सकता है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध, कम या बिना लागत वाले सामग्री के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बच्चों को सामान्य

टिप्पणी

रूप से उपलब्ध सामग्री के उदाहरण है: खाली कार्ड बोर्ड के डब्बे, खाली बोतल, सूखी पत्तियां और फूल, स्फटिक, प्रयुक्त पुस्तकें, पत्रिकायें, वृक्ष की छोटी शाखायें, गुब्बारे, सिक्के, तस्वीर आदि।

2. **अभिभावकों :** अभिभावक कुछ वस्तुओं और सामग्रियों को देकर कला के कार्यान्वयन में सहायता प्रदान कर सकते हैं। बच्चों की हर संभव सहायता में उनकी सक्रिय रूचि की सार्थक भूमिका है। घर से जो सामग्रियां संग्रहित की जा सकती हैं वे हैं–पुराने कपड़े, बचे हुए ऊन, पुराने कैलेण्डर, पेपर प्लेट, थर्मोकोल ग्लास, पैकिंग सामग्री, पुराने मोजे, आइसक्रीम कप, और प्रयुक्त CD आदि।

3. **संग्रहालय एवं गैलरियां :** शिक्षक अपने संग्रहों के लिए प्रसिद्ध गैलरियों से संपर्क कर सकते है। कुछ संग्रहालयों और गैलरियों जैसे राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय गैलरी के पास पोस्टकार्ड, पोस्टर, कैलेन्डर और चयनित उत्पाद हैं। शिक्षक और प्रधानाचार्य अपने शहर एवं राज्य के संग्रहालयों एवं गैलरियों से संपर्क कर सकते हैं और कक्षा के बच्चों के लिए कुछ सामग्रियों की आपूर्ति के लिए कह सकते हैं।

4. **समुदाय :** विभिन्न कलाओं के पारंपरिक अधिगम के लिए विभिन्न समुदाय की कला और विद्यालय की कला के बीच एक संबंध बनाया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ–पेन्टर, कुम्हार, संगतराश, संगीतात्मक वाद्य निर्माणकर्ता, बढ़ई, जुलाहा, शिल्पकार, टोकरी निर्माता, छपाई करने वालों का अपेक्षित सामग्रियां और कौशल प्रदान कर बच्चों के साथ संयोजन किया जा सकता है। कुशल शिल्पकारिता प्रदान करने में विभिन्न व्यावसायिक कौशल एक विशाल संसाधन हैं।

5. **टेलीविजन और वीडियो :** कलाकारों के कार्यक्रमों को समय-समय पर टेलीविजन पर दिखाया जाता है और कुछ वीडियो पर उपलब्ध हैं। इन वीडियो कार्यक्रमों से बहुत से विचारों को समाविष्ट किया जा सकता है। कुछ विशेष तकनीकों से सम्बद्ध कार्यक्रम भी बच्चों के लिए लाभदायक हैं।

स्थान

जितना संभव हो बच्चों को आरामदेह स्थान में कार्य करना चाहिए। गति संचालन को सुसाध्य बनाने के लिए, और बच्चों को उनके कार्यों को विभिन्न कोणों से देखने में समर्थ बनाने और कार्य के लिए पर्याप्त सतह प्रदान करने के लिए भी फर्नीचर को व्यवस्थित किया जाना चाहिए। सामग्रियों के लिए उपागमन आसान होना चाहिए। बच्चों के लिए बाहर कार्य करने के समय पर यह एक साध्य होना चाहिए। गतिविधियां जो कि विद्यालय पर्यावरण का उपयोग करती हैं और प्रत्येक बच्चे के योगदान को स्वीकार करती हैं। (उदाहरणार्थ भिति चित्र पेन्ट करना) एक बच्चे की कला के क्षैतिज अनुभव का कक्षा कक्ष की सीमा के बाहर विस्तार करता है।

स्थान की साफ-सफाई सुनिश्चित करने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए। कुछ पहलुओं को अत्यधिक सावधानी की जरूरत है जैसे जब गतिविधि की जा रही हो पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिए और कमरा पूर्ण हवादार होना चाहिए। भौतिक पर्यावरण जीवन्त और दृश्यात्मक रूप

टिप्पणी

से प्रेरित करने वाला होना चाहिए और बच्चों को कला में अधिगम को विकसित करने में सहायक होना चाहिए।

निष्पादन कला के लिए

सामग्री

बच्चों को उनके अपने उपकरणों और अपेक्षित सामग्रियों को सृजित करने में प्रोत्साहित कर, अधिगम प्रक्रिया के रूप में शिक्षक संगीत और नृत्य गतिविधि को अत्यधिक जीवन्त, मनोरंजक, सार्थक और हितकर बना सकता है। बच्चे फूलों, पत्तियों और पंखों का प्रयोग कर आभूषण बना सकते हैं। इयर रिंग बनाने के लिए छोटी चूड़ियां प्रयुक्त की जा सकती है। सुन्दर और सस्ते आभूषण बनाने के लिए कार्डबोर्ड, ग्लेज पेपर, ग्लीटर और बटनों का भी प्रयोग किया जा सकता है। वस्त्र और आभूषण के लिए प्रत्येक क्षेत्र में असंख्य कलाकार और शिल्पकार हैं जिन्हें पहचाना जा सकता है, और उपर्युक्त कौशलों के अधिगम के लिए उपयुक्त दिशा निर्देश लिया जा सकता है।

उपकरणों को बहुस्तरीय उपयोग के लिए रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए मस्तक के ऊपर लहराता एक दुपट्टा हवा का संकेत कर सकती है, चेहरे के चारों ओर खींचा हुआ यह एक घुंघट का संकेत कर सकता है (एक औरत का परदा), दोनों छोरे से खींचा हुआ दुपट्टा एक रस्सी का संकेत करता है। आपकी हथेलियों में पकड़ा हुआ दुपट्टा एक बच्चे का संकेत करता है।

संगीतात्मक वाद्ययंत्र छोटे बच्चों को मोहित करते हैं। ब्लॉक, चम्मचों, पत्थरों, बरतनों, केन या अन्य वस्तुओं के प्रयोग द्वारा बच्चों को उनके अपने वाद्ययंत्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त हाथों की ताली, मेंजों पर थपकी भी सरगम के लिए प्रयुक्त की जा सकती है। गिटार का निर्माण एक जूते के बाक्स, कुछ रबर के छल्ले और एक लकड़ी के टुकड़े की सहायता से किया जा सकता है। पानी के विभिन्न मात्राओं से भरे आठ गिलासों से जल तरंग बनाया जा सकता है।

स्थान

कक्षा-कक्षों या अन्य स्थानों जहाँ पृथक हॉल उपलब्ध नहीं है को संघटित करें, कुछ खाली स्थान सृजित करने के लिए डेस्कों और कुर्सियों को पुनर्व्यवस्थित करते हैं। बच्चों को अपने जूतों को हटाना चाहिए और उन्हें एक उचित पंक्ति में बाहर रखना चाहिए। उन्हें वृत्ताकार स्थिति में या जैसे शिक्षक चाहें बैठना चाहिए।

वास्तव में हम किसी भी स्थान एक छत या छज्जे को मंच में बदल सकते हैं। यदि हम प्रस्तुति की योजना बना रहे हैं तो दर्शकों के बैठने की व्यवस्था के लिए किसी भी स्थान का बुद्धिमत्ता से उपयोग कर सकते है। कई बार विद्यालय भवन का एक भाग नाटक के लिए बैठने की अच्छी सेवा दे सकते हैं जैसे, सीढ़ियां, गलियारा, खम्भों वाला बरामदा और वृक्षों वाली जगह या

टिप्पणी

पृष्ठभूमि में एक दीवार आदि आश्चर्यजनक रूप से मंच व्यवस्था के लिए उपयुक्त हैं। कक्षाकक्ष में एक कार्यरत बिजली का पावर प्वाइंट होना चाहिए। यह टेप रिकार्डर/कम्प्यूटर (जो भी उपलब्ध है) के उपयोग को समर्थ बनायेगा। आओ उस संगीत को सुनें या नृत्य/रंगमंच की कुछ CD देखें।

जब मौसम सुहाना हो आप कला गतिविधि का आयोजन विद्यालय के मैदान में भी कर सकते है। बाहर होने वाले सत्र में आप वृक्षों और फूलों का गतिविधि के पृष्ठपट के रूप में उपयोग कर उनका फायदा उठा सकते हैं। बच्चे प्रकृति में पाये जाने वाले संगीत, नृत्य और रंगमंच के तत्वों का भी अनुकरण कर सकते हैं। नीले आसमान के छत के नीचे की जाने वाली गतिविधि यां बच्चे की सहभागिता को खुशनुमा बनाती है।

यदि हमारे पास प्रेक्षागृह है तो हम प्रत्येक समय नवीनता से इसका उपयोग करने की सोच सकते हैं। एक नाटक या सांस्कृतिक कार्यक्रम के एक भाग को मंच पर और दूसरे भाग को विद्यालय की किसी संरचना में मंचित करना भी चीजों को आकर्षक और उत्तेजक बना सकता है।

प्रगति जांच-5

1. आप अपनी शिल्प कक्षा के लिए सामग्री की व्यवस्था कहां से करते हैं?
   - समुदाय
   - दुकानों
   - मॉल
2. मंच बनाने के लिए विद्यालय के किस स्थान को उपयोग में लाया जा सकता है?

   .....

   .....

   .....
3. कुम्हारों का समुदाय बच्चे की शिक्षा में कैसे योगदान दे सकता है?

   .....

   .....

   .....

4.3.3 सामग्री का भंडारण और रखरखाव

सामग्री का संघटन और भंडारण बिना अधिक कोष और प्रयास के एक सामान्य और आसान तरीके से किया जा सकता है। सामग्री के रखरखाव में बच्चे शिक्षक की सहायता प्राप्त कर सकते हैं। वह बच्चों को प्रभारी बना सकते हैं और नियमित अंतराल पर प्रभारियों को बदल सकते हैं। बच्चों में उत्तरदायित्व की समझ हो जाती है। वे देखभाल में दक्ष और संवेदी है।

विभिन्न वस्तुओं को रखने के लिए तश्तरियां या पुरानी टोकरियां या जूते के डब्बे अच्छे कन्टेनर हैं। शिक्षक विभिन्न प्रकार की सामग्रियों को एक बड़े बक्से या कन्टेनर में रख सकते हैं और इसे एक 'जादू का बाक्स' कह सकते हैं। समय-समय पर नई सामग्रियां जोड़ी जा सकती हैं अत: बच्चे उत्सुक रहते हैं कि आज बॉक्स में क्या नया आयेगा।

कला की सामग्रियों का रखरखाव भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस उद्देश्य के लिए एक शिक्षक सामग्री का प्रदर्शन कक्षा के अंदर और बाहर कर सकते हैं जैसे–प्रदर्शन बोर्ड, दीवालों, बरामदों, खम्भों आदि पर। इस तरह आप बच्चों में कला के प्रति सम्मान बढ़ा सकते हैं और सहपाठियों के मूल्यांकन का लाभ भी पा सकते है। उत्पादित वस्तुओं के रखरखाव का दूसरा तरीका है 'बच्चों का कोना' या 'कक्षा संग्रहालय' का सृजन।

4.4 प्रारंभिक स्तर पर कला अनुभूति का संघटन और सरलीकरण

पिकासो ने लिखा था ''प्रत्येक बच्चा एक कलाकार है।'' एक शिक्षक के रूप में यह एक अध्यापक का उत्तरदायित्व है कि एक बार जब वे विकास कर जाये तो उन्हें एक कलाकार ही रहने दें। कला एक रूचिकर तरीका है जिसके माध्यम से हम बच्चे की वृद्धि के विकास को अंकित कर सकते हैं। बच्चों के लिए कला एक शक्तिशाली उपकरण है क्योंकि वे लिख या पढ़ सके उससे पहले यह उन्हें उनके विचारों और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने की योग्यता देता है। एक कला कार्य का मूल्य प्राय: हजार शब्दों जितना होता है। बहुत से भिन्न तरीके हैं जिससे एक शिक्षक कला अनुभूति को सुसाध्य बना सकता है। कला गतिविधि के संघटन में अंतर्विष्ट हैं:

- एक लक्ष्य जो अधिगम को सम्मिलित करता है जिसे प्रत्येक कला रूप के लिए लागू किया जाता है।
- दृश्य कला, संगीत, नाटक, नृत्य प्रत्येक में क्षेत्र विस्तार।

4.4.1 कला शिक्षा में सरलीकरण क्या है?

सरलीकरण शब्द मोटे तौर पर किसी गतिविधि की व्याख्या करने के लिए प्रयुक्त होता है जो दूसरों के लिए कार्यों को आसान बनाता है और एक व्यक्ति जो यह भूमिका करता है वह सरलीकर्त्ता कहलाता है। सरलीकरण शिक्षण की एक कला है:

- स्व अभिव्यक्ति के लिए विश्वास प्रदान करना
- संगीतात्मक वाद्ययंत्रों की सुरक्षा के लिए सावधानी के साथ रख-रखाव के लिए मुक्त रास्ता देकर बच्चों की सहायता करना। टेप रिकार्डर, CDs, किसी संगीतात्मक वाद्ययंत्र आदि के प्रति उन्हें उत्तरदायी बनाने में।
- नवीन सामग्री को चुनने और ग्रहण करने में बच्चे की सहायता के लिए बहुत सी सामग्री उपलब्ध कराना।

टिप्पणी

- इससे पहले कि वे कपड़ों या हाथों को गन्दा करें उन्हें कपड़ों और पर्यावरण को स्वच्छ रखने के तरीकों के बारे में जागरूक करना।
- पास के पर्यावरण में स्थित वस्तुओं के माध्यम से बच्चे को एक संकल्पना के नजदीक लाना।
- बच्चा गतिविधि को पूर्ण करे उसके लिए प्रयास करना।
- विविध विचारों को सुनने के द्वारा बच्चे को सोचने के लिए प्रेरित करना।
- बच्चे को संसाधनों जैसे पुस्तकें, बेवसाइट, CDs, सांस्कृतिक सम्मेलनों आदि से जोड़ना।
- बच्चे को सभी गतिविधियों में शामिल करना–कक्षा कक्ष का संघटन, सफाई की चेतना, डेस्को और कुर्सियों का संघटन, विद्यालय और कक्षा दोनों से संबंधित समझ।

संकल्पना, कौशल और मनोवृत्ति के विकास लिए शिक्षक द्वारा व्यवस्थित सरलीकरण उनके लिए एक चुनौती होगी। शिक्षक सामग्रियों और स्थान की उपलब्धता के साथ ही साथ कुछ बच्चों की विशेष जरूरतों के प्रति जागरूक होंगे। सरलीकरण के लिए कला करने के अवसरों, परावर्तन और जवाब के बीच संतुलन रखना चाहिए।

प्रगति जांच-6

1. दो तरीके लिखें जिन्हें आप कला सामग्री के रखरखाव के लिए प्रयुक्त करना चाहेंगे।

   .....

   .....

   .....

2. 'सरलीकरण' का अपने शब्दों में वर्णन करें।

   .....

   .....

   .....

4.4.2 सरलीकरण की प्रक्रिया

बच्चों को जब और जहां जरूरी है, अपेक्षित सामग्री और स्थान उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व एक सरलीकर्ता के रूप में आपका है। गतिविधि के प्रभावी आयोजन के संबंध में आपको सरलीकरण की प्रक्रिया की जानकारी अपेक्षित है।

उदाहरण–एक शिक्षक को मस्तिष्क में रखना चाहिए:

- कक्षा कक्ष में 'जादू का पिटारा' जैसा बाक्स रखें। इसे विविध उपकरणों और सामग्रियों, क्रेयन्स, मार्कर, पेस्टल, जल रंग, गोंद, कागज और पेन्सिल से भरे।

- एक साथ गायें। बच्चों को उनके पसंदीदा गीत गाने की स्वीकृति दें इसके बाद उनका अन्वेषण करें।
- विद्यालय के बाद कला कार्यक्रमों का आनंद लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें, सप्ताहांत छुट्टियों के दौरान बहुत से समुदाय के पार्क और मनोरंजन केंद्र इन्हें उपलब्ध कराते हैं।
- मैदानों का दौरा आयोजित करें ताकि बच्चे वास्तविक संसार की संकल्पना की अनुभूति कर सकें।
- अपनी कक्षा को CDs, संगीतात्मक वाद्ययंत्रों, TV या कम्प्यूटर से समृद्ध करें।
- उचित स्थान जिसमें गतिविधि की जाये।
- गीतों, कविताओं, कहानियों का एक विस्तृत संग्रह जिन्हें, गायन, नृत्य या अभिनय के लिए प्रयुक्त किया जा सके।
- गीत, नृत्य, रंगमंच कक्षाकक्ष विषयों जैसे प्रकृति, आकार, संतुलन या माप पर आधारित हो सकते हैं।
- प्रस्तुती में प्रयोग के लिए सामान्य संगीतात्मक वाद्ययंत्र (जो बच्चों द्वारा स्थानीय सामग्रियों से सृजित किया गया हो), अन्य वस्तुएं जैसे दुपट्टा, छड़ी, स्फटिक और रंगा हुआ पृष्ठ पट आदि हो।
- बच्चे द्वारा पूछे जा सकने वाले किसी प्रश्न का जवाब देने में सक्षम होने के लिए विषय का पर्याप्त अध्ययन।
- वीडियो क्लिपों के अध्ययन के लिए कम्प्यूटर या प्रोजेक्टर का पहले से संघटन।
- कक्षा में प्रयोग करने से पहले वीडियो क्लिप को छांट लें।

नुसखे में सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है आपकी रूचि। प्रक्रिया के प्रत्येक कदम के दौरान उन्हें सम्मानित और प्रोत्साहित करें।

प्रगति जांच-7

1. कला गतिविधि के लिए बच्चे का सरलीकरण करने में एक शिक्षक को किन बातों को मस्तिष्क में रखना चाहिए? किन्हीं चार का वर्णन करो।

   .....

   .....

   .....

4.5 सारांश

इस अध्याय में आपने कला अनुभूति के अर्थ और सार्थकता के बारे में सीखा। आगे आपने

टिप्पणी

योजना के बारे में सीखा क्योंकि एक नियोजित उपागम ही इच्छित परिणाम को प्राप्त कर सकता है। बेतरतीब उपागम प्रणाली और प्रक्रिया को अवरूद्ध कर देंगे। योजना प्रत्येक निष्पादन को श्रेष्ठ बना देती है। जबकि वास्तविक चुनौती गतिविधि के प्रारंभ और फिर इसके क्रियान्वयन के साथ शुरू होती है। यहां एक शिक्षक को कला के लिए सामग्री, स्थान और समय को संघटित करना है। इन तीनों के संघटन से एक शिक्षक कला अनुभूति में बच्चों को प्रेरित कर सकता है। एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह विद्यार्थियों की रूचि बनाये रखे और व्यवहारिक समस्याओं से लड़ने के लिए उन्हें प्रेरित और उत्प्रेरित करें। उपर्युक्त अध्याय में सरलीकरण की प्रक्रिया के बारे में वर्णित किया गया है। अब आप कला कक्षा में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी के लिए आसानी से एक आराम देह खुला और प्रेरक पर्यावरण सृजित कर सकते हैं।

4.6 प्रगति जांच के उत्तर

प्रगति जांच-1

1. कला अनुभूति एक प्रक्रिया है जो कला कार्य को करने के दौरान आती है और बच्चा उन्हें व्यक्त कर सकता है और अपनी अनुभूति को पूर्ण कर सकता है तथा कला के माध्यम से लड़ सकता है।

2. कला अनुभूति के लिए अवसर देने में यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से बच्चा कुछ नया सृजित कर सकता है और जो विचारों और सामग्रियों के बीच एक संग्रह हो सकता है।

3. विद्यार्थी कला अनुभूति के स्तरों का वर्णन करें। जिसे वे आयोजित करना चाहते हैं।

प्रगति जांच-2

1. किन्हीं चार गतिविधियों का सुझाव दें जिन्हें आप पसंद करते हैं।

2. (a) आवंटित समय
   (b) उपलब्ध स्थान
   (c) कक्षा के बच्चों का स्तर

प्रगति जांच-3

1. हम कला को अन्य विषयों के साथ एकीकृत कर सकते हैं।

प्रगति जांच-4

1. सामग्री – कला रूप
   संगीत प्रणाली – नृत्य

साड़ी	–	रोल प्ले
पुरानी पत्रिका	–	कोलाज निर्माण
माइक	–	कठपुतली शो
ब्रश	–	पेन्टिंग

प्रगति जांच-5

1. दुकान
2. कक्षाकक्ष, एक सतह या एक गैलरी, सीढ़ी, गलियारा, खम्भों के साथ बरामदा-मंच व्यवस्था के लिए आश्चर्यजनक रूप से उपर्युक्त हैं।
3. कुम्हार समुदाय अपेक्षित सामग्रियां और कौशल प्रदान कर बच्चों की शिक्षा में योगदान दे सकते हैं। कुशल शिल्पकार उपलब्ध कराने में विभिन्न व्यावसायिक कौशल एक विशाल संसाधन हैं।

प्रगति जांच-6

1. (i) विभिन्न वस्तुओं को रखने के लिए तश्तरियां, या पुरानी टोकरी या जूते के डब्बे अच्छे कन्टेनर हैं।

   (ii) प्रदर्शन बोर्ड, दीवालें, बरामदे, खम्भे आदि।

2. दिये गये कार्य को आसानी से करने में दूसरों की सहायता का एक तरीका है सरलीकरण। यह एक कौशल है जिससे एक शिक्षक बच्चे के निष्पादन को सुधार सकता है।

प्रगति जांच-7

1. 4.4 से कोई चार उदाहरण उप-शीर्षक ''सरलीकरण की प्रक्रिया''

4.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- भारत में समकालीन कला-एक परिप्रेक्ष्य-प्राणनाथ मागो नेशनल बुक ट्रस्ट
- कला: शिक्षा का आधार – देवी प्रसाद (1988)
- शिक्षा का वाहन: कला-(हिन्दी) देवी प्रसाद (1999)
- कम लागत/बिना लागत के शिक्षण उपकरण- मैरी अन्न दास गुप्ता (2004)
- शिक्षा और पेन्टिंग का दर्शन: रवीन्द्रनाथ टैगोर- देवी प्रसाद (2000)
- भारत में निष्पादन परंपरा- सुरेश अवस्थी (2006)
- मेरी स्मृतियां- रबीन्द्र नाथ टैगोर (1917)

टिप्पणी

- बाल रंग- बच्चों का रंगमंच-सिद्धांत और व्यवहार–रेखा जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (2006)
- वास्तविकता के लिए मंचन: कक्षाकक्षा में ड्रामा का प्रयोग–शिक्षक पुस्तिका–बैरी जॉन, कैथी योगिन, रंजन चावला, मैकमिलन नई दिल्ली, (2007)
- रंगमंच - NSD द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र

4.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. कला गतिविधि की योजना के 4 चरण लिखें।
2. संघटन और सरलीकरण के अर्थ और अभिप्राय की व्याख्या करें।
3. नृत्य निष्पादन के लिए सामग्री का संघटन करते समय एक शिक्षक को दिमाग में क्या रखना चाहिए?
4. दीवाली उत्सव के लिए स्थान का आयोजन कैसे करेंगे जबकि आपके विद्यालय में प्रेक्षागृह नहीं है?
5. कला गतिविधि का सरलीकरण करते समय आप किन पहलुओं को ध्यान में रखेंगे?

टिप्पणी

इकाई-5 कला शिक्षा में मूल्यांकन

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 अधिगम उद्देश्य

5.2 कला शिक्षा में मूल्यांकन

5.2.1 कला शिक्षा में मूल्यांकन का अभिप्राय

5.2.2 कला को कैसे मूल्यांकित करें?

5.2.3 कला का मूल्यांकन करते समय क्या याद रखें?

5.2.4 मूल्यांकन को कैसे संचारित करें?

5.3 कला में मूल्यांकन के विविध उपकरणों और तकनीकों को समझ

5.3.1 उपकरणों और तकनीकों का अर्थ

5.3.2 विविध उपकरण और तकनीकें

5.3.2.1 अवलोकन सूची

5.3.2.2 प्रोजेक्ट

5.3.2.3 पोर्टफोलियो

5.3.2.4 जांच सूची

5.3.2.5 श्रेणी पैमाना

5.3.2.6 उपाख्यानमूलक रिकार्ड

5.3.2.7 प्रदर्शन

5.4 मूल्यांकन के सूचक

5.4.1 कला में मूल्यांकन के सूचकों का अर्थ

5.4.2 दृश्य कला और निष्पादन कला दोनों में मूल्यांकन के सूचक

5.5 पोर्टफोलियो का निर्माण (प्रायोगिक)

5.5.1 पोर्टफोलियो का अभिप्राय

5.5.2 पोर्टफोलियो का रखरखाव

5.5.3 मूल्यांकन के लिए एक पोर्टफोलियों का कैसे उपयोग करें?

टिप्पणी

5.6 सारांश

5.7 प्रगति जांच के उत्तर

5.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

5.0 प्रस्तावना

हम सभी इस तथ्य से परिचित है कि कला गतिविधि के संघटन और सरलीकरण के साथ एक शिक्षक की भूमिका सिर्फ पूर्ण नहीं है। मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। शिक्षकों को इस पर गंभीर ध्यान देना चाहिए। जैसा कि हम अनुभव करते हैं कि कला के महत्त्व की उपेक्षा हम अधिक समय तक नहीं कर सकते और जबकि बच्चे के विकास में सहायता के लिए कला में मूल्यांकन प्रक्रिया अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इस इकाई में मूल्यांकन की विविध विधियों को समझने का एक प्रयास किया गया है ताकि आप विविध परिस्थितियों से एक उपर्युक्त विधि चुन सकें। किसी गतिविधि के दौरान या उसके बाद आप समझने में सक्षम होंगे कि कला के उत्पाद के साथ-साथ प्रक्रिया को आप कब और कैसे मूल्यांकित कर सकते हैं। इससे गुजरने के बाद आप आसानी से अपने बच्चों का व्यक्तिगत पोर्टफोलियो बना सकते हैं। यह अध्याय मूल्यांकन के विविध उपकरणों और तकनीकों के बारे में भी बताता है।

5.1 अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के पश्चात् आप समक्ष होंगे:

- कला शिक्षा के अभिप्राय और बच्चों पर इसके प्रभाव को समझने में।
- बच्चों के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझने में।
- मूल्यांकन की उचित प्रक्रिया की व्याख्या करने और मूल्यांकन के विविध उपकरणों और तकनीकों की सूची बनाने में।
- दो प्रकार के उपकरणों के बीच अन्तर करने में।
- बच्चों और अभिभावकों को प्रति पुष्टि संचारित करने में।

5.2 कला शिक्षा में मूल्यांकन

कला शिक्षा में मूल्यांकन विविध क्षेत्रों में बच्चों की प्रगति को पहचानने का आश्वासन देता है और उन क्षेत्रों को चिह्नित करता है जिनमें आगे अधिगम की आवश्यकता है। प्रारंभिक स्तर

टिप्पणी

पर शिक्षक को श्रेष्ठ कौशलों और किसी कला रूप के ज्ञान पर केंद्रित करने की जरूरत नहीं है। बच्चों से आशा की जाती है कि वे अपनी क्षमता और सोच के अनुसार अपने को अभिव्यक्त करें। उन्हें कल्पना करने, अन्वेषण करने और प्रवर्तित करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए और फिर अभिव्यक्त करना चाहिए।

कोई भी मूल्यांकन को इस परिप्रेक्ष्य में देखता है:

- वैयक्तिक सृजनात्मकता
- अभिव्यक्ति और अनुभूति जो कि यह हमें सम्प्रेषित करता है।
- कला कार्य के पीछे बच्चों की दृढ़ता
- कि गतिविधि का उद्देश्य उसके लक्ष्य को प्राप्त चुका है।
- किस पैमाना से
- क्या गतिविधि बच्चे की चिन्तन में कोई अंतर ले आयी?
- कला कार्य कैसे एक बच्चे की जरूरत को पूर्ण करती है?
- वह कैसे कार्य की गुणवत्ता को सुधार सकता है?

5.2.1 कला शिक्षा में मूल्यांकन का अभिप्राय

मूल्यांकन एक बच्चे के कार्य की योग्यता या मूल्य का व्यवस्थित निर्धारण है। प्रत्येक चीज जो बच्चा सोचता है, जरूरतों को अभिव्यक्त करता है को मूल्यांकित किया जाता है। यह विस्तार का पता लगाने की प्रक्रिया है जिसका इच्छित परिवर्तनों ने स्थान ले लिया है। यह शिक्षण अधि गम प्रक्रिया का एक भाग और समूह है। Vygotsky के अनुसार एक शिक्षक का कार्य बच्चे को उसके 'वर्तमान स्तर' से 'सम्भाव्य स्तर' तक लाना है। बच्चों का आवर्ती मूल्यांकन विद्यार्थियों को कला गतिविधियों से प्राप्त हो रहे लाभों का निर्धारण करने में महत्त्वपूर्ण है। एक गतिविधि के समापन पर एक शिक्षक को प्रतिपुष्टि प्राप्त करने की जरूरत है। यद्यपि मूल्यांकन का उद्देश्य हैं:

एक समयान्तराल में बच्चे ने जो प्रगति किया है उसका पता लगाना जैसे–

- एक विशिष्ट विषय का ज्ञान
- दृश्य/निष्पादन कला का सृजनात्मक अनुभव
- किसी की संकल्पनाओं के बोध की सृजनात्मक अभिव्यक्ति
- बच्चे के व्यक्तित्व में आये परिवर्तनों का मूल्यांकन
- एक बच्चे से संबंधित वैयक्तिक और विशेष जरूरतों और आवश्यकताओं का पता लगाना।
- बच्चों को उनकी अंत शक्ति बाहर निकालने में उन्हें समर्थन देना और सुधारना।

टिप्पणी

- बच्चों को उनकी सृजनस्मकता विकसित करने में सहायता देने के लिए उपर्युक्त वातावरण उपलब्ध कराना।
- बच्चों को उनकी उपलब्धियों की सराहना कर आत्म-विश्वास बढ़ाना और उसको उनके अभिभावकों को प्रेषित करना।
- अधिक उपयुक्त तरीके से अधिगम स्थितियों की योजना बनाना।
- बच्चे को उसके सामाजिक और संवेदनात्मक व्यवहार उनकी मनोवृति और मूल्यों के संदर्भ में समझना।

प्रगति जांच-1

1. कला के मूल्यांकन के उद्देश्यों की व्याख्या करें।

   .....

   .....

   .....

2. शिक्षण योजना और शिक्षण विधि में मूल्यांकन कैसे सहायता करता है? किसी उदाहरण से व्याख्यायित करें।

   .....

   .....

   .....

5.2.2 कला को कैसे मूल्यांकित करें:

मूल्यांकन के दो पहलू हैं :

- स्व मूल्यांकन
- विद्यार्थी द्वारा मूल्यांकन

स्व मूल्यांकन

कला शिक्षा में शिक्षकों को उनके सामर्थ्य का मूल्यांकन करना चाहिए और सुधार के क्षेत्रों को पहचानना चाहिए। वे अपने आप से इन प्रश्नों को पूछ सकते हैं :

- मैं अपने बच्चों के साथ किस सीमा तक परिचित हूं?
- मैं अपने विद्यार्थियों का कितना अवलोकन कर रहा हूं?
- मैंने कैसे एक कला गतिविधि की योजना और संघटन किया?

- मेरे द्वारा प्रदत्त अनुभव के परिणामस्वरूप बच्चे का अधिगम किस सीमा तक प्रोत्साहित हुआ?
- अधिगम और अन्वेषण के लिए मैंने कितने अवसरों को निगमित किया?

एक शिक्षक कार्यशालाओं, सेमिनारों में शामिल होकर तथा अन्य बेहतर शिक्षकों के साथ दायरा विकसित कर अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास कर सकता है।

यह जानने की जरूरत है कि कला अनुभूति बच्चे की जरूरत में योगदान दे रही है या नहीं। यह मूलयांकन कला गतिविधि की पसंद और इसके प्रभाविता के बारे में एक फैसला करने को शामिल करता है। इस मूल्यांकन का कारण है कि आने वाले समय के लिए कुछ सुधारों की योजना हो जाये। ऐसे सुझाव विधियों, स्थान, संसाधनों या सामग्रियों को शामिल करेंगे जिन्हें शिक्षकों ने सरलीकरण के लिए अनुमानित किया है। मूल्यांकन सत्र के अंत में आयोजित नहीं किये जाने चाहिए बल्कि यह एक सतत: प्रक्रिया होनी चाहिए। जैसे यदि एक विशेष कला अनुभूति बच्चों द्वारा जैसे-जैसे ग्रहण की जाती हैं और वे इसमें भाग लेना नहीं चाहते हैं तो फिर समस्या का पता लगाया जाना चाहिए और शिक्षक को तत्काल प्रबंध करने की जरूरत होगी।

विद्यार्थी मूल्यांकन

कला का मूल्यांकन शिक्षक के अधिगम प्रक्रिया के साथ चलता है जबकि शिक्षक प्रगति का नियमित अवलोकन कर रहे हैं। कुछ आवर्तन भी अनिवार्य होना चाहिए। हम इसको दोनों तरीकों से समझ सकते हैं। मूल्यांकन सतत् एवं समग्र होना चाहिए। सतत् का अर्थ है मूल्यांकन में नियमितता। समग्र का अर्थ है सत्र के अंत पर बच्चे का अंतिम ग्रेड निर्धारण।

(i) यह आवश्यक है कि बच्चे के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण क्षेत्र जैसे मनोगति, संज्ञानात्मक, सामाजिक और प्रभावी आदि। यह पाठ्यचर्या एवं पाठ्य सहगामी दोनों की रूचियों, मनोवृत्तियों और मूल्यों को आवृत करता है।

(ii) जबकि कला के कुछ पहलुओं जैसे दृश्य-कलाओं में मूर्ति उत्पादों को शामिल किया जाता है किन्तु अधिगम के कुछ पहलु क्रिया, या व्यवहार या निष्पादन हैं जिन्हें बाद के परावर्तन और निर्धारण के लिए आसानी से पकड़ा नहीं जा सकता। निष्पादन कला में नियमित अवलोकन एवं मूल्यांकन अपेक्षित हैं।

(iii) प्रारंभिक स्तर पर उत्पाद/परिणाम की अपेक्षा प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण है। बल्कि कला करने की गतिविधि आनंद के लिए अधिक होनी चाहिए न कि निपुणता के लिए।

(iv) विद्यार्थी मूलयांकन की दो महत्त्वपूर्ण चुनौतियां हैं अवलोकन का परिक्षेत्र निश्चित करना और अभिलेख रखना। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे का पोर्टफोलियो रखना जरूरी है।

शिक्षक को सृजनात्मक समस्या समाधान के साथ बच्चे के संघर्ष, नई चीजों को करने की उनकी इच्छा और उनकी विवेचनात्मक सोच का अवलोकन करना चाहिए। कला कार्य का अंतिम उत्पाद बच्चे की अभिव्यक्ति, समक्ष और कला में विकास का सिर्फ एक आंशिक दृश्य

देगा। सतत् अवलोकन पूर्ण और संतुलित मूल्यांकन प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है। उत्पाद या कला में निष्पादन का मूल्यांकन करते समय एक शिक्षक विस्तार को निश्चित कर सकता है कि विद्यार्थी अधिगम उद्देश्य वैयक्तिक कला कार्य, पोर्टफोलियो, दृश्य श्रव्य सामग्रियों या प्रदर्शन के अवलोकन द्वारा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के साथ बहुधा अंत:क्रिया करनी चाहिए।

केस अध्ययन

शिक्षक विद्यार्थियों के व्यावहारिक पक्ष को जानना चाहता था। वह एक कला गतिविधि में संघटित थी। इसका उद्देश्य कौशलों और कला के ज्ञान का निर्णय करना नहीं था बल्कि भागीदारी, सहयोग, विवेचनात्मक सोच उसके पैमाना थे। अत: उसने मूल्यांकित किया:

- पूर्णतया कला की प्रक्रिया और बच्चे की गतिविधि के प्रत्येक उपागम को अवलोकित किया।
- उसने बच्चों द्वारा उनके सहपाठियों के साथ संबंध को अवलोकित किया।

प्रगति जांच-2

1. समग्र मूल्यांकन क्या है?

   .....

   .....

   .....

2. उपर्युक्त केस अध्ययन के बारे में आप क्या समझते है? अपने दृष्टिकोण देते हुए एक संक्षिप्त नोट लिखें।

   .....

   .....

   .....

5.2.3 कला का मूल्यांकन करते समय क्या याद रखें?

- बच्चे की कला के साथ कुछ समय दें।
- उसके कार्य के लिए कुछ सम्मान हो
- उत्सुकता दिखायें और पूछें कि वे कल गतिविधि के समय क्या अनुभव करते हैं?
- एक बच्चे की दूसरे से तुलना न करें।
- यह बच्चे की व्यक्तिगत प्रगति का मूल्यांकन है।

- जब तक मूल्यांकन प्रक्रिया पूर्ण न हो कला कार्य को संरक्षित रखें।
- विशिष्ट प्रतिपुष्टि देनी चाहिए जिस पर बच्चे को कार्य करना जरूरी है।
- कहने से पहले सोंचे, आपकी टिप्पणी बौद्धिक, लाभदायक और बच्चे की बेहतरी के लिए होनी चाहिए।
- निष्कर्ष पर तुरंत न पहुंचे।
- शिक्षक द्वारा दी गयी प्रतिपुष्टि सुस्पष्ट होनी जरूरी है ताकि बच्चा स्पष्टता से समझ ले।
- निर्णय अच्छा या बुरा के संबंध में नहीं होना चाहिए।

प्रगति जांच-3

1. मूल्यांकन करते समय किसी को क्या ध्यान रखना चाहिए?

   .....

   .....

   .....

2. कौन सा कथन सही है?
   - शिक्षक को एक बच्चे के कार्य की तुलना दूसरे से करनी चाहिए। ( )
   - शिक्षक को बच्चे की उसकी वृद्धि से तुलना करनी चाहिए। ( )

5.2.4 मूल्यांकन को कैसे संचारित करें?

- समय की एक कालावधि में बच्चे बहुत से कार्य और निष्पादन करते हैं। यदि शिक्षक सभी गतिविधियों की सूचना, साक्ष्य और अभिलेख एक उचित तरीके से रखते हैं तो वे समय-समय पर बच्चा और उसके अभिभावक को प्रतिपुष्टि सम्प्रेषित कर सकते हैं।
- शिक्षक यह प्रतिपुष्टि बच्चों को कला से संबंधित उनकी शक्तियों और कमियों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रदान करता है। कौन सा अंग है जिस पर उन्हें भविष्य में कार्य करना जरूरी है। टिप्पणियां प्रतियोगिता और इनाम की अपेक्षा बच्चों के लिए प्रेरक होनी चाहिए। इसे गुणात्मक तरीके से रिपोर्ट कार्ड में संचारित करना बेहतर होगा। सामान्य एवं सुबोध कथनों से युक्त एक परावर्तन कार्ड हो सकता है जिसमें शिक्षक का अवलोकन दिया गया हो सकता है।
- इस स्तर पर मूल्यांकन नमनीय होना चाहिए और बच्चों को मूल्यों को अवश्य अनुभव करना चाहिए क्योंकि वे अच्छी तरह सीखते हैं जब उनकी आलोचना न हो। जबकि उन

क्षेत्रों जिनमें उनके ध्यान ओर सुधार की जरूरत है की बच्चों को उपयुक्त समझ के लिए प्रतिपुष्टि का यथार्थ होना जरूरी है।

- प्रत्येक 3-4 महीने में विद्यालय के अंदर एक छोटी प्रदर्शनी का आयोजन करना प्रतिपुष्टि को संचारित करने का एक दूसरा तरीका हैं जहां बच्चों के दृश्य कला कार्यों को दूसरे बच्चों और अभिभावकों के लिए प्रदर्शित किया जा सके। बच्चों के लाभ के लिए कुछ सांस्कृतिक निष्पादन भी किये जा सकते हैं।

- अभिलेखों के लिए सहपाठी मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षक को सूचना एकत्र करना चाहिए और बाद में यह वार्षिक रिपोर्ट कार्ड में लाभदायक हो सकता है।

एक शिक्षक मूल्यांकन को कैसे एक बच्चे को संचारित करता है?

यहां कुछ उदाहरण हैं।

उदाहरण-1

एक शिक्षक कुछ एक बच्चे की चित्रकला को प्रदर्शन बोर्ड पर प्रदर्शित करता है और उन्हें इस पर प्रतिक्रिया करने को कहते हैं। वह कुछ प्रश्न पूछते हैं :

- किस चित्रकला को आपने सबसे अधिक पसंद किया?
- आप इसे क्यों पसंद करते हैं?
- क्या आप सोचते हैं कि यह एक बेहतर तरीके से व्यक्त हो सकता है?
- आप तस्वीर के बारे में सबसे मोहक क्या पाते हैं?

उपर्युक्त जवाबों के आधार पर शिक्षक एक बच्चे के स्व मूल्यांकन का लाभ पाते हैं।

उदाहरण-2

एक बार एक शिक्षक ने सहपाठी मूल्यांकन का लाभ पाना चाहा। उसने बच्चों को पत्तियों की सहायता से जानवरों की आकृतियां बनाने का एक अवसर दिया फिर सभी कार्य को एक दीवाल पर प्रदर्शित किया और बच्चों को विचार विमर्श और टिप्पणी करने का कुछ समय प्रदान किया। बच्चे ऐसे ही अपने कार्य को देखने के लिए उत्साहित थे। उन्होंने दूसरों के साथ उनके कार्यों का तुलना किया और आसानी से मूल्यांकित किया तथा स्वस्थ तरीके से दूसरे के कार्य को अस्वीकार कर दिया।

टिप्पणी

उदाहरण-3

कक्षा III की एक शिक्षक ने अपने बच्चों को एक मूल्यांकन कार्ड दिया जिसपर प्रशंसा और अवलोकन व्यक्त थे। ये प्रशंसा बच्चों के प्रोफाइल और पोर्टफोलियो पर आधारित था। उसने उनके कार्य को विश्लेषित किया और मूल्यांकन कार्ड पर सुझाव लिखा। उसने अपने मूल्यवान कथनों से बच्चों को मूल्यांकित करने और सुधारने का प्रयास किया।

प्रगति जांच-4

1. मूल्यांकन का परिणाम किसके लिए महत्त्वपूर्ण हैं?

   .....

   .....

   .....

2. सहपाठी मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?

   .....

   .....

   .....

5.3 कला में मूल्यांकन के विविध उपकरणों और तकनीकों की समझ

कला के मूल्यांकन के लिए बहुत से उपकरण और तकनीकें हैं। किन्तु कोई अकेला उपकरण मूल्यांकन के लिए विश्वसनीय, वैध, समग्र और व्यवहार्य नहीं हो सकता। मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य या परिणाम हैं। एक शिक्षक को उन उपकरणों से सुपरिचित होना चाहिए जिन्हें सामान्यत: कला के मूल्यांकन में प्रयुक्त किया जाता है। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि केवल उपयुक्त उपकरण का उपयोग कर कोई भी शुद्ध परिणाम पा सकता है।

5.3.1 उपकरणों और तकनीकों का अर्थ

वृद्धि का समग्र अभिलेख बनाने के क्रम में एक शिक्षक को विविध प्रकार के मूल्यांकन तकनीकों और शुद्ध अवलोकन और अभिलेख रक्षण के विस्तार पर भरोसा रखना होगा। भंडारण क्षमता के अभाव में सत्र के अंत में बड़े कार्य या श्री विमीय कार्य का रखरखाव बहुत कठिन हो सकता है। अत: निष्पादन के सृजन के समय या दौरान मूल्यांकन के लिए यह आवश्यक है। एक शिक्षक को मूल्यांकन के लिए उपयुक्त उपकरण चुनने का निर्णय लेना है। यहां कुछ आधारभूत उपकरण और तकनीकें है जो बच्चों की प्रगति प्रतिवेदन अभिभावकों या प्रधानाचार्य या विद्यार्थियों के स्व मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करते समय मूल्यवान साबित होंगे।

टिप्पणी

5.3.2 विविध उपकरण और तकनीकें

(i) अवलोकन अनुसूची (ii) प्रोजेक्ट (iii) पोर्टफोलियो (iv) जांच सूची (v) श्रेणी पैमाना (vi) उपाख्यानमूलक अभिलेख (vii) प्रदर्शन आदि।

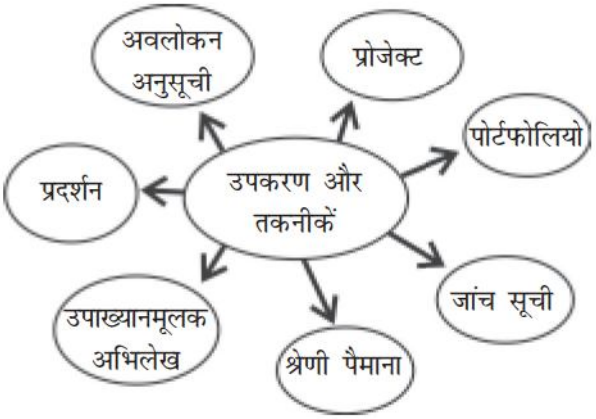

5.3.2.1 अवलोकन अनुसूची

अच्छा अवलोकन कौशल होना एक शिक्षक के लिए एक आवश्यक सम्पत्ति है और यह एक कौशल भी है जो कि अभ्यास के द्वारा विकसित किया जा सकता है। अभ्यास के लिए अपनी आंख और कान हमेशा खुले रखें ताकि एक बच्चे के प्रत्येक बोध और गतिविधि का अवलोकन करें कि वे कैसे कार्य करते है? दूसरों के साथ उनका व्यवहार कैसा है? कैसे वे अपने संसाधनों का उपयोग करते हैं? वे क्या और किस तरह सृजित कर रहे हैं? प्रक्रिया और उनके कला कार्य के उत्पाद के दौरान उन्हें सावधानी से देखें। यह अवलोकन उपकरण आपको समस्या के साथ-साथ कार्य की गुणवत्ता को पहचानने में सहायता करता है।

एक शिक्षक चुपचाप अवलोकन कर सकता है कि प्रत्येक बच्चा अपने कार्य में क्या दिखाने की कोशिश कर रहा है। बच्चे बहुत सी विविधताओं को दिखा सकते है। प्रस्तुतीकरण का यह एक अभिनव तरीका हो सकता है। वे उन चीजों को दिखा सकते हैं जो दृश्य में छुपी हुई हैं। किन्तु इसके बावजूद अभिव्यक्ति का यह तरीका वैध है और इसे स्वीकार किया जाना चाहिए। शिक्षक को इसे बाधित करने की जरूरत नहीं है। बिना दृढ़ भावनाओं के कि किसी का मूल्यांकन होना है, एक बच्चे के अवलोकन में यह लाभप्रद है। यह बच्चे की भावनाओं, चिंतन प्रक्रिया, उनकी योग्यता और साथियों के साथ व्यवहार को समझने में लाभप्रद है। यह मूल्यांकन बच्चे की जरूरत के अनुसार की जा सकती है और यह प्रत्येक बच्चे में अलग-अलग हो सकता है। यह उपकरण तब उपयोग में लाया जा सकता है जब बच्चा वैयक्तिक रूप से या समूह में कार्य करता है। अवलोकन के माध्यम से सभी गतिविधियां मूल्यांकित की जा सकती है।

प्रगति जांच-5

निम्नलिखित गतिविधियों को अवलोकनों के साथ मिलायें :

स्केच बनाना	–	रंग संयोजन
नृत्य	–	सृजनात्मकता
पेन्टिंग	–	संवाद प्रेषण
रंगमंच	–	गति कौशल
कोलाज बनाना	–	शारीरिक गति संचालन

5.3.2.2 प्रोजेक्ट

प्रोजेक्ट एक छोटी गतिविधि है जो इकाई के अंत में दी जा सकती है। यह पढ़ाई गई संकल्पना के प्रति बच्चे की समक्ष का एक समग्र दृष्टिकोण हो सकता है। यह विद्यार्थियों को उनके अपने तथ्य खोजने और विश्लेषण करने या तस्वीर, डाटा, वस्तुओं आदि का संग्रह करने की जिम्मेवारी लेने के लिए अपेक्षित है। इससे हम बच्चों को संसाधनों और पास पड़ोस का अन्वेषण करने में प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह गहरी समझ और कला की सराहना करने में लाभप्रद होगी। जब बहुत से विभिन्न अध्याय पढ़ाये जा चुके हों तब यह प्रभावी उपकरण है। जहां अधिगम पूर्व और वर्तमान ज्ञान से निर्मित होता हैं वहां वे एक दूसरे से संबंधित होते हैं।

5.3.2.3 पोर्टफोलियो

मूल्यांकन पोर्टफोलियो के पुनरावलोकन पर आधारित होगा। यह एक कालांश या एक वर्ष भी हो सकता है में किये गये कार्य का एक संग्रह है। जैसे-जैसे कार्य गतिविधि आगे बढ़ती है आप उस कला कार्य को पोर्टफोलियो में स्थानांतरित कर सकते हैं। यह शिक्षक को बताता है कि कैसे बच्चा ज्ञान बनाता है और शिक्षण के लिए आगे की रणनीतियों पर निर्णय लेने में शिक्षक की सहायता करता है। पोर्टफोलियो का रखरखाव कार्य को खोने से रोकेगा और आपको अभिलेख रखने में भी सहायता करता है। सत्र या वर्ष के अंत पर कोई इससे एक शिक्षक के रूप में अनुभव के लिए सहायता प्राप्त कर सकता है और बच्चों से घुल मिल सकता है।

5.3.2.4 जांच सूची

जांच सूची अवलोकन आधारित अभिलेख रक्षण के लिए एक व्यवहारिक उपकरण है। जब बच्चे बिल्कुल सतर्क हो और कार्य अनुभूति प्रगति में हो तो जांच सूची शिक्षक के लिए सूचना अभिलेखन को आसान बना सकती है। एक शिक्षक विभिन्न कला गतिविधियों के लिए उद्देश्यों और उस विशेष कार्य के क्षेत्र के आधार पर जांच सूची बना सकता है।

मूल्यांकन के निष्पादन के लिए जांच सूची एक आसान विधि हैं। विशिष्ट क्रिया के अभिलेखन का यह एक व्यवस्थित तरीका है जो कि एक प्रदत्त कार्य के विशेष पहलू पर ध्यान केंद्रित करने

में सहायता कर सकता है। यह मानदण्डों की एक सूची है जिन्हें शिक्षक एक निश्चित समय पर बच्चे के अवलोकन करने में महत्त्वपूर्ण मानता है। यह तीव्र एवं कार्यान्वयन में आसान है और विशिष्ट सूचना उपलब्ध कराता है। यह या तो स्व मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है या जब शिक्षक उद्देश्य निर्धारित करता है जिसे वह उद्देश्यपूर्ण तरीके मूल्यांकित करना चाहता है तब।

5.3.2.5 श्रेणी पैमाना

यद्यपि कला में वैयक्तिक छात्र के विकास की जटिलता एक शिक्षक को एकल ग्रेड या अंक द्वारा दमन करने की स्वीकृति नहीं देता है किन्तु कभी-कभी आंकिक श्रेणी पैमाना सृजित करना अनिवार्य है ताकि छात्र अपनी पूर्व की स्थिति से तुलना कर सके। कार्य की सफलतापूर्वक पूर्णता के लिए आप कितने अंक देना चाहते हैं, को निश्चित करने के लिए एक मापन पैमाना का सृजन करें। आप 3 बिंदुओं या 5 बिंदुओं का पैमाना सृजित कर सकते हैं। फैसला की गुणवत्ता को अनुवादित करने के लिए श्रेणी पैमाना एक आंकिक, वाचिक या ग्राफिक प्रणाली है। यह मूल्यांकन को अधिक उद्देश्य पूर्ण एवं पारदर्शी बनायेगा। मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त कुछ सामान्य पैमाना इस प्रकार हैं:

A	B	C
श्रेष्ठ	बहुत अच्छा	अच्छा

A+	A	B+	B	C
उत्कृष्ट	श्रेष्ठ	बहुत अच्छा	अच्छा	संतोषजनक

यह विशिष्ट मानदण्डों के खिलाफ बच्चे के कार्य की गुणवत्ता के निर्णय और अभिलेखन में प्रयुक्त होता है। कार्य के एकल सम्पूर्ण मूल्यांकन के लिए साकल्यवादी श्रेणी पैमाना अपेक्षित है। परीक्षण के लिए श्रेणी पैमाना विशेष रूप से उपयुक्त है :

- कौशल के स्तरों का मूल्यांकन करने में
- मनोवृत्तियों को समझने और उत्प्रेरण प्रदान करने में

यह प्रभावी है जब मूल्यांकन के लिए कार्य, चिन्तन, विश्लेषण, सृजनात्मकता आदि के विविध स्तर अपेक्षित हैं।

5.3.2.6 उपाख्यानमूलक अभिलेख

यह विशिष्ट घटनाओं या विशेष रूप से रूचिपूर्ण या मनोरंजक प्रकृति के कार्यक्रम का एक छोटा लेखा जोखा है। यह एक बच्चे की प्रगति का लिखित वर्णन देता है जिसे शिक्षक प्रतिदिन के आधार पर रखता है। यह एक बच्चे के जीवन की सार्थक घटनाओं का अवलोकनात्मक वर्णनात्मक अभिलेख प्रदान करता है। यह एक ऐतिहासिक या जैविक अभिलेख हो सकता है,

यह एक बच्चा क्या कहता है या करता है का शब्दश: लिखित अवलोकन है। एक बच्चे का वैयक्तिक मूल्यांकन करने के क्रम में शिक्षक इस उपकरण का उपयोग कर सकते हैं। वे इस अभिलेख का उपयोग बच्चों की उनकी शक्तियों और जरूरतों के विश्लेषण के लिए कर सकते हैं। यह शिक्षण विधि में परिवर्तन करने या शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुधारने में सहायता करता है।

इस उपकरण का एक कालांश में बच्चे के सम्पूर्ण विकास का रिपोर्ट बनाने में उपयोग हो सकता है। वर्णनात्मक वर्णन बच्चे की पसंद, रूचियां और संबंधों आदि के बारे में एक स्पष्ट विचार देते हैं। उपाख्यानमूलक रिकार्ड एक सकारात्मक तरीके में लिखे होने चाहिए।

5.3.2.7 प्रदर्शन

प्रदर्शन संप्रेषण का एक साधन है। जब समूह कार्य मूल्यांकित किया जा चुका हो और हम इसे शेष कक्षा के साथ साझा करना चाहते हैं तो यह प्रयुक्त हो सकता है। यह उपकरण सहपाठी मूल्यांकन के साथ-साथ स्व मूल्यांकन के लिए लाभप्रद है। सचित्र प्रदर्शन के माध्यम से बच्चे निश्चित संकल्पनाओं की स्पष्टता अर्जित करते हैं। यह बच्चों और शिक्षकों के बीच सम्बद्धता की समझ को बढ़ा सकता है। वे उनके कार्य में गर्व का अनुभव कर सकते हैं। यह दीवाल पर जड़ने या मेज के ऊपर अधिस्थापन के रूप में हो सकता है। कक्षाकक्ष के एक भाग में बच्चों का कोना भी स्थापित किया जा सकता है।

प्रगति जांच-6

1. रिक्त स्थान को भरें:
   1. निर्णय का एक आंकिक प्रणाली ..... है।
   2. .....एक अच्छा उपकरण हो सकता है जब समूह कार्य मूल्यांकित किया जा चुका हो।
   3. एक बच्चे का ऐतिहासिक और जैविक रिकार्ड कहलाता है.....।
   4. प्रोजेक्ट एक छोटी गतिविधि है जिसे इकाई के..... पर दिया जा सकता है।
   5. ..... कौशल एक शिक्षक के लिए एक सम्पत्ति है।
2. उपाख्यान मूलक प्रतिवेदन के दो लक्षणों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

टिप्पणी

5.4 मूल्यांकन के सूचक

अभ्यास का निरूपण मूल्यांकन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मूल्यांकन है जिसके माध्यम से मुख्य समस्यायें पहचानी जाती हैं और क्षेत्रों या समूह जिन्हें ध्यान की जरूरत है जाने जाते हैं। डाटा को उनके मौलिक रूप में कल्पनाओं के आरेखन के लिए प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। इन्हें सूचकों के रूप में बदलने की जरूरत होती है ताकि सार्थक सारांश खींचा जाये। सूचक विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का जवाब देता है।

5.4.1 कलाओं में मूल्यांकन के सूचकों का अर्थ

एक उपकरण जो आपको सूचना देता है सूचक कहलाता है। सूचक एक गुणात्मक या मात्रात्मक चर है जो उपलब्धियों को मापने, एक मध्यस्थ से जुड़े परिवर्तनों के प्रवर्तन या निष्पादन के मूल्यांकन में सहायता करने में एक सामान्य और विश्वसनीय साधन है। सूचक उपलब्धियों के बारे में हैं किन्तु ये अपने आप में अंतिम नहीं है।

एक एकल सूचक अधिगम के रूप में एक ऐसे जटिल तथ्य के बारे में बिरले ही लाभप्रद सूचना प्रदान कर सकता है। सूचक प्राय: स्थितियों के बारे में अधिक से अधिक सटीक सूचना उत्पन्न करने के लिए प्रारूपित किये गये हैं। सूचक का उद्देश्य प्रणाली की प्रकृति का चरित्र चित्रण इसके घटकों के माध्यम से करना है। वे कैसे संबंधित हैं और वे कैसे हमारे समय को परिवर्तित करते हैं? यह सूचना कुछ लक्ष्य या विद्यार्थियों की प्रगति के निर्णय के प्रति प्रयुक्त हो सकती है। एक सूचक क्या कर सकता है:

- लक्ष्य और प्राथमिकताओं को स्थापित करना।
- कार्यक्रम का मूल्यांकन करना।
- समस्याओं को अधिक स्पष्टता से कहना और वर्णन करना।

एक अच्छे सूचक के निम्नलिखित लक्षण है:

- यह शिक्षकों को लाभप्रद सूचना प्रदान करता है।
- यह अन्य सूचकों के साथ जुड़ने को स्वीकृति देता है।
- कोई उद्देश्यों से कितना दूर और कितना पास है इसको मापता है।
- यह समस्यात्मक स्थितियों को पहचानने में सहायता करता है।
- इसकी योग्यता है सूचना का संक्षेपण।
- यह इसके मूल्यों का मानक से तुलना करने में सहायता करता है।

व्यापक रूप से विकसित सूचक है :

टिप्पणी

भौतिक और गतिक विकास

- सहनशक्ति और गतिविधि स्तर
- लालित्य
- सतर्कता
- आंख-हाथ संयोजन
- स्थूल गति विकास
- उत्कृष्ट गति विकास

मानसिक विकास

- अवलोकन
- स्मृति
- संकल्पना की स्पष्टता
- समस्या समाधान
- सूचना की समझ बनाना
- भाषा विकास
- तार्किक चिंतन
- चीजों, घटनाओं आदि को महसूस करना

सामाजिक संवेदनात्मक विकास

- व्यस्कों और सहपाठियों से संबंधित
- अन्यों के साथ साझा करना
- सहयोग
- पहल करना
- समायोजन
- भावनाओं, विचारों की अभिव्यक्ति

टिप्पणी

5.4.2 दृश्य एवं निष्पादन कलाओं दोनों में मूल्यांकन के सूचक

मूल्यांकन के सूचक

	स्तर–I			स्तर–II	स्तर–III
	के प्रति झुका हुआ	कौशल या एक विशेष कला रूप की तकनीकें	कलारूप का नाम	क्षमता क्या है? अच्छा, बहुत अच्छा औसत	सभी को आनन्द देता है।
		संगीत में शब्द (उच्चारण)	तात्कालिक	क्रमश:	धीरे और सामान्यत: आनन्ददायी
		रंगमंच और नृत्य में गति संचालन	तात्कालिक	क्रमश:	धीरे और सामान्यत: आनन्ददायी
		विषय की समझ	तात्कालिक	क्रमश:	धीरे और सामान्यत: आनन्ददायी
	सुनना		उत्कृष्ट	अच्छा	सुधारा जा सकता है।
	एकाग्रता		उत्कृष्ट	अच्छा	सुधारा जाना है
	गति संचालन		उत्कृष्ट	अच्छा	बहुत थोड़ा प्रयास अपेक्षित है
	लोभी		उत्कृष्ट	अच्छा	सुधारा जा सकता है
	स्मरण		उत्कृष्ट	अच्छा	थोड़ी सी सावधानी सहायता करेगी
	प्रस्तुती				बहुत थोड़ा प्रयास अपेक्षित है।

	योग्यता, अंत:शक्ति, हृदयंगम, सृजनात्मकता		उत्कृष्ट	अच्छा	इस पर कार्य करता है
	मनोवृत्ति		सहयोगी	अति आत्मविश्वास	आज्ञाकारी
	समन्वय	दूसरों को सुनना/ सहपाठियों का अवलोकन और संयोजन	सभी समय सचेत	कभी-कभी	सामान्यत: आनंददायी
		निम्नलिखित का शिक्षक अनुकरण करता है	सभी समय सचेत	कभी-कभी	सामान्यत: आनंददायी

	समझ	विषय	अच्छी पकड़	औसत पकड़	तटस्थ
		विकास/काम चलाउ प्रबंध	हमेशा	कभी-कभी	निर्देशों का अनुकरण
		अतिरिक्त ज्ञान अर्जित करना	हमेशा	कभी-कभी	तटस्थ
	जवाब (उत्साह और	पूर्ण कक्षा	उसी प्रकार	भिन्न	तटस्थ
	प्रतियोगी स्तर)	एकल समूहों का निष्पादन	उसी प्रकार	भिन्न	तटस्थ
	रूचि स्तर	कक्षा में उपस्थित होने में उत्साह	हमेशा	कभी-कभी	दुर्लभ
		अतिरिक्त सूचना प्राप्त करना	प्राय:	कभी-कभी	दुर्लभ
		विचारों की स्वत: अभिव्यक्ति	हमेशा	कभी-कभी	दुर्लभ
	पूर्व अर्जित ज्ञान या जागरूकता		अर्जित किया परिवार से, दोस्तों से, समुदाय से	केवल शिक्षक का अनुकरण	घबराना नहीं (केवल यांत्रिक समझ)
	समूह समन्वय		स्वत:	मनोभाव के अवलोकन के पश्चात् क्रमश:	पृथक
	व्यक्तिपरक		चुस्त	शर्मीला	जवाब नहीं

टिप्पणी

प्रगति जांच-7

1. मूल्यांकन में सूचक की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

2. एक बच्चे में मनोवृत्तियों के मूल्यांकन के सूचक क्या है?

.....

.....

.....

5.5 पोर्टफोलियो का निर्माण (प्रायोगिक)

5.5.1 पोर्टफोलियो का अभिप्राय

पोर्टफोलियो बच्चों की शैली या कार्य की विधि को दिखाने के लिए अभीष्ट कला कार्यों का संग्रह है। कभी-कभी एक विद्यार्थी का पोर्टफोलियो एक कतरन रजिस्टर के रूप में प्रेषित हो सकता है। एक शिक्षक मूल्यांकन के लिए न केवल पोर्टफोलियो को अपना सकता है बल्कि यह भविष्य में कुछ निर्णयों को लेने में एक निर्णायक भूमिका निभायेगा। एक प्रभावी पोर्टफोलियो बच्चे की योग्यता और कौशल को बेहतर संभव प्रकाश में शुद्धता से प्रस्तुत करता है। यह बच्चे की अभिव्यक्ति और संप्रेषण योग्यता के साथ-साथ कार्य के प्रदर्शन को उदाहरण के साथ समझाता है। पोर्टफोलियो के माध्यम से कला अपने आप से बात करती है। वर्ष या सत्र के अंत पर जब सभी कला कार्य एक पोर्टफोलियो में एकत्रित होता है तब शिक्षक बच्चे की वृद्धि के बारे में अधिक स्पष्ट हो सकता है। वह विवेचनात्मक दृष्टि से वैयक्तिक कार्य के साथ कुछ समय बिता सकता है, इस बारे में सोचता है कि सुधार के लिए क्या किया जाना चाहिए?

प्रगति जांच-8

1. पोर्टफोलियो क्या है?

.....

.....

.....

टिप्पणी

5.5.2 पोर्टफोलियो का रखरखाव

एक अच्छे पोर्टफोलियो में विविध प्रकार के कार्य अच्छी संख्या में होने चाहिए। एक शिक्षक गहराई में अन्वेषण कर सकता है और विभिन्न प्रकार के कला कार्यों के बारे में सोच सकता है। कार्य को पोर्टफोलियो में शामिल करना अच्छा है जो कि बच्चे की सृजनात्मकता को प्रवर्तित करता है। एक बच्चा जो पोर्टफोलियो सम्मिलित कर रहा है मौलिक चिंतन, कल्पनाओं और कौशलों का साक्ष्य प्रस्तुत कर सकता है। यहां मात्रा की अपेक्षा गुणात्मकता अधिक महत्त्वपूर्ण है। एक पोर्टफोलियो में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

1. **चित्रकला**–एक पोर्टफोलियो में चित्रकला के अच्छे उदाहरण विभिन्न माध्यमों में होने चाहिए जैसे–पेस्टल रंगीन पेन्सिल, मार्कर, स्याही, चारकोल आदि। एक स्केच पुस्तिका भी शामिल की जा सकती है। चित्रकला में वस्तुओं, लोग, प्रकृति और पर्यावरण शामिल हो सकते हैं।
2. **पेन्टिंग**–इनमें एक्रीलिक, तैलीय पेस्टल, जल रंग, पेन्टिंग्स, रंगीन माध्यमों से बनी चित्रकला, स्थान ले सकती है।
3. **डिजाइन**–इनमें पोस्टर, लेआउट, ग्राफ, नक्शे आदि शामिल होते हैं।
4. **कोलाज**–यह कागज पर विभिन्न सामग्रियों को चिपकाकर सृजित किया गया कला कार्य है जैसे–समाचार पत्र, पत्रिकायें, रंगीन कागज, या अन्य वस्तुएं जैसे–वस्त्र, बटन, पंख आदि। बच्चे इन विधियों से अपनी कल्पनाओं को आकार देते हैं।
5. **छपाई**–छाप लेने के बहुत से तरीके हैं जैसे–स्टैम्प पैड, पत्तियां, सब्जियां, इरेजर आदि। जब बच्चे इस प्रकार का कार्य करते हैं तो इसे पोर्टफोलियो में शामिल किया जा सकता है।

पोर्टफोलियो में नोट, टिप्पणियां और प्रश्न हो सकते हैं। शिक्षक बच्चों को कागज का खाली थैला या खाली फाइल लाने को कह सकते हैं। अपने पोर्टफोलियो को अपने तरीके से सजाने को उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है और इसके ऊपर इनको एक तस्वीर बनाने को भी।

5.5.3 मूल्यांकन के लिए पोर्टफोलियो का कैसे उपयोग करें?

वैयक्तिक पोर्टफोलियो का पुनरावलोकन पाठ्यक्रम के जरिये सतत् मूल्यांकन का एक अंग होना चाहिए। एक समय के पश्चात् शिक्षक पोर्टफोलियो के माध्यम से मूल्यांकन कर सकता है और सहपाठी मूल्यांकन के लिए एक विचार विमर्श सत्र हो सकता है। अन्य कार्यों पर लक्षित करने के लिए पोर्टफोलियो एक अच्छा उपकरण हो सकता है। यह मूल्यांकन के लिए बहुत से तरीकों में प्रयुक्त किया जा सकता है–

- शिक्षक और अभिभावक
- छात्र और सहपाठियों के बीच
- शिक्षक, अभिभावक और छात्र के बीच

टिप्पणी

विद्यार्थी अपने और अपने सहपाठियों के कार्य पर प्रतिक्रिया देते हैं जो मूल्यांकन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। उनके कार्य को दूसरों के साथ विचार विमर्श करना, विद्यार्थी को उसकी कलानुभूतियों को उत्कृष्ट बनाने में सहायता करता है। शिक्षक उन्हें विवेचनात्मक चिंतन विकसित करने और उनको अपने अधिगम के लिए उत्तरदायितव लेने को प्रोत्साहित भी कर सकता है। यह अभ्यास उन्हें संयोजित प्रत्यक्ष साक्ष्य या वास्तविक वृद्धि देखने की स्वीकृति देता है जो कि संतुष्टि और गर्व का एक उत्तम साधन हो सकता है। प्रगति प्रत्येक छात्र के लिए खुशी से प्रकट होती है। यह नोट करना महत्त्वपूर्ण है कि किसी को व्यक्तिगत रूप से चुनौती देना और कार्य करने के लिए नये विचार का अन्वेषण करना सौन्दर्यात्मक विकास के लिए अनिवार्य है। यह सभी बच्चों को स्पष्ट कर देना चाहिए कि उनके सभी दृश्य कार्य जो पोर्टफोलियो में हैं चाहे पूर्ण हों या अपूर्ण मूल्यांकित किये जायेंगे ताकि बच्चा कठिन कार्य करने के लिए प्रेरणा का अनुभव करें।

प्रगति जांच-9

1. पोर्टफोलियो में रखे जा सकने वाले तीन प्रकार के कार्यों की सूची बनाओ।

   .....

   .....

   .....

2. पोर्टफोलियो बनाना क्यों महत्त्वपूर्ण है? दो कारणों का वर्णन करें।

   .....

   .....

   .....

3. कुछ गतिविधियों की सूची बनाइये जहां पोर्टफोलियो का उपयोग अधिक इच्छित हो सकता है।

   .....

   .....

   .....

5.6 सारांश

इस इकाई को हमने मूल्यांकन के अभिप्राय और उसके उद्देश्य से प्रारंभ किया। मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य है अधिगम में कमियों का निदान करना, कला के लिए रूचि निर्धारित करना और उनकी वृद्धि का ज्ञान प्राप्त करना। हमने कला में मूल्यांकन के सूचकों पर विचार विमर्श कर

लिया है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में हम हमारे बच्चों का अधिक सटीकता से निर्णय लेते हैं, हम उनके अधिगम को निर्देशित करने में अधिक प्रभावी होंगे। मूल्यांकन की प्रक्रिया में एक शिक्षक की भूमिका की समझ अत्यधिक आवश्यक है अत: इस अध्याय में हम कला में मूल्यांकन की प्रक्रिया और उत्पाद के बीच अंतर करने की कोशिश करेंगे। हम कुछ सुझाव भी देंगे जो हम बच्चे के मूल्यांकन के समय प्रयुक्त कर सकते हैं। आगे पोर्टफोलियो के निर्माण को प्रक्रिया का वर्णन किया जा चुका है जिसकी कला के मूल्यांकन में एक सार्थक भूमिका है। आपकी समझ के लिए पोर्टफोलियो की संकल्पना बहुत स्पष्ट की जा चुकी है। प्रारंभिक स्तर पर मूल्यांकन विशेषत: कला गतिविधियों की एक श्रृंखला है जिनको सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभाविता को मापन के लिए प्रारूपित किया गया है। अत: तकनीक और उपकरणों के प्रकार और उनका उपयोग आपको बहुत स्पष्ट होना चाहिए। ये उपकरण बच्चे के मूल्यांकन में एक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम आश्वस्त हैं कि यह संक्षिप्त तस्वीर आपको विद्यालय में अधिक सहायक सिद्ध होगी।

5.7 प्रगति जांच के उत्तर

प्रगति जांच-1

1. कला के मूल्यांकन का उद्‌देश्य बच्चों के ज्ञान, कौशल, योग्यता, सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति, बोध, मूल्यों और वैयक्तिक जरूरतों के बारे में जानना है। यह बच्चे और अभिभावक को प्रतिपुष्टि देने के लिए भी है।

2. मूल्यांकन बहुत सावधानी और ध्यान से किया जाना चाहिए। शिक्षक की कला गतिविधि के उद्‌देश्य, परिस्थितियां जिसमें कार्य हुआ है, बच्चे के विकास का स्तर और विशिष्ट जरूरतों को ध्यान में रखना चाहिए।

    (i) गलत

    (ii) सही

प्रगति जांच-2

1. समग्र मूल्यांकन–इसका अर्थ है सत्र के अंत में बच्चे को अंतिम ग्रेड देना।

2. अधिगमकर्ता अपने दृष्टिकोण दे सकते है।

प्रगति जांच-3

1. उप-शीर्षक 5.2.3 देखें।

2. शिक्षक को बच्चे को उसकी वृद्धि के साथ तुलना करना चाहिए।

प्रगति जांच-4

1. मूल्यांकन का परिणाम बच्चों और उनके अभिभावकों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

2. विद्यार्थी अपने कार्य का दूसरों के साथ तुलना करें और आसानी से सराहना करें और प्रत्येक दूसरे कार्य को स्वस्थ ढंग से नकार दें।

प्रगति जांच-5

1.

स्केच बनाना	–	गति कौशल
नृत्य	–	शारीरिक गति संचालन
पेन्टिंग	–	रंग संयोजन
रंगमंच	–	संवाद प्रेषण
कोलाज निर्माण	–	सृजनात्मकता

प्रगति जांच-6

1. (i) श्रेणी पैमाना

   (ii) अवलोकन सूची

   (iii) उपाख्यान मूलक प्रतिवेदन

   (iv) समाप्ति

   (v) अवलोकन कौशल

2. (i) बच्चे के व्यवहार के बारे में शिक्षक के अवलोकन का औपचारिक रिकार्ड।

   (ii) घटना का शुद्ध वर्णन, घटना का अनुवाद, व्यक्तिगत विकास और व्यवहार में संबंध।

प्रगति जांच-7

1. एक शिक्षक सूचकों के माध्यम से मूल्यांकन की प्राथमिकताओं और लक्ष्यों को स्थापित कर सकता है। वह सूचक की सहायता से विशेष बच्चे की उपलब्धियों और जरूरतों को माप सकते हैं।

2. (i) सहयोगी

   (ii) अति आत्मविश्वास

   (iii) आज्ञाकारी

प्रगति जांच-8

1. पोर्टफोलियो कला कार्य का एक संग्रह है। यह एक फाईल या फोल्डर हो सकता है जहां भविष्य के लिए सभी कला कार्यों को एकत्र किया जा सकता है। जब कभी एक दृश्य कला हो रहा हो तो इसे पोर्टफोलियो में रखा जा सकता है।

प्रगति जांच-9

1. (i) चित्रकला

   (ii) पेन्टिंग

   (iii) कोलाज

2. 1. सत्र के अंत में मूल्यांकन के लिए।

   2. बचचे के वृद्धि का रिकार्ड/साक्ष्य रखने के लिए।

3. विद्यार्थी अपनी कला गतिविधियां दे सकते हैं।

5.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Position Paper: National focus Group on Art, Music, Dance and Theatre. Published in (2006), NCERT, New Delhi
- Position Paper: National focus Group on Heritage Crafts (2005), Published (2006) NCERT, New Delhi
- Handbook on guideline for Art integrated learning-NCERT

  http://on wikipedia.org/wiki/evaluation

  http://www.ncert.nic in/rightside/links/pdf/framework/nf 2005.pdf

  http://www.evaluationtrust.org/evaluation

  http://www.teachervision for com/classroom-management/resource/5803 html.

  http://www.irvingisd.net/curriculum/art/elementhtmary

  http://www.cedfa.org/teaching/curriculum/artframework.Pdf

  http://www.princetonol.com/groups/iad/lessons/middlelessons.html

5.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. कला में मूल्यांकन के अभिप्राय का वर्णन करें।

टिप्पणी

2. सतत् और समग्र मूल्यांकन के बीच अंतर स्पष्ट करें।
3. पोर्टफोलियो के अभिप्राय की व्याख्या करें। आप मूल्यांकन के लिए पोर्टफोलियो का उपयोग कैसे करेंगे?
4. मूल्यांकन के 'सूचक' से आप कया समझते हैं?
5. कला का मूल्यांकन, अन्य विषयों के मूल्यांकन से कैसे भिन्न है?
6. मूल्यांकन के निम्नलिखित उपकरणों के लाभों का वर्णन करें
   - अवलोकन सूची
   - प्रदर्शन
   - जांच सूची
7. मूल्यांकन के लिए हम बड़ी संख्या में उपकरणों और तकनीकों का उपयोग क्यों करते हैं?
8. उपाख्यानमूलक प्रतिवेदन का एक नमूना बतायें।
9. नीचे चार स्थितियां दी गयी हैं, इन स्थितियों में आप प्राथमिकता के आधार पर किन उपकरणों का उपयोग करेंगे:

   शिल्प निर्माण

   नृत्य

   समूह गतिविधि

   रोल प्ले